प्रकाशक—
पं० लक्ष्मण प्रसाद मिश्र
साहित्य-समिति
रायगढ़

मुद्रकः—
पं० गिरिजाशंकर मेहता
मेहता फ़ाइन आर्ट प्रेस
६२ सूतटोला-काशी

उपहार

काव्य-कानन
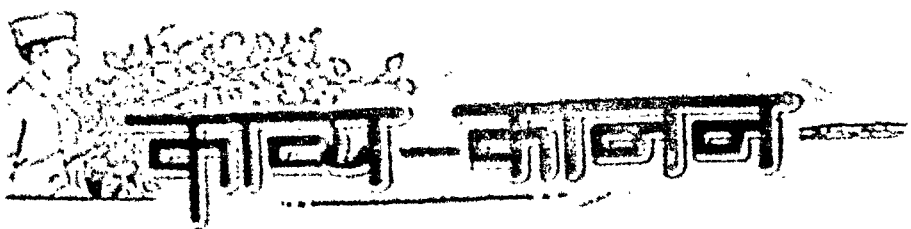
प्रस्तावना

एक समय था जब कि हिंदी में व्रजभाषा ही का बोलबाला था। फिर एक समय आया जब लोगों में उसके बहिष्कार की धुन सवार हुई और जिधर देखो उधर खड़ी बोली की ही तूती बोलने लगी। फिर अब यह ज़माना आया है जब उसी तिरस्कृत व्रजभाषा की ओर लोगों ने दृष्टि उठाई है। और उसके साहित्य-रत्नाकर में पैठ कर बढ़िया मोती चुन लेने के लिये वे लालायित हो उठे हैं। इस समय भी ऐसे कई सज्जन हैं जो 'खड़ी' बोली ही तक हिन्दी साहित्य को सीमित समझते हैं और 'पड़ी' बोली में लिखी हुई सब बातों को सड़ी चीज़ें मानते हैं। ऐसे दोनों ही प्रकार के व्यक्तियों के लाभ के लिये यह संग्रह प्रकाशित किया जा रहा है। जिन्हें व्रजभाषा की सुन्दर सूक्तियों की बानगी देखनी है वे तो इसे अपनावेंगे ही, परन्तु जो समझते हैं कि व्रजभाषा में कुछ है ही नहीं वे भी कृपाकर इस संग्रह को ध्यान से पढ़ जायँ और फिर कहें कि जिस रहस्यमय छायावाद के चक्कर में वे चक्कर काट रहे हैं वह कबीर, मीरा, दादू और बाबा दीनदयाल गिरि आदि की रचनाओं में हाथ जोड़े खड़ा है अथवा नहीं।

हिन्दी में आज तक ऐसे अनेक संग्रह ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं, परन्तु मेरे विचार से उनमें कुछ न कुछ कमी रहती ही चली गई। लिखने के लिये लोग लिख गये हजारा तक, परन्तु शृङ्गार के अतिरिक्त और विषयों की ओर विशेष बढ़ ही न सके और शृङ्गार में भी अच्छे कवियों की रचनायें तो आने पाईं दाल में नमक के बराबर और नगण्य कवियों के छन्द सागपात की तरह ठूँस ठूँस कर भर दिये गये। मैंने शृङ्गार के अतिरिक्त और भी महत्वपूर्ण विषयों की बानगी पाठकों के सम्मुख रख देने का प्रयत्न तो किया ही है परन्तु साथ ही इस बात का भी ध्यान रखा है कि प्रत्येक विषय में लब्ध प्रतिष्ठ सुकवियों की रचनाओं के नमूने पर्याप्त संख्या में दे दिये जाय। यह अवश्य है कि अभी कितने ही सुन्दर छन्द छूट गये हैं, परन्तु पुस्तक के आकार और मेरी पहुँच के देखे जिन छन्दों का इस ग्रंथ में समावेश किया जा सका है वे ही खड़ी बोली के गौरव की झलक दिखाने के लिये पर्याप्त होंगे।

महात्मा तुलसीदास जी की रामायण इस तरह घर घर फैली हुई है कि उसके उदाहरण देना मैंने उचित ही न समझा। महाकवि चन्द बरदाई की रचनायें क्लिष्ट होने के कारण दूर ही रखी गई हैं। हाँ, नमूने के लिये एक-दो छन्द अवश्य दे दिये गये हैं। ख्यातनामा सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी का ग्रंथ भी कई कारणों से अछूता ही छोड़ दिया गया है। शेष प्रायः सभी अच्छे कवियों की चुनी हुई कृतियाँ इस ग्रंथ में आ गई हैं।

ब्रजभाषा का साहित्य अधिकतर कवित्त, सवैया और पदों में सम्बद्ध है। इसलिये इन्हीं छन्दों को मैंने भी विशेष रूप से चुना है। कुण्डलिया और छप्पय का भी मैंने स्वागत किया है। और कहीं-कहीं दूसरे छन्द भी रख दिये हैं, यद्यपि उनकी संख्या नहीं के बराबर है। हाँ, परिशिष्ट में कुछ दोहे भी दे दिये गये हैं क्योंकि इन दोहों में बड़ी ही मनोरम सूक्तियाँ कही गई हैं। आधुनिक कवियों में से दो ही चार कवियों के कुछ नमूने मैंने इस संग्रह में सम्मिलित किये हैं। और ये नमूने भी ऐसे हैं जो पुरानी रचनाओं के ही ढंग पर लिखे गये हैं। मेरा तो उद्देश, जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है केवल प्राचीन साहित्य की कुछ बानगी दिखाना है।

जिस इच्छा को लेकर संस्कृत में "सुभाषित रत्न भाण्डागार" तैयार किया गया है, उसी इच्छा से प्रेरित होकर यह छोटा किन्तु उपयोगी ग्रंथ तैयार किया गया है। परन्तु "सुभाषित रत्नभाण्डागार" में जहाँ विषयों और छन्दों के अनुसार क्रम बैठाया गया है वहाँ इस ग्रंथ में मनोवैज्ञानिक आधार पर भावों के अनुसार क्रम बैठाने का प्रयत्न किया है। हाँ, सामान्य प्रकरण में छन्दों की भी छँटनी मैंने कर दी है क्योंकि सामान्य प्रकरण में मनोवैज्ञानिक भावों की विशेष क्रमबद्धता हो ही कैसे सकती थी। यह भावपरक क्रमबद्धता जितनी कठिन है उतनी ही रोचक है। इसके कारण मुक्तक काव्य में भी कथा प्रवाह का-सा आनंद आ जाता है। जान पड़ता है कि विभिन्न समय और विभिन्न देश के वे सब कविगण एक ही स्थान पर बैठ कर एक ही सिलसिले से अपनी अपनी उक्तियाँ कह रहे हैं।

तुलनात्मक समालोचना वालों के लिये भी यह क्रम विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता है। बस, यह भावपरक क्रम बद्धता ही इस ग्रंथ की मौलिकता है। शेष सब तो संचित मधुमात्र है।

यह ग्रंथ पाँच अध्यायों में विभक्त है। प्रथम चार अध्याय तो चार प्रधान रसों—शृङ्गार, वीर, हास्य और शान्त—के हैं। शेष पाँचवा सामान्य प्रकरण जिसमें नीति आदि के विषय भी जोड़ दिये गये हैं। शृङ्गार प्रकरण में उपोद्घात में नायिका का महत्व बताते हुए उसकी बढ़ती हुई अवस्था के अनुसार पहले बालाका फिर वयः सन्धिवती का फिर पूर्ण यौवनवती का वर्णन किया गया है। तदनन्तर पहले तो उस युवती के नखशिख का वर्णन है और फिर उसके समूचे सौन्दर्य का विवरण है। इसके बाद फिर प्रेमांकुर का प्रसंग आता है। पहले तो रूपवती नायिका पर आसक्त नायक की भावनायें प्रकट की गई हैं, फिर नायक पर आसक्त नायका की। बीच बीच में विरहनिवेदिनी और संघट्टिनी दूतियाँ भी अपना काम करती जाती हैं। फिर परस्पर साक्षात्कार भी हो जाता है और वार्तालाप का भी संयोग मिल जाता है। दोनों ही अब तक संयत हैं। संयोग से उन दोनों प्रेमियों का विवाह भी हो जाता है। फिर उनकी लज्जाशील व्यग्रता और केलिभवन की तैयारियाँ तथा उत्साहपूर्ण सखियों की सीख और "हौं ते भली नाहीं" का चमत्कार देखते ही बनता है। इसके बाद "कै रतिरंग" सोई हुई नायिका किस प्रकार उठती, किस प्रकार नीचे आकर स्नान करने जाती और फिर किस प्रकार दिन में भी रात्रि का वही प्रसंग

उपस्थित होता है, यह सब बड़ा सुन्दर बन पड़ा है। तत्पश्चात् दाम्पत्य प्रेम की वृद्धि के साथ ही साथ संयोग पूर्ण षट्ऋतु और उसके अन्तर्गत झूला, कन्दुक क्रीड़ा और यहाँ तक कि विपरीत रति का भी उल्लेख हो ही गया है। जब नायिका स्वाधीन पतिका का गर्व दिखाने लगी तब उसके खंडिता होने का अवसर उपस्थित हुआ। बस, पति किसी और ही नई नवेली के प्रेम में उलझ गया और पति के रंग ढंग देख कर नायिका ने क्षोभ दुःख और संताप आदि सभी प्रकट करना प्रारंभ किया। चतुर नायक ने हाथ पैर जोड़ कर मनाना आरम्भ किया। परन्तु यह देख नायिका और भी मान ठानने लगी। जब निराश होकर नायक चला गया तब तो उसका मान भी अन्तर्धान हो गया। और वह रूठे हुए नायक से मिलने के लिये व्याकुल हो उठी। दूतियों की कृपा से अबकी बार नायक मिल तो गया परन्तु शीघ्र ही उसने परदेश की तैयारी कर ली। बेचारी नायिका विरह विह्वल हो उठी। एक के बाद एक करके छओं ऋतुयें बीत गईं। परन्तु नायक न आया। दूतियों ने व्यर्थ ही धैर्य धराने के प्रयत्न किये। ऊधो सरीखे धावन भी "सूधो सो संदेस" पाकर वापिस हो गये। आखिर स्वप्न होने शुरू हुए। शकुन होने प्रारम्भ हुए। पत्र मिलने का क्रम बँधा। और फिर नायक महोदय का आगमन भी हो गया। उस समय की नायिका की उत्सुकता और उसका समागम पढ़ कर ही देखिए। लिखने से क्या लाभ? इस मनोज्ञ संयोग के परिणाम स्वरूप गर्भाधान का, गर्भवती और फिर सन्तानवती नायिका का वर्णन हुए बिना

यह विषय अधूरा ही रह जाता। इसलिए उसे लिख कर स्वकीया नायिका का वर्णन समाप्त किया गया है।

तत्पश्चात् "जोग हू ते कठिन संजोग परनारी को" वाला विषय उठाया गया है। क्योंकि अकसर स्वकीया के साथ साध पूरी हो जाने के बाद ही यह विषय सामने आता है। इसमें पहले तो नायक की भावना और चुरिहारिन सरीखी दूतियों की सहायता से नायिका का मिलाप फिर दूतियों के प्रोत्साहन से नायिका की भावनायें और नायक का मिलाप बताया जाकर दोनों का साक्षात्कार ही नहीं बल्कि हास-परिहास भी लिख दिया गया है। फिर प्रियमिलन के संकेतस्थल और अभिसार की भावनाओं का वर्णन किया गया है। संकेत स्थल पर अभाग्यवश प्रिय के न मिलने का भी जिक्र आ गया है। और फिर अन्य स्त्रियों द्वारा लक्षिता हो जाने पर नायिका जैसी जैसी बातें बनाती और अपनी सुरतिवाली बात छिपाती है वह भी बता दिया गया है। बचन चातुरी का अन्त यहीं तक नहीं होता। नायिका पर पुरुष को अपने अनुकूल बनाने के लिए भी ऐसी ही वचन चातुरी काम में लाती है और कभी किसी पथिक को उसके हित की बात कह रुक जाने का उपदेश देती तथा कभी पहरेदार बन कर रात रात को मनुष्य जगाती फिरती है। जब इतने से भी उसे सन्तुष्टि नहीं होती तब वह अच्छी अच्छी दूतियाँ भी प्यारे को अपने पास बुलाने के लिए भेजा करती है। परन्तु यदि वे दूतियाँ स्वयं ही नायक की मन मिली सहचरी बनकर अपनी साड़ी सिकुड़वा कर अपने ओंठ

बढ़ा कर पसीने से सराबोर स्वामी हाथ वापिस नहीं आती हैं तब उन्हें देखकर और सब मामला पहिचान कर नायिका जिस तरह जलती कलपती और कैसे ताने मारने लगती है वह अद्भुत शृंगार का बड़ा उत्तम उदाहरण कहा जा सकता है। शृंगार के भावों का यहीं अन्त कर दिया गया है।

वीर प्रकरण में वीररस के नायक नरेश का तथा अस्त्रशस्त्रा-दिकों का वर्णन होकर शिविरांकुर का और फिर सैन्य प्रस्थान का हाल बताया गया है। इसके बाद युद्ध की कथा और फिर युद्धान्त का वर्णन है। इसी प्रसंग से राम-रावण युद्ध की भी कुछ चर्चा कर दी गई है। और अन्त में महाभारत के सम्बन्ध के भी कुछ छन्द देकर यह प्रकरण समाप्त कर दिया गया है।

हास्य प्रकरण में भिन्न-भिन्न रूपों में व्यंगों की बौछार और चुटकियों की भरमार है। साथ ही पर्याप्त मात्रा में गुदगुदी भी है। चपरासियों से लेकर भक्त और भक्तिनियों तक अछूती नहीं छोड़ी गईं। और राजाओं की कौन कहे "विधि हरिहर" तक भी बाकी नहीं रखे गये। अधिकांश प्राचीन कवि प्रायः उदर पोषण के लिये कविता करते थे। इसलिए उन्होंने कंजूसी का बड़ा रोचक वर्णन किया है। सूम लोग शादी में कैसा खर्च करते हैं, श्राद्ध में कैसी उदारता दिखाते हैं तुलादान में कमी करने के लिए किस प्रकार अपने शरीर तक को एकदम घटा देना चाहते हैं। दान के नाम से ही किस प्रकार घबरा उठते हैं और यदि कहीं देना ही पड़ गया तो किस तरह बूढ़े जानवर, सड़े कपड़े, रद्दी चीजें देते हैं। इन सब बातों

के वर्णन में कवियों ने कमाल कर दिया है। पाठक भी वह वर्णन पढ़कर अवश्य प्रसन्न हो जायगे।

शान्तरस प्रकरण में पहले विवेक की बातें कही गई हैं। तदनन्तर वैराग्य की भावनायें लाने के लिये विविध प्रकार से प्रबोध की बातें कही गई हैं। प्रबोध आने पर पश्चात्ताप होना आवश्यक ही है। इस पश्चात्ताप की भावना को दृढ़ करने के लिये मनुष्य स्वयं अपने को फटकारता जाता है और अपने मन को भांति-भांति का प्रबोध भी देता जाता है। वह नश्वर जगत की स्थिरता को प्रत्यक्ष करता जाता है। मृत्यु का चित्र स्पष्ट रूप से देखने लगता है। शरीर की आसक्ति को छोड़ता जाता है। और करुणानिधान की ओर आँखें उठाता जाता है। इस प्रकार क्रमशः उसमें साहस का संचार होता है और वह निश्चय करता है कि "अब लौं नसानी अब न नसैहों।" उसकी भावनायें ईश्वर की ओर दृढ़ होती जाती हैं। और वह भगवान के विरह में उन्मत्त हो उठता है। वह ईश्वर से अनेक विधि आत्मनिवेदन करता है। कभी दीन होकर उसके सामने भिक्षुक बनता है कभी प्रेम के आवेश में आकर व्यंग पूर्वक उसे फटकार भी देता है। अपने उस प्रियतम की झांकियों को वह अनेक रूपों में देखता है। उस प्राणेश्वर को चाहे गणेश कहिए, चाहे शंकर चाहे उमा या गंगा। चाहे उसे दयामय राम कहिए या करुणामय कृष्ण। सब कुछ वही तो है। बस ऐसे "वासुदेवः सर्वं" में जिसका दृढ़ ध्यान जम गया है। वही साधु पुरुष है। और उसी का जन्म इस संसार में धन्य है। यही क्रम शान्तरस प्रकरण में निभाया गया है।

विषय-सूची

—:*:—

शृंगार प्रकरण

[१]

'देव' सबै सुखदायक संपति, संपति सोई जु दंपति जोरी।
दंपति दीपति प्रेम, प्रतीति, प्रतीति की प्रीति सनेह निचोरी॥
प्रीति तहाँ गुन रीति विचार, विचार की वानी सुधारस बोरी।
वानी को सार बखानों सिंगार, सिंगार को सार किसोर-किसोरी॥

[२]

सोलह कला सरिस पंच-दस हैं बरिस,
चौदहों भुवन भरी दीपति विशाला हैं।
तेरहू के पति बस द्वादश दिनेश तपैं,
ग्यारहू महेश जपैं भूले ज्ञानमाला हैं॥
दसहू दिशानन में कहैं कवि 'आतमजू'
नवनिधि आठो सिधि जाके द्वारपाला हैं।
सातो सुर छैयो राग पाँचो गान चारो ताल,
तीनों ग्राम दोनों विधि जानै एक बाला है॥

[३]

सुंदर सुरंग अंग शोभित अनंग रंग,
अंग अंग फैलत तरंग परिमल के।
बारन के भार सुकुमार को लचत लंक,
राजत प्रयंक पर भीतर महल के॥
कहै 'पदमाकर' विलोकि जन रीझैं जाहि,
अंबर अमल के सकल जल थल के।
कोमल कमल के गुलाबन के दल के सु,
जात गड़ि पाँयन बिछौना मखमल के॥

[४]

पंकज पातनितौनिन कंचन, कंचन कै चित चोहै प्रजापति ।
कंद गयंद समान न जोन, भयो जिन जोन हिये सों मनापति ॥
छोटि करै छोहि छोर नहीं, कुच को पहुँचा पर छोल धरापति ।
पाजहि मैं सौ इसौ करसी, लरनी पनि करयौं करैगी मनापति ॥

[५]

ऊँची सी उकाहीं है ते पूछति परोसिन सों,
मेरे उर कठिन कठोर भए कौके हैं ।
ताके अति कोमल तें कछू ना सोहात मोहि,
कीजिए उपाय ये पिरात नाहि पाके हैं ॥
मदन कहै तू ना डेराय अलबेली बाल,
ये हैं रति-जाल जीव पोखन सुधा के हैं ।
होत उर जाके पीर होत नहिं ताके,
जौन इन्हैं कोउ ताकै पीर होत उर ताके हैं ॥

[६]

ए अलि हमें तो बात गात की न जानि परै,
बूझत न काहे वामें कौन कठिनाई है ।
कहै 'पदमाकर' क्यों अंग ना समाती आँगी,
लागी काह तोहि जागी उर में ऊँचाई है ॥

तौब तजि पाँयन चली है चंचलाई किते,
बावरी बिलोकै क्यों न आँखिन मैं आई है।
मेरी कटि मेरी भटू कौन धौं चुराई,
तेरे कुचन चुराई कै नितंबन चुराई है॥

[७]

जेते गजगौनी के नितंब हैं विशद होत,
तेती-तेती ताकी कटि पातरी परत जात।
जेती-जेती कटि खीन होति जाति तेते-तेते,
ताहि देखिबे को दोऊ उरज उठत जात॥
जेते-जेते उठत उरोज उर माँहि वर,
तेती मुख माँहि भाव-भंगिमा भरत जात।
जेतो मुख-भाव तेतो जमत हिये मों नेह,
जेतो नेह तेतो नैन माँहि प्रगटत जात॥

[८]

सरद ते जल की ज्यों दिन तें कमल की ज्यों,
धन ते ज्यों थल की निपट सरसाई है।
घन तें सावन की ज्यों आव तें रतन की ज्यों,
गुन तें सुजन की ज्यों परम सुहाई है॥

'चिंतामनि' कहै आछे अच्छरन छंद की ज्यों,
निसागम चंद्र की ज्यों दृग सुन्दराई है।
नग में ज्यों कंचन बसंत में ज्यों बन की,
यों जोबन में तन की निकाई अधिकाई है॥

[९]

सोनजुही की ह्वै जाति है माल, बनाय कै मालती की पहिराइए।
मोती के भूषन भूषित जे, पुखराज के ते सिगरे कढ़ि जाइए॥
जोबन आवत लाली सरीर में, है 'रघुनाथ' कहाँ लौं बताइए।
खौरि लगाइए चंदन की, अंग के सँग केसरि को रँग पाइए॥

[१०]

बिंब में प्रवाल में न ईंगुर गुलाल में न,
चंपक रसाल में न नेसुक निहारे में।
दाड़िम प्रसून में न सून धरातून में न,
इंद्र की वधून में न गुंजा अधिकारे में॥
कुसुम सुरंग में न किंशुक पतंग में न,
जावक मजीठ कंज पुंज वारि डारे में।
राधाजू तिहारे पग अरुणा समान ताको,
हेरि हारे कविता न आवत हमारे में॥

[१६]

सिंह भ्रमै बन भाँवरी देत औ, साँवरी भृंगी भई करि खेदै।
शंभु भनै चसमा चख दैकै, विरंचि रची विसराइकै वेदै॥
राधिका लंक की शंक करौ जनि, शंकरहू नहिं जानत भेदै।
जो मन है परमानु समान, निगोड़ी तऊ तिहि में करै छेदै॥

[१७]

कोमल अमल दल कमल नवल कैधौं,
कीन्हों है विरंचि सब छबि को सहेट है।
उदित प्रभाकर की दुति आनि छाई कैधौं,
चमकत चारु खात लोचन रपेट है॥
सुंदर थली है भली मदन विराजिवे की,
जाके सम कीन्हें होत उपमा तरेट है।
चीकनो परम मखमल ते नरम ऐसो,
प्यारी जू को पेट लेत मन को लपेट है॥

[१८]

कैसे कहौं कोक वे तो शोक ही में रहें निशि,
ये तो शशिमुखी सदा आनंद सों हेरे हैं।
कैसे कहौं करि कुंभ वे तो कारे करकस,
ये तो चीकने हैं चारु हार ही सों घेरे हैं॥

कैसे कहौं कौंल वे तो पकरे बिथुरि जात,
ये तो गोरे गाढ़े आछे ठाढ़े आपु नेरे हैं।
याही है प्रमान 'तोष' उपमा न आन,
प्यारी तरु तरुनाई ताके फल कुच तेरे हैं॥

[१९]

कँज के संपुट हैं पै खरे हिय में,गड़ि जात ज्यों कुंतकी कोर हैं।
मेरु हैं पै हरि-हाथ न आवत, चक्रवती पै बड़ेई कठोर हैं॥
भावती तेरे उरोजनि में गुण, 'दास' लखे सब औरई और हैं।
शंभु हैं पै उपजावैं मनोज, सु-वित्त हैं पै परचित्त के चोर हैं॥

[२०]

अंबुज कँज-से सोहत हैं अरु, कँचन कुंभ वने से धए हैं।
मारे खरे गदकारे महावर, पारे लसे अरु मैन छए हैं॥
ऊँचे उज़ागर नागर हैं अरु, पीय के चित्त के मित्त भए हैं।
हैं तो नए कुच ये सजनी पर, जौ लौं नए नहिं तौ लों नए हैं॥

[२१]

जग-जीवन-को फल जानि पर्यो, धनि नैनन को ठहरैयत हैं।
'पदमाकर' ह्यो हुलसै पुलकै, तन सिंधु-सुधा के अन्हैयत हैं॥
मन पैरत सो रस की नद में, अति आनंद में मिलि जैयत हैं।
अब ऊँचे उरोज लखे तिय के, सुरराज को राज सो पैयत हैं॥

[२२]

चुरियानहु में चपि चूर भयो, छबि छंद पछेलिनि छाई कहूँ।
मनु मैन कुम्हार सुकंचन की, मृतिका लै सुमंत्रि बनाई कहूँ॥
हरिसेवकै ज्यायो चहै तो सुनै, यहि सोंधी सुधा जिय ज्यायी कहूँ।
लखि पाई कलाई तेरी जब ते, तब ते उनको न कलाई कहूँ॥

[२३]

आनंद को कंद वृषभानुजा को मुखचंद,
लीला ही ते मोहन के मानस को चोरै है।
दूजो तैसो रचिबे को चहत विरंचि नित,
ससि को बनावै अजौं मन को न मोरै है॥
फेरत है सान आसमान पै चढ़ाय, फेरि,
पानी पै चढ़ायवे को वारिधि में बोरै है।
राधिका के आनन के सम न विलोकै याते,
टूक टूक तोरै पुनि टूक टूक जोरै है॥

[२४]

सुंदर वदन राधे सोभा को सदन तेरो,
वदन बनायो चारि वदन बनाय कै।
ताकी रुचि लैन का उदित भयो रैनि-पति,
मूढ़ मति राख्यो निज कर वगराय कै॥

'मतिराम' कहै निसिचर चोर जानि याहिं,
दीनी है सजाय कमलासन रिसाय कै ।
रातौ दिन फेरै अमरालय के आस-पास,
मुख में कलंक मिस कारिख लगाय कै ॥

[२५]

सुषमा के सिंधु को सिंगार के सु मंदर से,
मथिकै सरूप सुधा सुखसों निकारे हैं ।
करि उपचार तासों स्वच्छता उतारे,
तामें सौरभ सहाय श्री सुहासरस डारे हैं ॥
कवि 'रसरंग' ताको सत जो निकारे, तासों,
राधिका बदन बेस बिधि ने सँवारे हैं ।
बदन सँवारि कै जो हाथ धोय डारे सोई,
जल भयो चंद कर झारे भए तारे हैं ॥

[२६]

कोमलता कंज ते गुलाब ते सुगंध लैकै,
चँद ते प्रकास कियो उदित उजेरो है ।
रूप रति आनन ते चातुरी सुजानन ते,
नीर लै निवानन ते कौतुक निवेरो है ॥

'ठाकुर' कहत यों मसालो विधि कारीगर,
रचना निहारि जन होत चित चेरो है।
कंचन को रंग लै सवाद लै सुधा को,
बसुधा को सुख लूटि कै बनायो मुख तेरो है॥

[२७]

चंद की मरीची काम तोरि बिथराय दीनी,
कैधौं हीरा फोरि कै कनूका धरि धरिगे।
कैधौं काम मंदिर की झंझरी बनाई विधि,
कैधौं सोनजुही के पुहुप झरि झरिगे॥
कामिनी मनोरथ के आल बाल सिवनाथ,
मैन के मतंग माते वेलि चरि चरिगे।
अमल कपोलन पै दाग नहीं सीतला के,
डीठि गड़ि गड़ि गई दाग परि परिगे॥

[२८]

कैधौं कली वेला की चमेली-सी चमक परै,
कैधौं कीर कमल में दाड़िम दुराए हैं।
कैधौं मुकताहल महावर में राखे रंगि,
कैधौं मणि मुकुर में सीकर सुहाए हैं॥

कैधौं सातौं मंडल के मंडल मयङ्क मध्य,
बीजुरी के बीज सुधा सींचि कै उराए हैं।
'केसौदास' प्यारी के बदन में रदन छबि,
सोरहो कला को काटि बत्तिस बनाए हैं॥

[२९]

मीठी अनूठी कढ़ैं बतियाँ, सुनि सौतिन की छतियाँ दरकी परैं।
कोकिल कूकनि की का चली, कल हँसन हूँ के हिये धरकी परैं॥
प्यारी के आनन ते जो कढ़ैं, तिहि की उपमा 'द्विज' को फरकी परैं।
धार सुधार सुधाधर तें सुमनो वसुधा में सुधा ढरकी परैं॥

[३०]

मदन महीपति की कैधौं मंजु कीरति है,
कैधौं प्रिय-प्रेम तरु अंकुर की सींचिका।
कैधौं मुखचंद चारु चंद्रिका प्रभा समान,
कैधौं रूप कुंडल के रस की उलीचिका॥
कैधौं अति चारु सुधारस के सरोवर की,
जीवन समीर की परम मृदु बीचिका।
भारती बसन सुख रास बिलसन मुख,
राजै मंद हँसन सुदशन मरीचिका।

[३१]

बानी को बसन कैधौं बात के बिलास डोलै,
कैधौं मुखचंद चारु चंद्रिका प्रकास है।
कवि 'मतिराम' कैधौं काम को सुजस कै,
पराग पुंज प्रफुलित सुमन सुबास है॥
नाक नथुनी के गजमोतिन की आभा कैधौं,
देहवंत प्रकटित हिये को हुलास है।
सीरे करिबे को पिय नैन घनसार कैधौं,
बाला के बदन विकसत मृदु हास है॥

[३२]

किधौं मुख कमल ये कमला की ज्योति होति,
किधौं चारु मुखचंद्र चंद्रिका चुराई है।
किधौं मृग लोचनि मरीचिका मरीचि किधौं,
रूप की रुचिर रुचि सुचि सों दुराई है॥
सौरभ की सोभा की दसन घन दामिनी की,
'केशव' चतुर चित ही की चतुराई है।
एरी गोरी भोरी तेरी थोरी थोरी हँसी मोरी,
मोहन की मोहनी कि गिरा की गोराई है॥

[३३]

बनुवासी किये सुक पीठ निवासी तुनीर जो बीर बिलासिका है।
तिल सून प्रसून हू खेत गिरे गुहा सेवक सिद्ध निवासिका है॥
भ्रुव तेग सुनैन के बान हिये मति बेसरि के सम पासिका है।
बहु भावन की परकासिका है तुव नासिका धीर बिनासिका है॥

[३४]

नीचे को निहारत नगीचे नैन अधर,
दुबीचे पर्यो श्यामारुन आभा अटकन को।
नीलमनि भाग ह्वै पदुमराग ह्वै कै,
पुखराग ह्वै रहत विछ्पौ छ्वै निकटकन को॥
'देव' विहँसत दुति दंतन जुड़ात जोति,
विमल मुकुत हीरालाल गटकन को।
थिरकि थिरकि थिर थाने पर थाने तोरि,
बाने बदलत नट मोती लटकन को॥

[३५]

कंज सकोच गड़े रहैं कीच में मीनन बोरि दियो दह नीरन।
'दास' कहै मृगहू को उदास कै बास दियो है अरण्य गंभीरन॥
आपुस में उपमा उपमेय ह्वै नैन ये निन्दत हैं कवि धीरन।
खंजन हू को उड़ाय दिए हरुए करि डारे अनंग के तीरन॥

[३६]

कैधौं तुव चाकर चतुर अनियारे पैठि,
हृदय-पयोधि मन मोती के कढ़ैया हैं।
कैधौं राजहंस मनसिज के सनेही बनि,
ताकी हुति तीछन कटाछन चलैया हैं॥
कैधौं नर-धीरता की थाह लै कहत कान,
कैधौं तुव चित चंचलाई दरसैया हैं।
कैधौं ये तिहारे छबिवारे वर नैन बाल,
नागर नरन चित्त चुम्बक बनैया हैं॥

[३७]

लाज के निगड़ गड़दार अड़दार चहुँ,
चौंकि चितवनि चरखीन चमकारे हैं।
बरुनी अरुन लीक पलक झलक फूल,
झूमत सघन घन घूमत घुमारे हैं॥
रंजित रजोगुन सिंगार पुंज कुंजरत,
अंजन सोहन मनमोहन दतारे हैं।
'देव' दुख-मोचन सकोच न सकत चलि,
लोचन अचल ये मतंग मतवारे हैं॥

[३८]

चन्द्रमुखि तेरे चष चितै चकि चेति चपि,
चित्त चोरि चलै सुचि साचनि डुलत हैं।
सुंदर सुमंद सविनोद 'देव' सामोद,
सरोष संचरत हाँसी लाज बिलुलत हैं॥
हरिन चकोर मीन चंचरीक मैन बान,
खंजन कुमुद कंज पुंजन तुलत हैं।
चौंकत चकत उचकत औ छकत चले,
जात कलोलत संकलत मुकुलत हैं॥

[३६]

कैधौं दृगसागर के आस पास स्यामताई,
ताही के ये अंकुर उलहि दुति बाढ़े हैं।
कैधौं प्रेम क्यारी जुग ताके ये चहूँधा रची,
नीलमनि सरनि कौ बारि दुख डाढ़े हैं॥
मूरति सुकवि तरुनी की बरुनी न होवे,
मेरे मन आवे ये विचार चित गाढ़े हैं।
जेई जे निहारे मन तिनके पकरिबे को,
देखो इन नैनन हजार हाथ काढ़े हैं॥

[४०]

कान्हकी बाँकी चितौनि चुभी झुकि काल्हिही झाँकी है ग्वालिगवाछनि।
देखी है नोखी-सी चोखीसी कोरनि ओछे फिरै उभरे चित जाछनि॥
मारेइ जाति निहारे मुबारक यै सहजै कजरारे मृगाछनि।
सींक लै काजर दे री गँवारिनि आँगुरी तेरी कटैगी कटाछनि॥

[४१]

नासिका ऊपर भौंहन के मधि कुकुम बिंदु मृगं मद को कनु।
पूंछ ते पंख पसारि उड़्यो, मुख ओर खगा लखि मोतिन को गनु॥
'देव' कै नैन तुलान पला धरि भाग सुहाग के ताल तटी तनु।
नारि हिये त्रिपुरारि बंध्यो लखि हारि कै मैन उतारि धर्यो धनु॥

[४२]

घाँघरो घनेरो लाँबी लटैं लटे लाँक पर,
काँकरेज़ी सारी खुली अधखुली टाड़ वह।
गारी गजगोनी दिन दूनी दुति होनी 'देव',
लागति सलोनी गुरु लोगन के लाड़ वह॥
चंचल चितौन चित चुभी चित चोर वारी,
मोर वारी वेसरि सुकेसरि की आड़ वह।
गोरे गोरे गोलनि की, हँसि हँसि बोलनि की,
कोमल कपोलन की जी में गड़ि गाड़ वह॥

[४३]

आधे चन्द्रमा के रूप ढाके केश घटा कैधौं,
गगना के नाके विधु आठवीं कला के हैं।
कैधौं काम देवताके कनक बटा के रूप;
औंधा के धरे हैं हेतु ससि को सुधा के हैं॥
कैधौं एक छत्र ताके छत्र छबिता के छीने,
नासिका के दंड बाँके गुन विधना के हैं।
कैधौं नाथ भाग्य ताके भाजन भरे धरे हैं,
कैधौं ये विशाल भाल भले राधिका के हैं॥

[४४]

तैसी चख चाहन चलन उतसाहन सों,
तैसो बिबि बाहन बिराजत बिजैठो है।
तैसो भृगटी को ठाट तैसोई दियै लिलाट,
तैसोई बिलोकिबे को पी को प्रान पैठो है॥
कहै कवि 'नीलकंठ' तैसी तरुनाई तामे,
यौवन नृपति सो फिरत ऐंठो ग्वैंठो है।
छूटी लट भाल पर सोहै गोरे गाल पर;
मानों रूप माल पर व्याल ऐंठि बैठो है॥

[४०]

कान्हकी बाँकी चितौनि चुभी झुकि काल्हिही झाँकी है ग्वालिगवाछनि
देखी है नोखी-सी चोखीसी कोरनि ओछे फिरै उभरे चित जाछनि॥
मारेइ जाति निहारे मुबारक यै सहजै कजरारे मृगाछनि।
सींक लै काजर दे री गँवारिनि आँगुरी तेरी कटैगी कटाछनि॥

[४१]

नासिका ऊपर भौंहन के मधि कुकुम बिंदु मृगं मद को कनु।
पूंछ ते पंख पसारि उड़यो, मुख ओर खगा लखि मोतिन को गनु॥
'देव' कै नैन तुलान पला धरि भाग सुहाग के ताल तटी तनु।
नारि हिये त्रिपुरारि बंध्यो लखि हारि कै मैन उतारि धर्यो धनु॥

[४२]

घाँघरो घनेरो लाँबी लटैं लटे लाँक पर,
काँकरेजी सारी खुली अधखुली टाड़ वह।
गारी गजगोनी दिन दूनी दुति होनी 'देव',
लागति सलोनी गुरु लोगन के लाड़ वह॥
चंचल चितौन चित चुभी चित चोर वारी,
मोर वारी वेसरि सुकेसरि की आड़ वह।
गोरे गोरे गोलनि की, हँसि हँसि वोलनि की,
कोमल कपोलन की जी मैं गड़ि गाढ़ वह॥

[४३]

आधे चन्द्रमा के रूप ढाके केश घटा कैधौं,
गगना के नाके विधु आठवीं कला के हैं।
कैधौं काम देवताके कनक बटा के रूप;
औंधा के धरे हैं हेतु ससि को सुधा के हैं॥
कैधौं एक छत्र ताके छत्र छबिता के छीने,
नासिका के दंड बाँके गुन विधना के हैं।
कैधौं नाथ भाग्य ताके भाजन भरे धरे हैं,
कैधौं ये विशाल भाल भले राधिका के हैं॥

[४४]

तैसी चख चाहन चलन उतसाहन सों,
तैसो बिबि बाहन बिराजत बिजैठो है।
तैसो भृगटी को ठाट तैसोई दियै लिलाट,
तैसोई बिलोकिबे को पी को प्रान पैठो है॥
कहै कबि 'नीलकंठ' तैसी तरुनाई तामे,
यौवन नृपति सो फिरत ऐंठो ग्वैंठो है।
छूटी लट भाल पर सोहै गोरे गाल पर;
मानों रूप माल पर ब्याल ऐंठि बैठो है॥

[४५]

कारे कजरारे सटकारे घुंघवारे प्यारे,
मणि फणि वारे भोर फबन लौं छूटे हैं।
बासे हैं फुलेल ते नरम मखतूल ऐसे,
दीरघ दराज ब्याल ब्यालिन लौं जूटे हैं॥
'घासीराम' चारु चौंर जमुना सिवार बोरों,
ऐसी स्यामताई पै गगन घन लूटे हैं।
छाइ जैहै तिमिर विहाय रैनि आय जैहै,
झारि बाँध अजहूँ सँभार बार छूटे हैं॥

[४६]

कज्जल के कूट पर दीप शिखा सोती है कि,
श्याम घन मंडल में दामिनी की धारा है।
यामिनी के अंक में कलाधर की कोर है कि,
राहु के कबंध पै कराल केतु तारा है॥
शङ्कर कसौटी पर कंचन की लीक है कि,
तेज ने तिमिर के हिये में तीर मारा है।
काली पाटियों के बीच मोहनी की मांग है कि,
ढाल पर खांड़ा कामदेव का दुधारा है॥

[४७]

जगमगे जोबन जराऊ तरिवन कान,
ओंठन अनूठे रस हाँसी उमड़े परत।
कंचुकी में कसे आवें उकसे उरोज,
बिंदु बंदन लिलार बड़े बार घुमड़े परत॥
गोरे मुख सेत सारी कंचन किनारीदार,
'देव' मनि झुमका झुमकि झुमड़े परत॥
बड़े बड़े नैन कजरारे बड़े मोती नथ,
बड़ी बरुनीन होड़ा होड़ी हुमड़े परत॥

[४८]

सोने की एक लता तुलसी बन क्यों बरनों सुनि बुद्धि सकै छ्वै।
'केशवदास' मनोज मनोहर ताहि फले फल श्रीफल से द्वै॥
फूलि सरोज रह्यो तिन ऊपर रूप निरूपन चित्त चलै च्वै।
तापर एक सुवा शुभ तापर खेलत बालक खंजन के द्वै॥

[४९]

चन्द कैसो भाग भाल भृकुटी कमान ऐसी,
मैन कैसे पैने सर भृकुटी विलासु है।
नासिका सरोज गन्धवाह से सुगन्ध वाह,
दार्‍यों सो दसन कैसो बीजुरी सो हासु है॥

भाई ऐसी ग्रीवा भुज पान सो उदर अरु,
पङ्कज-सो पाई गति हंस ऐसी जासु है।
देखी है गोपाल एक गोपिका मैं देवता सी,
सोने सो सरीर सोंधे कैसी बासु है॥

[५०]

कुल की सी करनी कुलीन की सी कोमलता,
सील की सी संपति सुसील कुल कामिनी।
दान को सो आदर उदारताई सूर की सी,
गुन की लोनाई गुनवंती गजगामिनी॥
ग्रीषम को सलिल, सिसिर को सो घाम 'देव'
हेउँत हसंती जलदागम की दामिनी।
पून्यो को सो चंद्रमा प्रभात को सो सूरज,
सरद को सो बासर बसंत की सी जामिनी॥

[५१]

कंज से चरण देव गढ़ी से गुलफ शुभ,
कदली से जंघ कटि सिंह पहुँचत है।
नाभी है गंभीर व्याल रोमावली कुंभ कुच,
भुज ग्रीव भाय कैसी ठोढ़ी विलसत है॥

मुख चंद बिम्बाधर चौका चारु सुक नाक,
मीन नैन भौंहन बंकाई अधकत है।
भाल आधो बिधु भाग करन अमृत कूप,
बेनी पिक बैनी जू की भूमि परसत है॥

[५२]

प्रवाल से पांय चुनी से लला,
नखदंत दिपैं मुकतान समान।
प्रभा पुखराज सी अंगन में,
बिलसैं कच नीलम से द्युतिमान॥
कहै कवि 'शंकर' माणिक से,
अधरारुण हीरक सी मुसकान।
विभूषण पनन से पहिरे बनिता,
बनी जौहरी की सी दुकान॥

[५३]

करैं तप सीप परे जल मैं बनिवे को सु कानन के उपमान।
प्रवाल पलोटत पाँय सदा बिसराय मनोहरता को गुमान॥
हंसी मँह हीरे निछावरि होत मिटै रद सों मुकताहल मान।
कहाँ 'रतनाकर' चाकर सो है कहाँ बनिता सुषमा की खदान॥

[५४]

जोबन के रंग भरी ईंगुर से अंगनि पै,
एँड़िन लौं आँगी छाजै छबिन की भीर की।
उचके उचो हैं कुच झपे झलकत झीनी,
झिलमिल ओढ़नी किनारीदार चीर की॥
गुलगुले गोरे गोल कोमल कपोल,
सुधाबिंदु बोल इंदुमुखी नासिका ज्यों कीर की।
'देव' दुति लहराति-छूटे छहरात केस,
बोरी जैस केसरि किसोरी कसमीर की॥

[५५]

तीनिहुँ लोग नचावति फूंक में मन्त्र के सूत अभूत गती है।
आप सदा गुनवन्ति गुसाइनि पाँयन पूजत प्रानपती है॥
पैनी चितौनि चलावति चेटक को न कियो बस जोग जती है।
कामरू कामिनि काम कला जग मोहिनि भामिनि भानमती है॥

[५६]

मदन के मद मतवारी नव झूमि झाँकै,
सदन थिरात न मिराति रति रंगना।
प्रीतम के रूप को मयासी अचवत तन,
प्यासी ये रहति, जौ लहत सुख सगना॥

प्रेम रस बस प्यावै प्यार सों अधर रस
लागत नखच्छत रुचिर भूष अंगना।
अंग अंग उमगि अनंग उपजावति,
आलिंगन अघात न कलिंग की कुलंगना॥

[५७]

साँवरी सुघर नारी महासुकुमारी सोहै,
मोहै मन मोहन को मदन तरंगनी।
अनगने गुननि के गरब गहीर मति,
निपुन सँगीत गीत सरस प्रसंगनी॥
परम प्रबीन बीन मधुर बजावै गावै,
नेह उपजावै यों रिझावै पति संगनी।
चातुर सुभाय बंक भौहनि दिखाइ 'देव'
विंगनि आलिंगन बनावति तिलंगनी॥

[५८]

गोरी गजराज गति गुननि गहीर,
मति भारे भाग ही रमति सुरति सकोचनी।
आलिंगन चुम्बन अधर पान नखदान,
मानसो वचना रचना सो रुची रोचनी॥

जानै रीति जाकी पहिचानै प्रीति नीकी,
सुखदानी सबही की प्यारी पी की दुख मोचनी।
केसरि करै न सरि को कनक जाकी दरि,
कोकन दरी की नारि कोकनद लोचनी॥

[५९]

देव देखावत कंचन सो तनु, औरनि को मनु तावै अगोनी।
सुंदरि सांचे में दै भरि काढ़ी सी, आपने हाथ गढ़ी बिधि सोनी॥
सोहति चूनरि स्याम किसोरी की, गोरी गुमान भरी गज-गोनी।
कुंदन लीक कसौटी में लेखी सी, देखी सुनारि सुनारि सलोनी॥

[६०]

घर घर डोलत सुघर नर मोहिबे को,
ऊधरी फिरत सब मुख सुख दैनियाँ।
जावक के मिस काम पावक जगावै 'देव' हिय को
हरत यों करत कर सैनियाँ॥
प्रेमी अनुरागिनकों हियरो रिझावै,
अरुझावै सुरझावै बिरुझावै नैन पैनियाँ।
वेनी गुहिंवे कौं पिकबैनी सौ तनैनी फिरैं,
पैनी चितवनि की चपल नैनी नैनियाँ॥

[६१]

कङ्कन करन कल किंकिनि कलित कटि,
  कंचन कंगूरा कुच केस कारी यामिनी।
कानन करनफूल कोमल कपोल कंठ,
  कम्बुक कपोत करि कोकिल कलामिनी॥
केसर कुसुम कलधौत की कछू न कान्ति,
  कोविद प्रवीन बेनी करिवर गामिनी।
कोक कारिका सी किन्नरीक कन्यका सी,
  कल काम की कलासी कमलासी खासी कामिनी॥

[६२]

चुन्नी से चरन चाँदनी में चिलकत,
  चकचौंधन चकोर चिनगी के चाप दूनरी।
चामीकर हू ते चाप चौगुनी चमक चोखी,
  चम्पक बरन चोली चुभी चँचु भूनरी॥
चन्दमुखी चंद्रिका ते चकई चपत चित,
  चोपत प्रवीन बेनी चैत चंद सूनरी।
चुई सी परति चपला सी चै चपल चख,
  चञ्चल चितौन चटकीली चारु चूनरी॥

[६३]

लागत समीर लंक लहकै समूल अंग,
फूल से दुकूलनि सुगंध बिथुर्‍यो परै।
इंदु सो बदन मंद हास सुधा बिंदु,
अरबिंदु ज्यों मुदित मकरंदनि मुर्‍यो परै॥
ललित ललार श्रम झलक अलक भार,
मग में धरत पगु जावक घुर्‍यो परै।
'देव' मनि नूपुर पदुम पद दूपुर ह्वै,
भू पर अनूप रंग रूप निचुर्‍यो परै॥

[६४]

चोथतीं चकोरैं चहुँ ओरैं जानि चंद मुखी,
रहीं बचि डरनि दसन दुति दंपा के।
लीलि जाते बर हीं बिलोकि बेनी बनिता कीं,
गुही जो न होतीं ये कुसुम सर कंपा के॥
'रामजी सुकवि' ढिग भौंहैं ना कमानैं होतीं,
कैरि कैसे छाँड़ते अधर बिंब झंपा के।
दाख कैसे झोरें झलकत जोति जोबन के,
भौंर चाँटि जाते जो न होते रंग चंपा के॥

[६५]

चरन धरै न भूमि बिहरै तहांई जहाँ,
फूले फूले फूलनि बिछायो परयंक है।
भार के डरनि सुकुमार चारु अंगन में,
अंग ना लगावैं चारु केसरि को पंक है॥
'कबि मतीराम' लखि बातायन बीच आयो,
आतप मलिन होत बदन मयंक है।
कैसे सुकुमार वह बाहिर बिजन आवै,
बिजन बयारि लागे लचकत लंक है॥

[६६]

आई बरसाने ते बुलाय वृषभानु सुता,
निरखि प्रभान प्रभा भानु की अथै गई।
चक चकवान के चकाये चकचोटन सों,
चौंकत चकोर चकचौंधा सी चकै गई॥
'देव' नन्दनन्दन के नैनन अनंदमयी,
नन्द जू के मंदिरन चंदमयी छै गई।
कंजन कलिनमयी कुंजन नलिनमयी,
गोकुल की गलिन अलिनमयी कै गई॥

[६७]

माखन सो मन दूध सो जोबन है दधि ते अधिकै उर ईठी।
जा छबि आगे छपा करु छाछ समेत सुधा बसुधा सब सीठी॥
नैननु नेह चुवै 'कवि देव' बुझावत बैन वियोगि अंगीठी।
ऐसी रसीली अहीरी अहो कहौ क्यों न लगै मन-मोहनै मीठी॥

[६८]

बार अंध्यारनि मैं भटक्यो हौं,
निकार्यो मैं नीठि सुबुद्धिन सों धरि।
बूड़त आनन पानिय भीर,
पटीर की आड़ सों तीर लग्यों तिरि॥
मो मन बावरो यों ही हुत्यो,
अधरा मधु पान कै मूढ़ छक्यो फिरि।
'दास' कहौ अब कैसे कढ़े,
निज चाय सो ठोढ़ी के गाड़ पर्यो गिरि॥

[६९]

कुंजन के कोरे मनु केलि रस बोरे लाल,
तालनि के खोरे बाल आवति है नित को।
अमृत निचोरे कल बोलति निहोरे नेकु,
सखिनु के डोरे 'देव' डोलै जित-तित को॥

थोरे थोरे जोबन विथोरे देत रूपरासि,
गोरे मुख मोरे हंसि जोरे लेति हित को।
तोरे लेति रति दुति मोरे लेत मति गति,
छोरे लेति लोकलाज चोरे लेति चित को॥

[७०]

चन्दमयी चम्पक जराव जरकस मयी,
आवत ही गैल वाके कमलमयी भई।
कालिदास मोदमद आनँद विनोदमयी,
लाल रंग मयी भई वसुधा सुधा मई॥
ऐसी बनि बानिक सों मदन छकाई,
रसिकहि की निकाई लखि लगन लगी नई।
नेह को हितै करि गोपाल मोह दैकरि,
सखीन दुचितै करि चितै करि चली गई॥

[७१]

ओझिल ह्वै आई झकि उझकी झरोखे रूप,
झरसि झलकि गई झलकनि झांई की।
पैने अनियारे कै सहज कजरारे दृग,
चोटसी चलाइ चितवनि चंचलाई की॥

कौन जानै कोही उड़ि लागी डीठि मोही उर,
रहै अवरोही कोई निधि ही निकाई की।
अब लगि आंखिन की पूतरी कसौटिन में,
लागी रहै लीक वाकी सोने सी गुराई की॥

[७२]

आलस वलित कोरैं काजल कलित;
मतिराम वै ललित अति पानिप धरत हैं।
सारस सरस साहैं सजल सहास,
सगरब सविलास ह्वै मृगनि विदरत हैं॥
बरुनी सघन बंक तीछन कटाच्छ,
बड़े लोचन रसाल उर पीर ही करत हैं।
गाढ़े ह्वै गड़े हैं न निसारे निसरत,
मैन वान से बिसारे न बिसारे बिसरत हैं॥

[७३]

चलत मरालन की उपमा घटावै बैन,
बोलत अचैन करै प्रभुता पिकन की।
मुसकान सुधा की सोहाग सो सकेलि लेत,
वरन सो जीतै सुंदराई सुवरन की॥

भनत 'कविंद्र' वाकी निरखि सुघरताई,
पाई है दृगन ने बड़ाई डीठि पनकी।
मनते न भूलति भुलावै मनही को वह,
चहचहे चखन की लहलहे तनकी॥

[७४]

उझकि झरोखे झांकि परम नरम प्यारी,
नेसुक देखाय मुख दूनो दुख दै गई।
मुरि मुसकाय अब नेकु ना नजरि जोरै,
चेटक सो डारि उर औरै बीज बै गई॥
कहै कवि 'गङ्ग' ऐसी देखी अनदेखी भली,
पेखै ना नजरि में बिहाल बाल कै गई।
गाँसी ऐसी आंखिन सों आँसी आँसी कियो तन,
फांसी ऐसी लटनि लपेटि मन लै गई॥

[७५]

चोरन गोरिन मैं मिलि कै इतै आई है हाल गवालि कहाँ की।
को न बिलोकि रह्यो 'पदमाकर' वा तिय की अवलोकनि बाँकी॥
धीर अबीर की धूँधुरि में कछु फेर सों कै मुख फेरि कै झाँकी।
कै गई काटि करेजन के कतरे कतरे पतरे करिहाँ की॥

[७६]

वा निरमोहिनि रूप की रासि न ऊपर के मन आनति ह्वै है।
वारहि बार बिलोकि घरी घरी सूरति तो पहिचानति ह्वै है॥
'ठाकुर' या मन की परतीति है जा पै सनेह न मानति ह्वै है।
आवत हैं नित मेरे लिये इतनो तो विशेषहि जानति ह्वै है॥

[७७]

रूप अनूप दई बिधि तोहि तो मान किये न सयानि कहावै।
और सुनो यह रूप जवाहिर भाग बड़े बिरलो कोई पावै॥
'ठाकुर' सूम के जात न कोउ उदार सुने सबही उठि धावै।
दीजिये ताहि दिखाय दया करि जो चलि दूर ते देखन आवै॥

[७८]

बड़ भागिनी रूप की रासि प्रिये अनरीति हिये ते बहाइये जू।
अब प्रीति के पंथ महानिधि में अबला अपनो मन लाइये जू॥
'चिरजीवी' तुम्हैं कर जोरे कहै जनि लाड़िले का विसराइये जू।
इन नैन के बानन मार्‍यो जिन्हैं तिन्है रूप सुधा सों जियाइये जू॥

[७९]

आनन पूरन चन्द लसै अरविन्द विलास विलोचन पेखे।
अम्बर पीत हँसै चपला छवि अम्बुद मेचक अङ्ग उरेखे॥
कामहु ते अभिराम महा 'मतिराम' हिये निहचै करि लेखे।
तैं बरन्यो निज बैनन सों सखि मैं निज नैनन सों मनो देखे॥

[८०]

सौंह दिवाइ सखी इकबारक कानन कानन आनि बसाए।
जानै को 'केसव' कानन तैं कित ह्वै कब नैनन माँहि सिधाए॥
लाज के साज धरेई रहे सब नैनन लै मन को सुमिलाए।
कैसी करौं अब क्यों निकसै यों हरे-ई-हरे हियरे हरि आए॥

[८१]

'देव' जियै जब पूछौ तौ प्रेम को पार कहूँ लहि आवत नाहीं।
सो सब झूठ मतै मन कै बकि मौन सोऊ सहि आवत नाहीं॥
ह्वै नँद नंद तरंगनि को मन फेन भयो गहि आवत नाहीं।
चाहै कह्यो बहुतेरो कछू पै कहा कहिये कहि आवत नाहीं॥

[८२]

घर ना सुहात ना सुहात बन बाहिर हू,
बाग ना सुहात जो खुसाल खुसबोही सों।
कहै 'पदमाकर' घनेरे धन धाम त्योंही,
चैत न सुहात चाँदनी हू जोग जोही सों॥
साँझहू सुहात न सुहात दिन माँझ कछू,
व्यापी यह बात सो बखानत हौं तोही सों।
राति हू सुहात न सुहात परभात आली,
जब मन लागि जात काहू निरमोही सों॥

[८३]

एकै संग हाल नंदलाल औ गुलाल दोऊ,
दृगन गये ते भरी आनँद मढ़ै नहीं।
धोय धोय हारी 'पदमाकर' तिहारी सौंह,
अबतो उपाय एकौ चित्त में चढ़ै नहीं॥
कैसी करूं कहाँ जाऊ कासो कहौं कौन सुनै,
कोऊ तौ निकारौ जासों दरद बढ़ै नहीं।
एरी ! मेरी बीर ! जैसे तैसे इन आँखिन सों,
कढ़िगो अबीर पै अहीर को कढ़ै नहीं॥

[८४]

पुकारि कही मैं दही कोउ लेहु इतो सुनि आय गए इत धाय।
चितै कवि 'देव' चितै ही चले मनमोहन मोहनी तान सी गाय॥
न जानति और कछू तब ते मनमाहिं वहीयै रही छवि छाय।
गई तौ हुती दधि बेचन काज गयो हियरा हरि हाथ बिकाय॥

[८५]

मोरपखा 'मतिराम' किरीट मैं कंठ वनी बन माल सोहाई।
मोहन की मुसकानि मनोहर कुंडल डोलनि मैं छवि छाई॥
लोचन लोल विशाल विलोकनि को न विलोकि भयो बस माई।
वा मुख की मधुराई कहा कहौं मीठी लगै अँखियान लुनाई॥

[८६]

आई भली हौं चली सखियान में पाई गुविन्द के रूपकी झाँकी।
त्यों 'पदमाकर' हार दियो गृह काज कहा अरु लाज कहाँ की॥
है नख तें सिख लौं मृदु माधुरी बांकिये भौंहें बिलोकनि बाँकी।
आज की या छवि देखि भटू अब देखिबे को न रह्यौ कछु बाकी॥

[८७]

मृदु बोलत कुण्डल डोलत कानन कानन कुञ्जनि तें निकस्यो।
बनमाल बनी 'मतिराम' हिये पियरो पट त्यौं हिय में बिलस्यो॥
जब तें सिर मोर पँखानि धरैं चित चोर चितै इत ओर हँस्यो।
तब तें दुरि भाजि कै लाज गई अब लालच नैनन आनि बस्यो॥

[८८]

औचक अगाध सिन्धु स्याही को उमड़ि आयो,
ता मैं तीनों लोक बूड़ि गए एक संग मैं।
कारे कारे आखर लिखे जु कारे कागद,
सुन्यारे करि बांचै कौन जांचै चित भंग मैं॥
आंखिन मैं तिमिर अमावस की रैन जिमि,
जंबूनद-बुंद जमुना जल तरंग मैं।
योंही मन मेरो मेरे काम को न रह्यो माई,
स्याम रंग ह्वै करि समान्यो स्याम रंग मैं॥

[८६]

कान्हमई वृषभानसुता भई प्रीति नई उनई जिय जैसी।
जानै को 'देव' बिकानी सीं डोलै लगै गुरलोगन देखि अनैसी॥
ज्यौं ज्यौं सखी बहरावति बातनि त्यौं त्यौं बकै वह बावरी ऐसी।
राधिका प्यारी हमारी सौं तू कहि, काल्हि की बैन बजाई मैं कैसी॥

[६०]

दूध दुह्यो सीरो पर्यो तातो न जमायो कर्यो,
जामन दयो सो धर्यो धर्योई खटाइगो।
आन हाथ आन पाइ सबही के तबहीं तें,
जबही तें 'रसखानि' तानन सुनाइगो॥
ज्योंहीं नर त्योंही नारी तैसी ये तरुनबारी,
कहिये कहा री सब ब्रज बिललाइगो।
जानिये न आली यह छोहरा जसोमति को,
बाँसुरी बजाइगो कि विष बगराइगो॥

[६१]

राखी गहि गातनि ते गातनि न रही,
अधरात न निहारैं अधरा तन उसासुरी।
पिक सी पुकारी एक निकसी बननि 'देव'
बिकसी कुमोदिनी सी बदन बिकासुरी॥

मोहीं अबलाजन मरत अब लाज औ,
इलाज ना लगत बन्धु साजन उदासुरी।
जागि जपि जीहै बिरहागि उपजी है अब,
जी है कौन बैरिनि बजी है बन बाँसुरी॥

[६२]

वा दिन गई थी ब्रज देखन करील बन,
भूँक में जो परी आय बंसी के अनासुरी।
ताछिन तें आली फिरौं बावरी सों रावरी सों
'द्विज देव' नेकहूँ रुकी न पर साँसुरी॥
आजु कछु आई हिये सूरत समानी हुती,
रञ्चक बिहानी रैन धरकत पाँसुरी।
कीजै कहा राम अब जैहै क्यहि ठाम,
ये रो फेरि बन बैरिन बजीरी बन बाँसुरी॥

[६३]

पान कियेहू दवानल के जेहि को अँधरारस नाहिं डढ़ैरी।
ताके लगी मुख सों यह जाय ता ज्वालकी तानंनि क्यों न गढ़ैरी॥
गोकुलनाथ के हाथ बसी है बिसासनि नाथिबे ही को कढ़ैरी।
छेदति या हिय का बँसुरी सखि पाहन फोरि कै बाँस कढ़ैरी॥

[६४]

फूंकि के आई सबै बनको, हिय फूंकि कै मैनकी आग जगावति।
तू तौ रसातल बेधि गई उर बेधति और दया नहिं लावति॥
आप गई अरु औरन खोवति सौति के काम भली विधि आवति।
ज्यों बड़े बंस तें छूटी है त्यों बड़े बंस तें औरन हू को छुड़ावति॥

[६५]

खोरि लौं खेलन आवती ये न तौ आलिन के मत में परती क्यों।
'देव' गोपालहिं देखती ये न तौ या विरहानल मैं बरती क्यों॥
बापुरी मंजुल आँब की बालि सु ज्वाल सी ह्वै उरमें अरती क्यों।
कोमल कूक कै क्वैलिया कूर करेजन की किरचैं करती क्यों॥

[६६]

जिय पै जु होइ अधिकार तौ विचार कीजै,
लोकलाज भलो बुरो भले निरधारिये।
नैन बैन कर पग सबै परबस भये,
उतै चलि जात इन्हैं कैसे कै संभारिये॥
'हरीचंद' भई सबै भांति सों पराई हम,
इन्है ज्ञान कहि कहौ कैसे कै निबारिये।
मन में रहै जो ताहि दीजिये विसार,
मन आपै बसै जा में ताहि कैसे कै विसारिये॥

[९७]

जीभ कुजाति न नेकु लजाति गनै कुल जाति न बात वह्यौ करै ।
'देव' नयो हिय नेह लगाय बिदेह की आँचन देह दह्यौ करै ॥
जीव अजान न जानत जान जो मैन अयान के ध्यान रह्यौ करै ।
काहे को मेरो कहावत मेरो जु पै मन मेरो न मेरो कह्यौ करै ॥

[९८]

अरविंद प्रफुल्लित देखि कै भौंर अचानक जाय अरैं पै अरैं ।
बनमाल थली लखि कै मृगसावक दौरि निहारि करैं पै करैं ॥
सरसी ढिग आय कै व्याकुल मीन विलास तें कूदि परैं पै परैं ।
अवलोकि गोपाल को 'दासजू' ये अखियाँ तजि लाज ढरैं पै ढरैं ॥

[९९]

अलि इन्दु सुधा अरबिन्द रमा जलबिन्दु लै बीच विचारिये ना ।
घनस्याम को रूप निहारि अरी घनस्याम को रूप निहारिये ना ॥
'नन्दरामजू' अन्तर बीच निरन्तर भूलिहू अन्तर डारिये ना ।
चित चाहत मेरो सदा सजनी हरि के मुख सों दृग टारिये ना ॥

[१००]

धार मैं धाय धँसी निरधार ह्वै जाय फँसीं उकसीं न अँधेरी ।
री अँगराय गिरी गहिरी गहि फेरे फिरीं न घिरीं नहीं घेरी ॥
'देव' कछू अपनो बसु ना रस लालच लाल चितै भईं चेरी ।
बेगि ही बूड़ि गईं पंखियाँ अंखियाँ मधु की मखियाँ भई मेरी ॥

[१०१]

जेहि मोहिबे काज सिंगार सजे तेहि देखत मोह मैं आय गई।
न चितौनि चलाय सकी उनहीं के चितौनि के घाय अघाय गई॥
वृषभान लली की दसा सुनौ 'दास जू' देत ठगोरी ठगाय गई।
बरसाने गई दधि बेचिबे को तहाँ आपुही आप बिकाय गई॥

[१०२]

हरि हेर हमारे हिये विष बीजन बै गयो बै गयो बै गयो री।
ठनि ठौर कुठौर सनेह की ठोकर दै गयो दै गयो दै गयो री॥
'नँदरामजू' त्यों बिरहानल ते तन तै गयो तै गयो तै गयो री।
चित मेरो चुराय के चोर अरी मन लै गयो लै गयो लै गया री॥

[१०३]

साँसन ही सों समीर गयो अरु आँसन ही सब नीर गयो ढरि।
तेज गयो गुन लै अपनो अरु भूमि गयो तनु को तनुता करि॥
'देव' जियै मिलिवेई की आस कै आसहू पास अकास रह्यो भरि।
जा दिन ते मुख फेरि हरे हँसि हेरि हिया जु लियो हरिजू हरि॥

[१०४]

ए विधि जो विरहागि के वान सों मारत हौ तौ यहै वर मांगौं।
जो पसु होउँ तऊ मरि कैसेहुँ पाँवरी ह्वै प्रभु के पग लागौं॥
'दास' पखेरुन में करौं मोर जु नन्दकिसोर प्रभा अनुरागौं।
भूषण कीजियै तौ वनमालहिं जातैं गोपालहिं के हिय लागौं॥

[१०५]

मनोज विथा सो विथा मरिबे हित पायो सखी नर को तनु हाय ।
न क्यों तेहि कानन में जनमी जहँ 'हँस' गोपाल चरावत गाय ॥
जु होती तहाँ बनमालहु मैं तो कबौं हरि लेत हिये सों लगाय ।
जु होती सिला ता बजावत बेनु कबौं न कबौं हरि बैठत आय ॥

[१०६]

जाके लगे गृह काज तजे अरु मातु पिता हित नात न राखै ।
सागर लीन ह्वै चाकर चाह के धीरज हीन अधीर ह्वै भाखै ॥
व्याकुल मीन ज्यों नेह नवीन में मानो दई बरछीन की साखै ।
तीर लगै तरवारि लगै पै लगै जनि काहू सों काहू की आँखैं ॥

[१०७]

चन्दन पङ्क गुलाब के नीर सरोज की सेज बिछाय मरोरी ।
तूल भयो तन जात जरो यह बैरी दुकूल उतार धरोरी ॥
'देव जू' झूठै सबै उपचार यही में तुषार को भार भरोरी ।
लाज के ऊपर गाज परे ब्रजराज मिलैं सोई काज करोरी ॥

[१०८]

जाब नहीं कुल गोकुल मैं अरु दूनी दुहूँ दिसि दीपति जागै ।
त्यौं 'पदमाकर' जोई सुनै जहँ सो तहँ आनँद में अनुरागै ॥
ऐ दई ऐसी कछू कर व्यौंत जु देखै अदेखिन के दृग दागै ।
जापै निसंक ह्वैं मोहन को भरिये निज अङ्क कलंक न लागै ॥

[१०६]

जब ते कुंवर कान्ह रावरी कला निधान,
कान परी वाके कछु सुजस कहानी सी।
तब हीं ते 'देव' देखौ देवता सी हँसति सी,
खीझतिसी रीझतिसी रूसति रिसानीसी॥
छोहीसी छलीसी छरि लीनीसी छकीसी छीन,
जकीसी चकीसी लागी थकी थहरानीसी।
बींधीसी बंधीसी विष बूड़ीसी विमोहितसी
बैठी वह बकति विलोकति बिकानी सी॥

[११०]

सूंघै न सुबास रहै राग रग सों उदास,
भूलि गई सुरति सकल खान पान की।
कवि 'मतिराम' इक टक अनिमिस नैन
बूझै न कहति वैन समुझै न आन की॥
थोरीसी हँसी में हैं ठगोरी ऐसी डारी तुम,
बौरी करी भौरी ते किसोरी वृषभान की।
तबते विहारी यह भई है पखान कैसी,
जब ते निहारी रुचि मोर के पखान की॥

[१११]

जा दिन तैं देखे 'मतिराम' तुम ता दिन तैं,
बढ़ी रहै मुसकानि वाके जियराई पर।
भावत न भोजन बनावत न आभरन,
हेतु न करत सुधा निधि सियराई पर॥
चलि उठि देखौ बड़े भाग हैं तिहारे अब,
राखौ धरि राधिकै कन्हाई हियराई पर।
दूनी दुति छाई देह आई दुबराई पिय,
राई लौनु वारिए तिया की पियराई पर॥

[११२]

जात हुती गुरु लोगनि मैं कहुँ आइ गये हरि कुंजगली सों।
लाजसों सौंहैं चितै न सकी फिरि ठाढ़ी भई लगि आली अलीसों॥
आरसी ऊँची करी करकी कहि 'तोष' लख्यो छबि भाँति भलीसों।
चारुता चातुरता पर लाल गयो बिकि श्रीवृषभान लली सों॥

[११३]

मूरति जो मनमोहन की मनमोहनी के थिर ह्वै थिरकीसी।
'देव' गुपाल को बोल सुनै सियराति सुधा छतियाँ हिरकीसी॥
नीके झरोखा ह्वै झांकि सकै नहिं, नैनन लाल घटा घिरकीसी।
पूरन प्रीति हिये हिरकी खिरकी खिरकीन फिरै फिरकीसी॥

[११४]

ए अहीर वारे तोसों जोरि कर कोरि कोरि,
विनय सुनाई बलि बाँसुरी बजावै जनि।
बाँसुरी बजावैं तो बजाव मा वलाय जानै,
बड़ी बड़ी आंखिन सों एकटक लावै जनि॥
लावै है तो लाव कवि 'तोष' मोसों कहा काम,
बार बार दौरि दौरि मेरी पौरि आवै जनि।
आवै है तो आव हम आइबो कबूल्यो,
पर मोरे गोरे गात में असित गात छूवावै जनि॥

[११५]

गोकुल की गलिन गलीन यह फैली बात,
कान्है नन्दरानी वृषभानु भौन ब्याहती।
कहै 'पदमाकर' यहाँ ही त्यों तिहारा चलै,
ब्याह को चलन यहै सवही सराहती॥
सोचती कहा हो कहा करि हैं चवायनी ये,
आनंद की अवली न काहे अवगाहती।
प्यारा उपपति ते सु होत अनुकूल, तुम,
प्यारी परकीया ते स्वकीया होन चाहती॥

[११६]

को है री इतेक भागवान और भू पै आजु,
जैसे सखि साजन उमंग रसरत हैं।
कहि 'राजहंस' हेरि येरी मेरी बीर तिन्है,
बाँकी छिटकाय छबि हियरो हरत हैं॥
लाजन गड़े-से चारु चरनन दीन्हें दीठि,
हिय में सनेह के उछाह उछरत हैं।
मेरु चहुँ ओर ससि सूरज समान आजु,
ललना ललन बर भाँवरे भरत हैं॥

[११७]

लहलही बैस उलही है दुलही की,
'देव' उर मैं उरोज जैसे उभरत पाग है।
अनगिने दिननि अनूप दुति आनन की,
देखत ही उपजै अनूठो अनुराग है॥
तैसी ये तरल तीखे अनसीखे नैननि तैं,
निचुरैं निपुन सूधो भावते को भाग है।
सोने से सुरंगनि तैं चंपा चारु,
अंगनि तैं, रंगनिसों ऊंचत तरंगनि सुहाग है।

[११८]

जीव धौंही बँधिजात है ज्यों-ज्यों सुनीबि तनीनि को बांधति छोरी
'दास' कटीले हैं गात कँपै, बिहसौंहैं लजौहैं लसैं दृग लौं री
भौंहैं मरोरति नाक सिकोरति चीर निचोरति औ चित चोरी
प्यारे गुलाब के नीर में बोर्यो प्रिया पलटे रसभोर में बोरी

[११९]

लाज विलोकन देत नहीं रतिराज विलोकन ही की दई मति
लाज कहै मिलिये न कहूँ रतिराज कहै हित सों मिलिये यति
लाजहु की रतिराजहु की कहै 'तोष' कछू कहि जात नहीं गति
लाल निहारिये सौंह कहौं वह बाल भई है दुराज की रैयति

[१२०]

वारने सकल एक रोरी ही की आड़ पर,
हा हा न पहिरि आभरन और अँग मैं।
कवि 'मतिराम' जैसे तीछन कटाछ तेरे,
ऐसे कहाँ सर हैं अनंग के निखंग मैं॥
सहज सुरूप सुघराई रीझो मन मेरो,
डोलत हैं तेरी अद्भुत की तरँग मैं।
सेत सारी ही सों सब सौतैं रँगी स्याम रँग,
सेत सारी ही सौं रँगे स्याम लाल रँग मैं।

[१२१]

भई हौ सयानी तरुनाई सरसानी प्रीति,
प्रीतम पत्यानी दूरि लाज उर नाखियो।
कवि 'मतिराम' काम केलि की कलानि करि,
मोहन लला को बस कीबो अभिलाखियो॥
मृदु मुसकाय परजंक में निसंक जाय,
अंक भरि आनँद अधर सुधा चाखियो।
नेवर की झनक भनक राख प्यारी आजु,
रसना की झनक तनक रस राखियो॥

[१२२]

आजु सखी ननदी करि प्यार विभूषण भूषण दै पठये हैं।
मंगल मूल बनाय विचित्र सुफूल दुकूल निहारि नये हैं॥
आनँद की सुघरी उघरी सिगरे मन वांछित काज भये हैं।
बूझति तो कहँ वासर के कहुरी अब केतिक याम गये हैं॥

[१२३]

पाँवरिन पाँवड़े परे हैं पुर पौर लागि,
धाम धाम धूपन की धूम धुनियत हैं।
कस्तूरी अतरसार चोआ मृग घनसार,
दीपक हजारन अँध्यार लुनियत हैं॥

मधुर मृदंग राग रँग के तरँगनि मैं,
अँग-अँग गोपिन के गुन गुनियत हैं।
'देव' सुखसाज महाराज ब्रजराज आज,
राधाजू के सदन सिधारे सुनियत हैं॥

[१२४]

काछे सितासित काछनी 'केशव' पातुर ज्यों पुतरीन बिचारो
कोटि कटाछ नचै गति भेद नचावत नायक नेहनि न्यारो।
बाजत है मृदुहास मृदंग सो दीपति दीपन को उजियारो
देखति हौं यह देखहुगे हरि होत है आंखिन ही मैं अखारो।

[१२५]

आओ जिन आइबे को, गहो जिन गहिवे को,
गहे रहिवे को छोड़ि छोड़िकै सुनावती।
खीझिहू को रीझि, झिझकारिबो मया है अरु,
रोसै रस ज्यौं-ज्यौं भृकुटीन को चढ़ावती॥
कहै 'कवि तोष' हाँ को नाहिंये कहत नारि,
रावरी सों तुम सों न भेद मैं दुरावती।
सुख जो चहौगे तो न भरम गहौगे लाल,
निपट निवोढ़न की पारसी बतावती॥

[१२६]

ललित लवँग लतिका सी है लचीली बाल,
ऐसी जानि नेकु सक चित्त मैं न दीजिये।
भौंरन के भार सों नमत मँजरी न नेक,
याही को उदाहरन मन गुनि लीजिये॥
जकरि भुजान सों इकन्त परयंक पर,
लपटि अनँद सों अमंद रस पीजिये।
मानि मेरी सीख तजौ मन को संदेह ऐसो,
नेनू सी नरम नारि कैसे रति कीजिये॥

[१२७]

नेह भरी तैं सदेह खरी रस मेंह भरी आंखियान विसेखी।
भौंहनि मैं भलकै मुसुकानि सी काम कमान मनौ अवरेखी॥
'देव' सुभाव रखै मधु बोल सुधानिधि मैं न इती रुचि पेखी।
कैसेहूँ क्यों हूँ रिसात जु पै सरसात वनी अरसात न देखी॥

[१२८]

सहज सुवास युत देह की दुगुनि दुति,
दामिनि दमक दीप केसरि कनक ते।
'मतिराम सुकवि' सुमुखि सुकुमारि अंग,
सोहत सिंगार चारु जोवन वनक ते॥

सोइबे को सेज चली प्रानपति प्यारे पास,
जगत जुन्हाई ज्योति हँसनि तनक ते।
चढ़त अटारी गुरु लोगनि की लाज प्यारी,
रसना दसन दाबै रसना झनक ते॥

[१२९]

लाई केलिभवन भुलाय भोरी भामिनी को,
फूल गंधकै परस कीन्ह्यौ पौन रुख ते।
कलित बसन कृशतन कुच कमनीय,
पौढ़यो गहि पीतम प्रसून सेज सुख ते॥
कवि 'पजनेस' भुज भरत हहाकै हिय,
सिसकि समेटि साँस नीबी गहि दुख ते।
आह करि उछरि सचोट पन्नगी-सी ऐंठि,
उमठि अगीरी मैं मरीरी कढ़ी मुख ते॥

[१३०]

अंचल के ऐंचे चल करती दृगंचल को,
चंचला ते चंचल चलै न भजि द्वारे को,
कहै 'पदमाकर' परै सी चौंक चुंबन मैं,
छलनि छपावै कुच कुंभनि किनारे को।

छाती के छुवे पै परै रातीसी रिसाय,
गलबांही किये करै नाहीं नाहीं पै उचारे को।
ही करति सीतल तमासे तुंग ती करति,
सी करति रति में बसी करति प्यारे को॥

[१३१]

कुंद की कली·सी दंतपांति कौमुदी·सी दीसी,
बिच बिच मीसी रेख अमीसी गरकि जात।
बीरी त्यों रची·सी विरची·सी लखै तिरछीसी,
रीसी अंखियाँ वै सफरीसी त्यों फरकि जात॥
रसकी नदी-सी दयानिधि की न दीसी थाह,
चकित अरी·सी रति डरी·सी सरकि जात।
फंद में फंसी·सी भरि भुज में कसी-सी, जाकी–
'सीसी' करिबे में सुधा सीसीसी ढरकि जात॥

[१३२]

बीति गई रजनी जुग जाम सु कैसेहु स्याम को जीय भरै ना।
अंक भरै कहि 'तोष' तऊ छुटि जाति थिराति न धीर धरै ना॥
चंपक अङ्ग मयंक मुखी हरि अंक तऊ परजंक परै ना।
दार फिरै पलिका पर, वारि पुरैनिके पात मैं ज्यों ठहरै ना॥

[१३३]

झाँझरियाँ झनकैंगी खरी खनकैंगी चुरी तन को तन तोरे।
'दासजू' जागतीं पास अली परिहास करैंगी सबै उठि भोरे।
सौंह तिहारी हौं भाजि न जाऊँगी आई हूँ लाल तिहारे ही धोरे।
केलि की रैनि परी है घरीक गई करि जाहु दई के निहोरे।

[१३४]

चाह भरो चंचल हमारो चित्त नौल बधू,
तेरी चाल चंचल चितौनि में बसत है।
कहै 'पदमाकर' सुचंचल चितौनिहु ते,
औझकि उझकि झझकनि में फंसत है॥
औझक उझकि झझकनि ते सुरझि बेस,
बाँही की गहनि मांहि आइ बिलसत है।
बाँही की गहनि ते सुनाही की कहनि आयो,
नाँही की कहनि ते सुनाहीं निकरत है॥

[१३५]

गही जब बाँही तब करी तुम नाँहीं,
पाँव धरी पलकाहीं नाहीं नाहीं के सुभाई हौ।
चुंबन में नाहीं औ अलिंगन में नाहीं,
परिरंभन में नाहीं नाहीं नाहीं अवगाही हौ॥

बोलन में नाहीं पटखोलन में नाहीं,
सब हासके बिलासन में नाहीं ठीक ठाई हौ।
मेलि गलबाँही केलि कीन्ह्यो चित चाही,
अरे हाँ ते भली नाहीं या कहाँ ते सीख आई हौ॥

[१३६]

इन्दिरा के मंदिर से सुंदर बदन वे,
मदन मूंदे बिहंसै रदन छबि छानि छानि।
ऊरुन में ऊरू उर उरनि उरोज भीजे,
गातनि में गात अँगिरात भुज भानि भानि।
दूरि ही ते दौरि दुरि-दुरि पौरि ही ते मुरि,
मुरि जाती 'देव' दासी अति रुचि मानि मानि।
पीत मुख भये पीया पीतम जामिनि जगे,
लपटत जात प्रात पीत पट तानि तानि॥

[१३७]

कै रति रंग थकी थिर ह्वै परजंक पै प्यारी परी सुख पाय कै।
त्यौं 'पदमाकर' स्वेद के बुंद रहे मुकताहल से छवि छाय कै॥
बिंदु रचे मेंहदी के लसे कर तापर यों रह्यो आनन आय कै।
इंदु मनो अरविंद पै राजत इन्द्र वधून को वृन्द विछाय के॥

[१३८]

चहचही चुभकैं चुभी हैं चौंक चुंबन की,
लहलही लाँबी लहैं लटकी सुलंक पर।
कहै 'पदमाकर' मजान मरगजी मंजु,
मसकी सुआँगी है उरोजन के अंक पर॥
सोई सरसार यों सुगंधन समोई सेज,
सीतल सलोने लोने बदन मयंक पर।
किन्नरी नरी है कि परी है छबिदार परी,
टूटि सी परी है कि परी है परयंक पर॥

[१३९]

गौन कियो जब गौने की रैनि अली मिलि केलिनि लैही चली है।
श्रीवृषभान ललीहि अली लै चलीं लखि कान करी न भली है॥
सेज पै पेखि परी सी परी ज्यों परी ही मिलीं नलिनी की कली है।
भैया की सौं निरदैया बड़ो यह दैया मृनाल-सी कैसी मली है॥

[१४०]

दृग लाल बिसाल उनींदे कछू गरबीले लजीले सुपेखहिंगे।
कब धौं सुथरी बिथुरी अलकैं भपकी पलकैं अवरेखहिंगे॥
कवि 'शंभु' सुधारत भूषण वेस निहारि नयो जग लेखहिंगे।
अँगरात उठी रति-मंदिर ते कब भोरहिं भामिनि देखहिंगे॥

[१४१]

आरस सों रस सों 'पदमाकर' चौंकि परै चख चुंबन के किये।
पीक भरी पलकैं झलकैं अलकैं झलकैं छवि छूटि छटा लिये॥
सो सुख भाखि सकै अब को रिसकै कसकै मसकैं छतियाँ छिये।
राति की जागी प्रभात उठी अँगरात जँभात लजात लगी हिये॥

[१४२]

अध खुली कंचुकी उरोज अध आधे खुले,
अधखुले वैष नख रेखन के झलकैं।
कहैं 'पदमाकर' नवीन अध नीबी खुली,
अध खुले छहरि छराके छोर छलकैं॥
भोर जगि प्यारी अध ऊरध इतै की ओर,
भायी झिखि झिरकि उघारि अध पलकैं।
आँखैं अधखुली अध खुली खिरकी है खुली,
अध खुले आनन पै अधखुली अलकैं॥

[१४३]

गोरी गरबीली उठी ऊंघत गात,
'देव कवि' नीलपट लपटी कपट-सी।
भानु की किरन उदैसान कंदरा ते कढ़ी,
सोभा छवि कीन्ही तम तोम पै दपट-सी॥

सोने की सलाका स्याम पेटी ते लपेटी कढ़ी,
पन्ना ते निकारी पोखराज के झपट-सी।
नील घन तड़ित सुभाय धूम धुंधरित,
धायकर धँसी दावा पावक लपट-सी॥

[१४४]

मन भावते के ढिग ते उठि भामिनि भोरही भूषण हाथ लिये।
रंगभौन के भीतर भाजि पड़ी भय भार भरी अति लाज हिये॥
सजनी जन ते दुरिकै 'कवि देव' निहारति हार बिहार किये।
तिय बारहिं बार संवारति ही निरवारति बार किंवार दिये॥

[१४५]

जगमगी कंचुकी पसीजी स्वेद सीकरनि,
डगमगी डग न संभारी संभरति है।
रंगपाल सरबती साड़ी की सलोट कल,
कंपित करन न सँवारी सँवरति है॥
विलुलित वर बङ्क वार पीक लीक वारी,
झपकीली पल न उघारी उघरति है।
प्यारी की उनींदी वा अटारी उतरनि,
आज चढ़ि रही चित न उतारी उतरति है॥

[१४६]

आरस सों आरत सँभारत न सीस पट,
गजब गुजारत गरीबन की धार पर।
कहैं 'पदमाकर' सुरासों सरसार तैसे,
बिथुरि बिराजैं बार हीरन के हार पर॥
छहरि-छहरि छिति छाजत छरा के छोर,
भोर उठि आई केलि-मंदिर दुवार पर।
एक पग भीतर औ एक देहरी पै धरे,
एक कर कंज एक कर है किवार पर॥

[१४७]

रीझै रिझवारि इंदुवदनी उदार सूर रूख,
की सी डार डोलै रंग रखियाँनि मैं।
साँवरी सलौनी गुनवन्त गजगौनी महा सुंदर,
सुघर लाख लाख लखियांनि मैं॥
जागी सब रैनि बड़भागी पिय प्यारे,
संग प्रेमरस पागी अनुरागी रखियांनि मैं।
दाग्यौं से दसन मंद हँसनि विसद भरी,
सह भरी सोभा मद भरी अँखियानि मैं॥

[१४८]

प्रात समै वृषभानु सुता उठि आपु गई सरितान के खोरन।
अंजन धोय अँगोछिके देह लगी ढिग बैठि कै बार निचोरन॥
'ब्रह्म' भनै तेहि की उपमा जल के कनिका बहैं केस की छोरन।
मानहु चँद कौ चूसत नाग अमी रस च्वै चलो पूँछ की ओरन॥

[१४९]

आजु एक ललना अन्हात मैं निहारी बाल,
पीन पयोधर बीन बानी छीन लंक है।
जमुना के जल बीच कंठ के प्रमान पैठि,
पोंछै जो लिलार लाग्यो मृग-मद अंक है॥
मुख अरु पानि को परस भयो 'रघुनाथ',
ऐसी प्रीति लसी सोभा परम असंक है।
वारिज को नातो मानि धौल करिबे को मानो,
कौल कलानिधि में को धोवत कलंक है॥

[१५०]

जाहिरै जागति सी जमुना जब बूड़ै बहै उमहै वह बेनी।
त्यों 'पदमाकर' हीरा के हारनि गँग तरँगनि सी सुख देनी॥
पाँयन के रँग सों रंगि जाति-सी भांतिहि भांति सरस्वति सेनी।
पैरें जहांई जहाँ वह बाल तहाँ तहाँ ताल में होत त्रिवेनी॥

[१५१]

को रति है अरु कौन रमा उमा छूटीं लटैं निचुरैं गुँथी मोती।
हाय अनूठे उरोज उठे भये, सैन तुठे भये और है कोती॥
त्यों 'कवि ग्वाल' नदी तट न्हाय खड़ी लड़ी रूप की सुंदर जोती।
मोरति अंग मरोरति भौंहनि चोरति चित्त निचोरति धोती॥

[१५२]

पीत रँग सारी गोरे अंग मिलि गई 'देव',
श्रीफल उरोज आभा आभासै अधिक-सी।
छूटी अलकनि छलकनि जल बूंदनि की,
बिना बेंदी—बंदन बदन—सोभा बिकसी॥
तजि-तजि कुंज पुंज ऊपर मधुप गुंज,
गुंजरत मंजु रव बोलै बाल पिक-सी।
नीबी उकसाइ नेकु नयन हँसाय हँसि,
ससिमुखी सकुचि सरोवर तैं निकसी॥

[१५३]

कुंदन से अँग नव यौवन सुरँग उतै,
उरज उतँग धन्य प्यारो परसत है।
सोहत किनारी वारी तन सुख सारी 'देव',
सीस सीसफूल अधखुल्यो दरसत है॥

बेंदिया जड़ाऊ बड़े मोतिन सों नीकी नथ,
हँसति तन्योननितें रूप सरसत है।
गारी गज गौनी लोनी नवल दुलहिया के,
भाग भरे मुख पै सोहाग बरसत है॥

[१५४]

मौलिसरी रास ते न मालती हुलास तें,
गुलाब बरदास तें न मानखस खास तें।
बेला के बिलास तें जुही के परगास तें,
निवारीहू की आसतें न सेवती उजास तें॥
चंपक विकास तें न केवरे निकास तें,
न सेवक प्रकास तें मलै के उजुवास तें।
लाड़िली के हास तें सो अंग की सुवास तें,
सुह्वै रह्यो सुवासित अवास आसपास तें॥

[१५५]

धनि हैंगे वे तात औ मात जयो जिन, देह धरी सो धरी धनि हैं।
धनि हैं दृग जेऊ तुम्हें दरसैं परसैं कर तेऊ बड़े धनि हैं॥
धनि हैं जेहि ठाकुर ग्राम बसो जहँ डोली लली सो गली धनि है।
धनि हैं धनि हैं धनि तेरो हितू जेहि की तू धनी सो धनी धनि हैं॥

[१५६]

भौंर तजि कचन कहत मखतूल वै,
कपोलन को कम्बुकै मधूकी भाँति भाँति है।
विद्रुम विहाय सुधा अधरन भाषैं,
कँज बरनैं कुच निं करैं श्रीफल की ख्याति है॥
कंचन निदरि गनै चंपक के पात गात,
कान्ह मति फिरि गई काल्हि ही की राति है।
'दास' यों सहेली सों सहेली बतराति,
सुनि-सुनि उत लाजन नवेली गड़ी जाति है॥

[१५७]

काल्हि की राति अघाने नहीं दिन ही में लला पुनि घात लगाई।
प्यास लगी कोउ पानी दै जाउ यों भीतर बैठि कै बैन सुनाई॥
जेठी पठाई गई दुलही, हँसि हेरि हरै 'मतिराम' बुलाई।
कान्ह के बोल पै कान न दीन्हो सुगेह की देहरी पै धरि आई॥

[१५८]

पाँव धरै दुलही जिहि ठौर रहे 'मतिराम' तहाँ दृग दीने।
छोड़ि सखान के साथ को खेलिवो बैठि रहे घरही रस भीने॥
साँझहिं तै ललकैं मन-ही-मन लालन यों रस के बस लीने।
लौनी सलौनी के अंगनि नाह सु गौने की चूनरी टोने से कीने॥

[१५९]

सुधाधर-से मुख वानि सुधा मुसकानि सुधा दरसै रद पाँति।
प्रवाल-से पानि मृनाल भुजा कहि 'देव' लता तन कोमल कान्ति॥
नदी त्रिवली कदली युग जानु सरोज-से नैन रहे रस माँति।
छिनौ भरि ऐसी तिया बिछुरे छतिया सियराय कहौ केहि भाँति॥

[१६०]

अँगने आओब जब रसिया,
पलटि चलब हम ईषत हँसिया।
रस नागरि रमनी कत,
कत जुगुति मनहिं अनुमानी॥
आवेशे आँचरे पिया धरबे,
जाओब हम जतन बहु करबे।
कँचुया धरब जब हठिया,
करे कर बाँधव कुटिल आध दिठिया॥
रभस माँगब पिय जबहीं,
मुख मोड़ि बिहँसि बोलब नहिं-नहिं।
सहजहि सुपुरुख भमरा,
मुख कमल मधु पीयब हमरा॥
नैखने हरब मोर गेयाने,
'विद्यापति' कह धनि तय धेयाने॥

[१६१]

तारि डारै हार कुच बोरि डारै सुख सिन्धु,
छोरि घुंघरोयौं चीर कबधौं हरत पी।
रद छाप अधर कपोलनि मैं नैन पीक,
उरज करज लीक कबधौं करत पी॥
तेरी अनि जानती जो 'तोष' तो बरजती मैं,
जानती हौ मेरो कही प्राण में धरत पी।
तबलौं तौ तन की रहति सुधि संग मोहि,
जबलौं प्रयंक मैं न अंक मैं भरत पी॥

[१६२]

जासो हसि एक बार एक बात कहिबे को,
हौंसन मरति कहौ कोन ब्रज बाल है।
सूधेई सुभाइनि सुदास करि राख्यो हरि,
होत न उदास क्योंहू एतौ भाग भाल है॥
'देव' अब आस पूँजी तू जी मैं अदूजी बसो,
दूजी तिय भूलैं हूँ न देखत गोपाल है।
पाय परि राखी अंखियानि भरि राखी,
हियरा में धरि राखी करि राखी कंठ माल है

[१६३]

सोभित स्वकीया गन गुन गिनती में तहाँ,
तेरे नाम ही की एक रेखा रेखियतु है।
कहैं 'पदमाकर' पगी यों पति प्रेम ही में,
पदुमिनि तोसी तिया तूही पेखियतु है॥
सुबरन रूप जैसो तैसो सील सौरभ है,
याही ते तिहारो तन धन्य लेखियतु है।
सोने में सुगंध न सुगंध में सुन्योरी सोनो,
सोनो औ सुगंध तो मैं दोनों देखियतु है॥

[१६४]

सील भरी बोलती सुसील बानी सबही सों,
देव गुरु जननि की लाज सों लची रही।
कोमल कपोल पर दिखै हरदी सी,
दुति चुनी-सी सकुच मुसुकानि में मची रही॥
लालन की लाली अँखियाँनि में दिखाई देत,
अंतर निरंतर ही प्रेम सौं पची रही।
कुँवरि किसोरि 'सुख मोरी करै सखियन,
चोरा चोरी चित गति गोरी-सी रची रही॥

[१६५]

दीन्हों दई रूप कैधौं याही को सकेलि सब,
जाकी वेस बातैं बस बालमै करैया सी।
आँखैं अलबेली की अनोखी अरविंद,
ऐसी बान ऐसी लेखी परि प्रानन हरैया सी॥
'सुकबि निहाल' कहै मेनका सुकेसी,
ऐसी केतिकौ खड़ी हैं जाके पायन परैया सी।
महल महान पर बैठी चारु चन्द्रमा सी,
वाके आस-पास और तरुनी तरैया सी॥

[१६६]

आयो रितुराज आज देखत बनै री आली,
छायो महामोद सों प्रमोद बन भूमि-भूमि।
नाचत मयूर मद उन्मदि मयूरनि को,
मधुर मनोज सुख चाखै मुखि चूमि-चूमि॥
पंडित प्रवीन मधु लम्पट मधुप पुंज,
कुंजन में मंजरी को लेत रस घूमि घूमि।
ठेही पौन प्रेरित नवेली सी द्रुमन वेली,
फैली फूल डोलनि में झूलि रही झूमि-झूमि॥

[१६७]

फहरैं फुहारे नीर नहरैं नदी-सी बहै,
छहरैं छबिन छाम छीटिन की छाँटी है।
कहै 'पदमाकर' त्यों जेठ की जलाकै तहाँ,
पावैं क्यों प्रवेस बेस बेलिन की बाटी है॥
बारहू दरीन बीच चारहू तरफ तैसे,
बरफ बिछाई तापै सीतल सुपाटी है।
गजक अंगूर की अंगूर से उचोहैं कुच,
आसव अंगूर को अंगूर ही की टाटी है॥

[१६८]

नित चातक चायसों बोल्यो करै मुरवान को सोर सुहावन है।
चमकै चपला चहुँ चाव चढ़ी घन घोर घटा बरसावन है।
पलकौ पपिहा न रहै चुप ह्वै अरु पौन चहूँ दिसि आवन है।
मिलि प्यारी पिया लपटैं छतियाँ सुख को सरसावन सावन है॥

[१६९]

सुचि सीतल मंद सुगंध समीर सदा दसहूँ दिसि डोलत हैं।
कल कोकिल चातक मोद भरे अनुराग हिये हठि खोलत हैं।
लपटी लतिका तरुजालन सों तिनपै खग पुंज कलोलत हैं।
चहुँ ओर सों वानिक सो वनिकै वन में वरही बहु बोलत हैं।

[१७०]

भौंरन को गूंजिबो बिहार बन कुंजन में,
मंजुल मरालन को गावनो लगत है।
कहै 'पदमाकर' गुमानहू में मानहू में,
प्रानहुँ ते प्यारो मन भावनो लगत है॥
मोरन को सोर घन घोर चहुँ ओरन सु,
डोरन को वृंद छबि छावनो लगत है।
नेह सरसावन में मेह बरसावन में,
सावन में झूलिबो सुहावनो लगत है॥

[१७१]

दोऊ रुख मूल झूलि झूलि मखतूल,
झूला लेत सुखमूल करि तोष भरि बरसात।
झूमि झूमि अलक कपोलन पै छहरात,
फहरात अंचल उरोजहु उघरि जात॥
रहो-रहो नाही-नाही अब ना झुलावो लाल,
बाबा की सौं मेरी ये जुगल जानु थहरात।
ज्यों ही ज्यों मचत त्यों-त्यों चलत लचीलों लंक,
संकित मयङ्क मुखी अंक में लपटि जात॥

[१७२]

सहर-सहर सोंधो सीतल समीर डोलै,
घहर घहर घन घेरि कै घहरिया।
झहर-झहर झुकि झीनी झरि लायो "देव",
छहर छहर छोटी बूँदनि छहरिया॥
हहर हहर हँसि हँसि कै हिंडोरे चढ़ी,
थहर थहर तनु कोमल थहरिया।
फहर फहर होत पीतम का पीत पट,
लहर-लहर होत प्यारी को लहरिया॥

[१७३]

आजु कुंज मंदिर अनंद भरि,
बैठे स्याम स्यामा संग रङ्गन उमङ्ग अनुरागे हैं।
घन घहरात वरसात होत जात ज्यों-ज्यों,
त्योंहीं त्यों अधिक दोऊ प्रेम पुंज पागे हैं॥
'हरिचंद' अलकैं कपोल पै सिमिट रहीं,
वारि बुंद चुवत अतिहि नीक लागे हैं।
भीजि-भीजि लपटि-लपटि सतराइ दोऊ,
नील पीत मिलि भये एकै रङ्ग वागे हैं॥

[१७४]

जुगनू इतै है उतै जोति है जवाहिर की,
　　झिल्ली झनकार इतै उतै घूंघरू लरैं।
कहै 'कवि तोष' उतै चाप इतै बंक भौंहें,
　　उतै बकपाँति इतै मोती माल ही गरैं॥
धुनि सुनि उतै सिखी नाचैं इतै नाचैं सखी,
　　पी करै पपीहा उतै इतै प्यारी सी करैं।
होड़सी परी है मानो घन घनस्यामजू सों,
　　दामिनी को कामिनी को दाऊ अंक में भरैं॥

[१७५]

आस पास पुहिमि प्रकास के पगार सूझै,
　　बन न अगार डीठि गली औ निवर तैं।
पारावार पारद अपार दसौं दिसि बूड़ी,
　　चंड ब्रहमंड उतरात विधुवर तैं॥
सरद जोन्हाई जन्हु जाई धार साहस,
　　सुधाई सोभा सिंधु नभ सुभ्र गिरवर तैं।
उमड़ो परत जोति मंडल अखंड सुधा,
　　मंडल मही मैं विधु मंडल विवर तैं॥

[१७६]

जोतिन के जूहनि दुरासद दुरूहनि,
प्रकास के समूहनि उजासनि के आकरनि।
फटिक अटूटनि महारजत कूटनि,
मुकुत मनि जूटनि समेटि रतनाकरनि॥
छूट रहीं जोन्ह जग लूटि दुति 'देव',
कमलाकरनि जूटि फूटि दीपति दिवाकरनि।
नभ सुधासिंधु गोद पूरन प्रमोद सीस,
ससुद विनोद चहु कोद कुमुदाकरनि॥

[१७७]

फटिक सिलानि सो सुधार्‌यो सुधा मन्दिर,
उदधि दधि को सो उफनाय उमगै अमंद।
बाहर तैं भीतर लौं भीति न दिखाई देत,
छीर के से फेन फैली चाँदनी फरसबन्द॥
तारा सी तरुनि तामें "देव" जगमग होत,
मोतिन की ज्योति मिल्यौ मल्लिका कौ मकरन्द।
आरसी से अम्बर मैं आभा सी उजारी लसी,
प्यारी राधिका कौ प्रतिबिम्ब सो लगत चन्द॥

[१७८]

आआ ओट रावटी भरोखा झाँकि देखौ स्याम,
देखिबे को दाउं फिरि दूजै द्यौस नाहने।
लहलहे अंग रंगमहल के आँगन में,
ठाड़ी वह बाल लाल पगन उपाहने॥
लौने मुख लचनि नचनि नैन कोरन की,
उरति न और ठौर सुरति सराहने।
बाम कर बार हार कंचुक सँभारै,
करै कैयो फन्द कन्दुक उछारै कर दाहने॥

[१७९]

गुलगुली गिलमैं गलीचा हैं गुनीजन हैं,
चाँदनी हैं चिक हैं चिरागन की माला हैं।
कहै 'पदमाकर' त्यों गजक गिजा हैं सजी,
सेज है सुराही है सुरा है और प्याला है॥
सिसिर के पाला को न व्यापत कसाला तिन्है,
जिनके अधीन एते उदित मसाला हैं।
तान तुक ताला हैं विनोद के रसाला हैं सुबाला हैं,
दुसाला हैं बिसाला चित्र-साला है॥

[१८०]

झर झर झाँपै बड़े दर दर ढाँपै नापै,
तऊ काँपै थर थर बाजत बतीसी जाय।
फेरि पसमीनन के चौहरे गलीचन पै,
मखमली सौरि श्राछी सोऊ सरदी सी जाय॥
'ग्वाल कवि' कहै मृग-मद के धुकाये धूम,
ओढ़ि-ओढ़ि छार भार आगहू छपी सी जाय।
छाकै सुरा सीसा हू न सीसी पै मिटगी कभू,
जौलौं उकसी-सी छाती छाती सो न मीसी जाय॥

[१८१]

आले रंग रंग के तनाले दरवाजन में,
परदे मुंदाले औ झरोखे ज्यों न आवै पौन।
चारों ओर गरम गदाले बिछवाले गाले,
छाले धूप अगर अंगीठी दहकाले भौन॥
"मंजु" कवि खाले जरा गजक चढ़ाले मद,
वीड़ियाँ चवाले भरि विविध मसाले जौन।
भुजन फंसाले तिय उर लपटा ले अरे,
टुचीक दुसाले में कसाले तू मिटाले क्यौंन॥

[१८२]

रूपे के महल धूपे अगर उदार द्वार,
झँझरी झरोखा मूँदे चारु चिकराती मैं।
ऊध अध मूल तूल पटनि लपेटे मूल,
पटल सुगंध सेज सुखद सोहाती मैं॥
सिसिर के सीत प्रिया पीतम सनेह दिन,
छिन सो बिहात 'देव' राति नियराती मैं।
केसरि कुरंगसार अंग मैं लिपत दोऊ,
दोऊ मैं दिपत औ छिपत जात छाती मैं॥

[१८३]

दावे चारों कोर राजैं नूपुर निसान बाजैं,
छाजैं छबि कर कुच भट भिरिबो करैं।
सिंहासन सेज सोहैं सीस सीसफूल छत्र,
अलक अनोखे चारु चौर ढरिबो करैं॥
मैन मंत्री मंत्र देत भायन बढ़त भूरि,
बंदीजन भूषण बिरद ररिबो करैं।
हिम की हिमाई सुखदाई सी गुबिंद,
दोऊ एक ही रजाई में रजाई करिबो करैं॥

[१८४]

सोहत हैं सुख सेज दोऊ, सुषमा से भरे सुख के सुखदायन।
त्यों 'नंदरामजू' अंक भरै, परयंक परै चित चौगुने चायन॥
चूमत हैं कलकंज कपोल रचैं रस ख्यालहूँ सील सुभायन।
साँवरी राधा गुमान करै तब गोरे गुविन्द परैं लगि पायन॥

[१८५]

बातैं स्यामा स्याम की न बैसी अब आली, स्याम,
स्यामा तकि भाजैं स्यामा स्याम सों जकी रहैं।
अब तो लखोई करै स्यामा को वदन स्याम,
स्याम के बदन लागी स्यामा की टकी रहैं॥
'दास' अब स्यामा के सुभाय मद छाके स्याम,
स्यामा स्याम सोभनि के आसव छकी रहैं।
स्यामा के विलोचन के हैं री स्याम तारे अरु,
स्यामा स्याम लोचन की लोहित लकीर हैं॥

[१८६]

'देव' मैं सीस बसायो सनेह कै भाल मृगंमद बिंदु कै नाख्यो।
कंचुकी में चुपर्यो करि चोवा लगाय लियो उर में अभिलाख्यो॥
लै मखतूल गुहे गहने रसमूरतिमंत सिंगार कै चाख्यो।
साँवरो लाल को साँवरो रूप मैं नैनन को कजरा करि राख्यो॥

[१८७]

रति रन विषै जे रहे हैं पति सनमुख,
तिन्हैं बकसीस बकसी है मैं बिहँसि कै।
करन को कङ्कन उरोजन को चन्द्रहार,
कटि को सुकिंकिनी रही है कटि लसि कै॥
'कालिदास' आनन को आदर सों दीन्हों पान,
नैनन को काजर रह्यौ है नैन बसि कै।
एरी बैरी बार ये रहे हैं पीठ पाछे यातें,
बार-बार बाँधति हौं बार बार कसि कै॥

[१८८]

आँखिन में पुतरी ह्वै रहै हियरा में हरा ह्वै सबै रस लूटैं।
अङ्गन संग बसै अङ्गराग ह्वै जीव ते जीवन मूरि न टूटैं॥
'देवजू' प्यारे के न्यारे सबै गुन मो मन मानिक तें नहीं छूटैं।
और तियान ते तौ बतियाँ करैं मा छतियाँ तें छिनौं जब छूटैं॥

[१८९]

गात तें भरत फूल पलटे दुकूल,
अनुरागे उत जागे भाग इत बड़ भाग के।
अंजन अधर उर बीच नख रेख,
लाल जावक तिलक भाल लाग्यो माथि माँग के॥

भौंहैं कल सोंहैं पल सोंहैं पगे पीक रंग,
रति जगे रति मैन सदन सुहाग के।
लालन लजात से जम्हात विहँसात,
प्रात आए आली मेरे गृह देत पेच पाग के॥

[१९०]

चन्दन फैलि पराग रह्यो, कल केसरि केसर विन्दु दियो है।
किंसुक जाल गोपाल नखच्छत स्वास समीर सिरात हियो है॥
अञ्जन रञ्जित ए अलि आनन अम्बुज को मकरन्द पियो है।
साँचि कहौ ब्रजराज! तुन्हैं रतिराज कितै रितुराज कियो है॥

[१९१]

खाये पान वीरी सी बिलोचन विराजैं आज,
अञ्जन अँजाये अधराधर अमीके हैं।
कहै "पदमाकर" गुनाकर गुविन्द देखौ,
आरसी लै अमल कपोल किन पीके हैं॥
ऐसो अवलोकिवेई लायक मुखारविन्द,
जाहि लखि चन्द अरविन्द होत फीके हैं।
प्रेमरस पागि जागि आये अनुरागि यातें,
अब हम जानी के हमारे भाग नीके हैं॥

[१९२]

जावक लिलार ओंठ अंजन की लीक सोहै,
खैये न अलीक लोक लीक न बिसारिए।
कवि 'मतिराम' छाती नख छत जगमगै,
डगमगै पग सूधे मग मैं न धारिए॥
कसकै उघारत हौ पलक पलक यातैं,
पलका पै पौढ़ि स्रम राति को निवारिए।
अटपटे बैन मुख बात न कहत बनै,
लटपटे पेंच सिर पाग के सुधारिए॥

[१९३]

काके गये वसन पलटि आये वसन,
सु मेरो कछु वस न रसन उर लागे हौ।
भौंहैं तिरछी हैं कवि 'सुंदर' सुजान सोहैं,
कछु अलसोहैं जो हैं जाके रस पागे हौ॥
परसौं मैं पाँयहुँतें परसौं मैं पाय गहि,
परसौं ये पाय निसि जाके अनुरागे हौ।
कौन वनिता के हौ जू कौन बनिता के हौ सु,
कौन वनिता के वनि ताके सँग जागे हौ॥

[१९४]

कोऊ नहीं बरजै 'मतिराम' रहौ तितही जितही मन भायो।
काहे को सौहैं हजार करौ, तुमतो कबहूँ अपराध न ठायो॥
सोवन दीजै न दीजै हमें दुख, योंही कहा रसवाद बढ़ायो।
मान रह्योई नहीं मनमोहन, मानिनी होय सो मानै मनायो॥

[१९५]

क्यों न रहौ दिनहू में वहाँ, सजिसाज जहाँ नित रैनि बितावत।
काजर सों रँगि कै अपनो मुँह, क्यों अब ताहि दिखावन आवत॥
लाज न लागति है अजहूँ, अपराध किये पर बातैं बनावत।
नागिनि अंक लगायो कहूँ, यह नागिनि अंक लग्यो है बतावत।

[१९६]

बरज्यो न मानत हौ बार-बार बरज्यो मैं,
कौन काम मेरे इत भौन मैं न आइए।
लाज को न लेस जग हँसी को न डर मन,
हँसत-हँसत आन बात न बनाइए॥
कवि 'मतिराम' नित उठि कलकानि करौ,
नित झूँठी सौहैं करो नित बिसराइए।
ताके पग लागौ निस जागि जाके उर लागे,
मेरे पग लागि उर आगि न लगाइए॥

[१९७]

को तुम हो इत आये कहाँ ? घनश्याम हों, तो कितहू बरसो।
चितचोर कहावत हैं हम तो ! तहँ जाहु जहाँ धन है सरसो ॥
'रसिकेश' नये रँगलाल भले ! कहुँ जाय लगो तिय के गर सो।
बलि ये जो लखो मनमोहन हैं ! पुनि पौरि लला पग क्यों परसो ?

[१९८]

रावरे पाँयन ओट लसै, पग गूजरी वार महावर ढारे।
सारी असावरी की झलकै, छलकै छबि घाँघरे घूम घुमारे ॥
आओ जू आओ दुराओ न मोहूँ सों, 'देवजू' चंद दुरै न अंध्यारे।
देखो हो कौन-सी छैल छिपाई तिरीछै हँसै वह पीछे निहारे ॥

[१९९]

बहु नायक हौ सब लायक हौ सब प्यारिन के रस को लहिए।
'रघुनाथ' मनैं नहिं कीजै तुम्हें जिय बात जु है सु सही कहिए ॥
यह माँगति हौं पिय प्यारे सदा सुख देखिबे ही को हमैं चहिए।
इतने के लिये इत आइए प्रात रुचै जहाँ रात तहाँ रहिए ॥

[२००]

माथे महावर पाँय को देखि महावर पाय सुढार ढुरीये।
ओंठन पै ठन वै अँखियाँ, पिय के हिय पैठन पीक धुरीये ॥
संग-ही-संग बसौ उनके, अँग अंगन 'देव' तिहोर लुरीये।
साथ में राखिए नाथ उन्हें, हम हाथ में चाहतीं चारि चुरीये ॥

[२०१]

फिरत कहाँ है बीर बावरी भई-सी,
तोहिं कौतुक दिखाऊ चलि पैंड़े कुञ्जद्वारी के।
निमिष निहारे डीठि कतहूँ न टारै मार,
नंद-के कुमार मैन सैन सुकुमारी के॥
करन पसार कर द्दगन लगावै हठि,
वस परै ग्वाल गरबीली सुकुमारी के।
आई देखि हौहूँ औ दिखाई तोहिं,
चलि लाल, चरण पै लोटैं वृषभान की कुमारी के॥

[२०२]

जैसी तेरी कटि तू तो तैसी मान करि प्यारी,
जैसी गति वैसी मति हियतें बिसारिये।
जैसी तेरी भौंह तैसे पंथ पै न दीजे पाँव,
जैसे नैन तैसिये बड़ाई उर धारिये।
जैसे तेरे ओंठ तैसे नैन कीजिये न,
जैसे कुच तैसे बैन नाहिं मुखते उचारिये।
ऐरी! पिकबैनी सुन प्यारे मनमोहन सों,
जैसी तेरी वेनी तैसी प्रीति विसतारिये॥

[२०३]

तारे भये कारे तेरे नैन रतनारे भये,
मोती भये सीरे तू न सीरी अजहूँ भई।
'छबि' कहै पतिमै चकैया मिली तू न मिली,
गैया तरु छूटी तेरी टेक ना छुटी दई॥
अरुनई नई तेरी अरुनई नई भई,
चहचही बोली आली तू न बोली ऐबई।
मंद छबि भए चंद फूले अरविंद वृंद,
गईरी विभावरी न रिस रावरी गई॥

[२०४]

मैन ऐसो मन मृदु मृदुल मृणालिका के,
सूत कैसो सुर ध्वनि मननि हरति है।
दाख्यों कैसो बीज दाँत पाँत से अरुण ओंठ,
'केशोदास' देखि दृग आनंद भरति है॥
येरी मेरी तेरी मोहिं भावत भलाई तातें,
बूझति हौं तोहिं और बूझति डरति है।
माखन-सी जीभ मुख कंज-सी कोमलता में,
काठ-सी कठेठी बात कैसे निकारति है॥

[२०५]

मेचक कवच साजि बाहन बयारि बाजि,
गाढ़े दल गाजि उठे दीरघ रदन के।
'भूषण' भनत समसेर सोई दामिनी है,
हेत नर कामिनी के मान के करन के॥
पैदर बलाके धुरवान के पताके देखि,
घेरि घेरि आव चहुँ ओर ही सदन के।
न करु निरादर पिया सों मिलु सादर,
ये आए बीर बादर बहादुर मदन के॥

[२०६]

है यह नायक दच्छिन छैल, पै तैं अनुकूल करयो चितचोर है।
है अभिमानिय आपने रूप को, दीन ह्वै तोसों रह्यो निसिभोर है॥
है रंग साँवरो गौर रंग्यो पुनि, तेरेहि प्रेम पग्यो झकझोर है।
है घनस्याम पै तेरो पपीहरा, है ब्रजचन्द पै तेरो चकोर है॥

[२०७]

बङ्क बिलोकन दीठि चलाय री, नेह लगाय कै पीठि न दीजै।
बौरी न हूजिये मान कह्यौ अब, पीतम को अपनायकै लीजै॥
मोहनी रूप की बैसहि पायकै, को नहिं जोवन के मद भीजै।
ऊजरी जो पै करी करतार तौ, गूजरी एतो गरूर न कीजै॥

[२०८]

बैठि रतिमंदिर में सुंदरि बनाए वेष,
जाके रूप सौंहैं रतिरूपहू निदरिगो ।
आयो तहाँ लाल जासों बोली नाहिं बाल नेकु,
ऐसो कछू अकस अखारो आनि अरिगो ॥
एते माँहि रूसि हनुमान मनभावन गो,
लागी पछितान प्रेमपुञ्ज यों पसरिगो ।
कानन तें पैठि हिये बस्यो हो जु मान,
सोई हाय इन आँखिन तें आँसू ह्वै निकरिगो ॥

[२०९]

प्रेम समुद्र परयो गहिरे, अभिमान के फेन रह्यो गहि रे मन ।
कोप तरंगन ते बहि रे, अकुलाय पुकारत क्यों बहिरे मन ॥
'देवजू' लाज जहाज ते कूद, भरयो मुख बूँद अजौं रहि रे मन ।
जोरत तोरत प्रीति तुही, अब तेरी अनीति तुही सहिरे मन ॥

[२१०]

पायन आनि परे तो परे रहे, केती करी मनुहारि न भेली ।
मान्यो मनायो न मैं 'मतिराम' गुमान मैं ऐसी भई अलबेली ॥
प्यारो गयो दुखमान कहूँ, अब कैसे रहूँ यहि राति अकेली ।
आप ते ल्याउ मनाय कन्हाई को मेरो न लीजियो नाम सहेली ॥

[२११]

कंचन के कलस से कलित उरोज सोहैं,
रंभ ही के खंभ जानो जंघ परकाला सी।
नाहीं की कढ़नि मुख मंत्र की पढ़नि,
मानो विमल जोन्हाई रति गनिबे की माला सी॥
कहैं कवि 'तोष' तुम्हैं ह्वै है पुन्य आला ताते,
कीजै चलि पाला जरै मैन विथा ज्वाला सी।
दीजिये बिरह-बलि कीजिये सुरति जग्य,
मान तजि, लाजवती बाला मखसाला सी॥

[२१२]

लेहु लली उठि लाई हौं लाल कौ, लोक की लाजहुँ सों लरि राखौ।
फेरि इन्हैं सपनेहु न पैयत, लै अपने उर में धरि राखौ॥
'देव' लला अबला नवला, यह चंदकला कठुला करि राखौ।
आठहुँ सिद्धि नवौ निधि लै, घर भीतर बाहर हूँ भरि राखौ॥

[२१३]

बात चलै की चली जबतें तबतें चले काम के तीर हजारन।
नींद औ भूख चली तबतें, अँसुवा चले नैननि ते सजिधारन॥
'दास' चली करतें वलया, रसना चली लंकतें लागि अबारन।
प्रान के नाथ चले अनतें, तनतें नहीं प्रान चले केहि कारन॥

[२१४]

बगियान बसंत बसेरो कियो, बसिये, तिहि त्यागि तपाइये ना।
दिन काम कुतूहल के जे बने, तिन बीच बियोग बुलाइये ना॥
घन प्रेम बढ़ायकै मीत अहो, बिथा वारि बिथा बरसाइये ना।
चितै चैत की चाँदनी चाहभरी, चरचा चलिबे की चलाइये ना॥

[२१५]

जौं हौं कहौं रहिये तो प्रभुता प्रगट होत,
चलन कहौं तौ हित हानि नाहीं सहनो।
भावै सो करहु तौ उदास भाव प्राणनाथ,
साथ लै चलहु कैसो लोक लाज वहनो॥
'केशोदास' की सों तुम सुनहु छबीले लाल,
चलेही बनत जो पै नाहीं राज रहनो।
जैसियै सिखाओ सीख तुमही सुजान प्रिय,
तुमहिं चलत मोहि जैसो कछु कहनो॥

[२१६]

सौ दिन को मारग तहाँ की विदा माँगी पिया,
प्यारो 'पदमाकर' प्रभात राति बीते पर।
सो सुनि पियारी पिय गमन बराइबे को,
आँसुन अन्हाइ बैठी आसन सुतीते पर॥

बालम विदेसै तुम जात हौ तो जाउ पर,
साँची कहि जाउ कब ऐहौ भौन रीते पर।
पहर के भीतर कै दोपहर भीतर ही,
तीसरे पहर कैधों साँझ ही बितीते पर॥

[२१७]

जात हैं तो अब जान दै री छिन में चलिबे कीं न बात चलै हैं।
ज्यों 'पदमाकर' पौन के भूँकनि कोयल कूकनि को सहिलै हैं॥
वे उलहे बन बाग बिहारि निहारि निहारि जबै अकुलै हैं।
जैहें न फेरि फिरे घर ऐहैं सुगाँव ते बाहर पाँव न दै हैं॥

[२१८]

बैठी ही सखिन संग पिय को गमन सुन्यौ,
सुख के समूह में वियोग आग भरकी।
'गङ्ग' कहै त्रिविध सुगंध लै बह्यौ समीर,
लागत ही ताके तन भई व्यथा ज्वर की॥
प्यारी को परसि पौन गयो मानसर पै सु,
लागत ही औरै गति भई मानसर की।
जलचर जरैं औ सेवार जरि छार भयो,
जल जरि गयो पङ्क सूख्यो भूमि दर की॥

[२१९]

पति प्रीति के भारन जानि उनै मतिख्वै दुख भारन साले परी।
मुख बात तें होती मलीन सदा सोई मूरति पौन के पाले परी॥
'द्विज देव' सोई करतार कछू, करतूति न रावरी आले परी।
वह नाहक जोरी गुलाब कली सी मनोज के हाथ हवाले परी॥

[२२०]

अब ह्वै है कहा अरबिंद सो आनन, इंदु के आय हवाले परयो।
'पदमाकर' भाषे न भाषे बनै, जिय ऐसो कछूक कसाले परयो॥
इक मीन बिचारो बिंध्यो बनसी,पुनि जाल के जाय दुमाले परयो।
मन तो मनमोहन साथ गयो, तन लाज मनोज के पाले परयो॥

[२२१]

मम कौन सुने यह कासों कहौं पुनि साँचिय कोउ न मानत है।
जिन्ह व्यापी नहीं या वियोग विथा सो कहा दुख को पहिचानत है॥
'रसिकेश' कहूँ बिरही जो मिलै बिरही गति सो उर आनत है।
नर नारि संयोग वियोग कहा मिलि कै बिछुरै सोई जानत है॥

[२२२]

तबतो छवि पीवत जीवत थे अब सोचन लोचन जात गरे।
हित पोष के तोष सु प्रान पले बिललात महा दुख दोष भरे॥
'घनआनंद' मीत सुजान बिना सबहीं सुख-साज समाज हरे।
तब हार पहार से लागत थे अब आनि कै बीच पहार परे॥

[२२३]

जा थर कीन्हें विहार अनेकन, ता थर काँकरी बैठि चुन्यो करैं।
जा रसना सों करी बहु बातन, ता रसना सों चरित्र गुन्यो करैं॥
'आलम' जौन से कुञ्जन में करी केलि, तहाँ अब सीस धुन्यो करैं।
नैननि में जो सदा रहते, तिनकी अब कान कहानी सुन्यो करैं॥

[२२४]

भेष भए विष भावै न भूषन, भूख न भोजन की कछु ईछी।
'देवजू' देखे करै बधु सो मधु दूध सुधा दधि माखन छीछी॥
चंदन तौ चितयो नहिं जात चुभी चित माँहि चितौनि तिरीछी।
फूल ज्यों सूल सिला सम सेज बिछौननि बीच बिछी मनौ बीछी॥

[२२५]

ए करतार बिनै सुनो दास की, लोकनि को अवतार करो जनि।
लोकनि को अवतार करौ तो मनुष्यनहूको सँवार करौ जनि॥
मानुषहू को सँवार करौ तौ तिन्है बिच प्रेम-प्रचार करौ जनि।
प्रेम-प्रचार करौ तो दयानिधि! केहू वियोग विचार करौ जनि॥

[२२६]

रैन दिन नैनन ते वहतो न नीर कहा,
करतो अनंग जो उमंग सर चाप तो।
कहै 'पदमाकर' त्यों राग वाग वन कैसो,
तैसो तन, ताय-ताय तारापति ताप तो।

कीन्हों जो वियोग तो सँयोगहू न देतो दई,
देतो जो सँयोग तो वियोग नहिं थापतो ।
होतो जो न प्रथम सँयोग सुख वैसो वह,
ऐसो अब यों न तो वियोग दुख व्यापतो ॥

[२२७]

अंग डुलै न उतंग करै, उर ध्यान धरै बिरह ज्वर बाधति ।
नासिका अग्र की ओर दिए, अधमुद्रित लोचन को रस माधति ॥
आसन बाँध उसास भरै अब राधिका 'देव' कहा अवराधति ।
भूलि गो भोग कहैं लखि लोग वियोग किधौं यह योगहिं साधति ॥

[२२८]

गंग नहीं मुकता भरी माँग है, चन्द्र नहीं यह उद्यत भाल है ।
नील नहीं मखतूल को पुञ्ज है, शेष नहीं सिर वेनी विशाल है ॥
भूति नहीं मलयागिरि है, विजया है नहीं विरहा सों विहाल है ।
ऐरे मनोज सँभारि कै मारियो, ईस नहीं यह कोमल वाल है ॥

[२२९]

लाल विना विरहाकुल वाल, वियोग की ज्वाल भईझुरि भूरी ।
पानी सों पौन सों प्रेमकहानी सों, पान ज्यों प्रानन पोपत हूरी ॥
'देवजू' आजु मिलाप की औधि, सो बीतत देखि विसेखि विसूरी ।
हाथ उठायो उड़ायवे को, उड़ि काग गरे परी चारिक चूरी ॥

[२३०]

राधिका कान्ह को ध्यान धरै, तब कान्ह ह्वै राधिका के गुन गावैं।
त्यों अँसुवा बरसै बरसाने को, पाती लिखै लिखि राधे को ध्यावै॥
राधे ह्वै जाय घरीक में 'देव' सुप्रेम की पाती लै छाती लगावै।
आपुन आपुही मैं उरझै, सुरझै, बिरुझै, समुझै समुझावै॥

[२३१]

छरी-सी छकी-सी जड़ भई सी जकी-सी,
घर हारी सी बिकी-सी सो तो सबही घरी रहै।
बोले ते न बोलै दृग खोलै नाहिं डोलै बैठि,
एक टक देखै सो खिलौना सी धरी रहै॥
'हरीचंद' औरौ घबरात समझाये हाय,
हिचकि हिचकि रोवै जीवत मरी रहै।
याद आये सखिन रोवावै दुख कहि-कहि,
तौलों सुख पावै जौलों मुरछि परी रहै॥

[२३२]

(राग धनाश्री)

नैन सलोने स्याम हरि कब आवहिंगे।
वे जा देखत राते राते फूलन फूले डार।
हरि बिन फूल झरी-सी लागत झरि-झरि परत अँगार॥
फूल बिनन ना जाऊँ सखीरी हरि बिन कैसे फूल।
सुनरी सखी मोहिं राम दुहाई लागत फूल त्रिशूल॥

जबते पनिघट जाऊँ सखीरी वा जमुना के तीर।
भरि भरि यमुना उमड़ि चलत हैं इन नैनन के नीर॥
इन नैनन के नीर सखीरी सेज भई घर नाव।
चाहत हौं ताही पै चढ़िकै हरिजी के ढिग जाँव॥
लाल पियारे प्राण हमारे रहे अधर पर आय।
'सूरदास' प्रभु कुंज बिहारी मिलत नहीं क्यों धाय॥

[२३३]

सखीरी स्याम सबै इकसार।
मीठे बचन सुहाये बोलत अन्तर जारनहार॥
भँवर कुरंग काम अस कोकिल कपटिन की चटसार।
सुनहु सखीरी दोष न काहू जो विधि लिखो लिलार॥
उमड़ी घटा नाखि आवे पावस प्रेम की प्रीति अपार।
'सूरदास' सरिता सर पोखत चातक करत पुकार॥

[२३४]

सखीरी स्याम कहा हित जानै।
कोऊ प्रीति करे कैसेहू वे अपनो गुन ठानै॥
देखो या जलधर की करनी बरसत पोपै आनै।
'सूरदास' सरवस जो दीजै कारो कृतहि न मानै॥

[२३५]

प्रीति करि काहू सुख न लह्यो।
प्रीति पतंग करी दीपक सों आपै प्रान दह्यो॥
अलि सुत प्रीति करी जल सुत सों सम्पति हाथ गह्यो।
सारंग प्रीति करी जो नाद सों सन्मुख बान सह्यो॥
हम जो प्रीति करी माधव सों चलत न कछू कह्यो।
'सूरदास' प्रभु बिन दुख दूनो नैनन नीर बह्यो॥

[२३६]

यों दुख दै ब्रजवासिनको ब्रज को तजिकै मथुरा पँह ऐहैं।
वे रस केलि बिलासिनि की बन कुञ्जनकी बतियां बिसरैहैं॥
योग सिखावन को हमको बहुऱ्यो तुमसे उठि धावन ऐहैं।
ऊधो नहीं हम जानति थी मनमोहन कूबरी हाथ बिकैहैं॥

[२३७]

जौ न जी मैं प्रेम तब कीजै ब्रत नेम,
कंज मुख भूलै तब संजम बिसेखिए।
आस नहीं पी की तब आसन ही बाँधियत,
आसन कै साँसन को मूँदि पति पेखिए॥
नख ते सिखा लौं सब स्याम मई बाम भई,
बाहिर ह्वै भीतर न दूजो 'देव' देखिए।
जोग करि मिलैं जो बियोग होय बालम जु,
ह्याँ न हरि होयँ तब ध्यान धरि देखिए॥

[२३८]

निसि दिन स्रौन सों पियूस सो पियत रहै,
छाय रह्यो नाद बाँसुरी के सुरग्राम को।
तरनि तनूजा तीर बन कुंज बीथिन में,
जहाँ-तहाँ देखति हैं रूप छबि धाम को॥
कवि 'मतिराम' होत ह्याँ तो नाहियें ते नेक,
सुख प्रेम गात को परस अभिराम को।
ऊधो तुम कहत बियोग तजि जोग करौ,
जोग तब करै जो वियोग होय स्याम को॥

[२३९]

जग सों विराग भयो घर बनि बैठ्यो बन,
तन बलहीन एक आसन परयो करै।
ऊरध उसासन सों साँस रुकि-रुकि जात,
प्रान, तन, मन, वृत्ति नेक ना गह्यो करै॥
रहै उर अंतर निरंतर पिया को ध्यान,
तन-मय होत ही समाधि-सी लग्यो करै।
'राजहंस' ऊधो! हमें जोग का सिखाओ,
ह्याँ वियोगिनी के जोग तो हमेस ही जग्यो करै॥

[२४०]

सावरो रूप रह्यो भरि नैनन, वैननि के रस सों श्रुति सानो।
गात में देखत गात तुम्हारेई, वात तुम्हारिए बात बखानो॥
ऊधो हहा हरि सों कहियो तुम हौ न इहाँ यह हौं नहिं मानो।
या तन ते बिछुरे तो कहा मन ते अनते जु बसौ तब जानो॥

[२४१]

नाहिंन रह्यो मन में ठौर।
नंद-नंदन अछत कैसे आनिए उर और?
चलत चितवत, दिवस जागत, सपन सोवत राति।
हृदय तें वह स्याम मूरति छन न इत उत जाति॥
कहत कथा अनेक ऊधो लोक लाभ दिखाय।
कहा करौं तन प्रेम पूरन घट न सिंधु समाय?
स्याम गात, सरोज आनन, ललित अति मृदु हास।
'सूर' ऐसे रूप कारन मरत लोचन प्यास॥

[२४२]

ऊधो मन माने की बात।
दाख छोहरा छाँड़ि अमृत फल विष कीरा विष खात॥
जो चकोर को देइ कपूर कोउ तजि अँगार न अघात।
मधुप करत घर कोरि काठ में वँधत कमल के पात॥
ज्यों पतंग हित जानि आपनो दीपक सों लपटात।
'सूरदास' जाको मन जासों सोई ताहि सुहात॥

[२४३]

अंग को पतंग दहै दीप के समीप जाय,
बारिज बँधाय भृंग दरद न मानई ।
सुनिकै बिपंची धुनि बिशिख कुरंग सहैं,
सती पति संग देह दुख को न आनई ॥
मनि हीन छीन फनि बारि सों बिहीन मीन,
होइकै मलीन मति दीनता बितानई ।
चातक, मयूर, मन, मेह के सनेह ऊधो !
जाहि लगै नेह सोई याहि भले जानई ॥

[२४४]

जैसे कान्ह जान तैसे उद्धव सुजान आए,
हैं तो मेहमान पर प्रान हैं निकारे लेत ।
लाख बेर अंजन अँजाए इन हाथन सों,
तिनको निरंजन कहत झूठ धारे लेत ॥
'ग्वाल कवि' हाल ही तमालन में बालन में,
ख्यालन में खेले हैं किलोल किलकारे लेत ।
ह्यौं न परचेरी जोग चेरी संग पर चेरी,
भेज परचेरी जोग परचे हमारे लेत ॥

[२४५]

पून्यो प्रकास उकासि कै सारदी, आसहू पास बसाय अमावस।
दै गए चिंतन सोंच विचार, सु लैगए नींद छुधा बल बावस॥
हैं उत 'देव' बसंत सदा, इत हेउंत है हिय कंप महा वस।
लै सिसिरौ निसि दै दिन ग्रीषम, आँखिन राखि गए ऋतु पावस॥

[२४६]

फूलन दे अब टेसू कदंबन, अंबन बौरन छावन दे री।
री मधुमत्त मधूपन पुंजन, कुंजन सोर मचावन दे री॥
क्यों सहि है सुकुमारि किसोर, अरी कल कोकिल गावन दे री।
आवत ही बनि है घर कंतहि, बीर बसंतहि आवन दे री॥

[२४७]

भ्रमि भूले मलिंदन देखि निते, तन भूलि रहै किन भामिनियाँ।
'द्विज देवजू' डोली लतान चितै, हिय धीर धरैं किमि कामिनियाँ॥
हरि हाय बिदेस में जाय वसे, तजि ऐसे समै गज-गामिनियाँ।
मन बौरे न क्यों अब तौ बन में, बहु बौरीं बिसासिन आमिनियाँ॥

[२४८]

मदमाती रसाल की डारन पै चढ़ि, ऊँचे से बोल उचारती हैं।
कुल-कानि की कान करै न कछू, मन हाथ पराए ही पारती हैं॥
कोऊ !कैसी करै 'द्विज' तूही कहै, नहीं नेकौ दया उर धारती हैं।
अरी क्वैलिया कूकि करेजन की, किरचैं-किरचैं किए डारती हैं॥

[२४६]

संजोगिन की तू हरै उर पीर, वियोगिन के सु धरै उर पीर।
कलीन खिलाय करै मधुपान, गलीन भरै मधुपान की भीर॥
नचै मिलि बेलि बधूनि, अचै रसु 'देव' नचावत आधि अधीर।
तिहूँ गुन देखिये दोष भरे, अरे! सीतल मंद सुगंध समीर॥

[२५०]

कंत बिन बासर बसंत लागे अंतक से,
तीर ऐसे त्रिविध समीर लागे लहकन।
सान धरे सार से चँदन घनसार लागे,
खेद लागे खेर मृगमेद लागे महकन॥
फाँसी-से फुलेल लागे गाँसी से गुलाब अरु,
गाज अरगजा लागे चोवा लागे चहकन।
अंग-अंग आगि ऐसे केसरि के नीर लागे,
चीर लागे जरन अबीर लागे दहकन॥

[२५१]

छूटि गए आभरन असन बसन सब,
पीरे रंग केरो परिधान पहिरायगो।
नेह हीन रूखे केस करिगो जटान सम,
'राजहंस' अँखियान नला सी चढ़ायगो॥

धरनि की धूरि कै गया भभूति ताके हित,
एक निज नाम ही की रटनि रटायगो।
सरस बसंत माँहि जाय परदेस पिय,
बनिता वियोगिनीहिं जोगिनी बनायगो॥

[२५२]

पात बिन कीन्हें ऐसी भाँति गन बेलिन के,
परत न चीन्हें जे वे लरजत लुंज हैं।
कहै 'पदमाकर' बिसासी या बसंत के सु,
ऐसे उतपात गात गोपिन के मुंज हैं॥
ऊधो यह सूधो-सो संदेसो कहि दीजो भले,
हरि सों हमारे ह्याँ न फूले बन कुंज हैं।
किंसुक, गुलाब, कचनार औ अनारन की,
डारन पै डोलत अँगारन के पुंज हैं॥

[२५३]

चंदन के चहला में परी, परी पंकज की पँखुरी नरमी मैं।
धाय धसी खसखानन हाय, निकुंजन पुंज भिरी भरमी मैं॥
त्यों 'कवि दत्त' उपाय अनेक किए, सिगरी सहि वेसरमी मैं।
सीतल कौन करै छतियाँ, विन प्रीतम ग्रीषम की गरमी मैं॥

[२५४]

प्रबल प्रचंड चंडकर की किरन देखौ,

बैहर उतंड नदखंड धुमिलति है।

औटि कै कराही रतनाकर को तेल जैसो,

'नैन कवि' जल की लहर उछलति है।

ग्रीषम की कठिन कराल ज्वाल जागी यह,

काल व्याल मुखहू की देह पिघलति है।

लूका भयो आसमान भूधर भभूका भयो,

भभकि भभकि भूमि दावा उगिलति है॥

[२५५]

थाकी गति अंगन की मति परि गई मंद,

सूखि झाँझरी सी ह्वै कै देह लागी पियरान।

बावरी-सी बुद्धि भई हँसी काहू छीन लई,

सुख के समाज जित तित लागे दूर जान।

'हरीचंद' रावरे बिरह जग दुख भयो,

भयो कछु और होनहार लागे दिखरान।

नैन कुम्हिलान लागे बैन हू अथान लागे,

आओ प्राननाथ अब प्रान लागे मुरझान॥

[२५६]

छैहै बक-मंडली उमंडि नभ-मंडल में,
जुगनू घुमंड़ि ब्रजनारिन जरैहैं री।
दादुर मयूर झीनें झींगुर मचैहैं सोर,
दौरि-दौरि दामिनी दिसान दुख दैहैं री॥
'सुकवि गुलाब' ह्वै हैं किरचै करेजन की,
चौंकि-चौंकि चोपन सों चातक चिचैहैं री।
हंसन सौं हंस उड़ि जैहैं ऋतु पावस में,
ऐहैं घनश्याम घनश्याम जो न ऐहैं री॥

[२५७]

उमड़ि घुमड़ि घन आवत अटान ओर,
छनधन, ज्योति छटा, छटकि छटकि जात।
सोर करैं चातक चकोर पिक चहुँ ओर,
मोर ग्रीव मोरि-मोरि मटकि भटकि जात॥
सावन लौं आवन सुनो है घनश्यामजू को,
आँगन लौं आय पायँ पटकि-पटकि जाति।
हिये विरहानल की तपनि अपार उर,
हार गजमोतिन के चटकि-चटकि जात॥

[२५८]

दूरि यदुराई 'सेनापति' सुखदाई देखो,
आई ऋतु पावस न पाई प्रेम-पतियाँ।
धीर जलधर की सुनत धीर भरकी सो,
दरकी सोहागिनि की छोह भरी छतियाँ॥
आई सुधि बरकी हिये में प्रीति खरकी,
सुमिरि प्रान-प्यारी वह प्रीतम की बतियाँ।
भूली औध आवन की लाल मनभावन की,
डग गई बावन की सावन की रतियाँ॥

[२५९]

सावन सुहावन ह्याँ लागत भयावन सों,
आवन अवधि जब सोचैं गजगामिनी।
आइहैं कबहुँ बलबीर ह्याँ कि नाहीं ऊधो,
कैसे धीर धरैं ये अधीर ब्रजकामिनी॥
जहाँ तहाँ जींगन की ज्योति जगै ज्वाल जैसी,
जम की जमाति-सी जनाति जाति जामिनी।
जारे हैं पपीहरा पुकारै पीउ पीउ टेरि,
घेरि मारै बादर दरेरि मारै दामिनी॥

[२६०]

जल भरे भूमैं मनो भूमैं परसत आनि,
दसहू दिसानि घूमैं दामिनी लए-लए।
धूरि धार धूमरे-से धूम से धुधारे कारे,
धुर वान धारे धावैं छबि सों छए-छए॥
'श्रीपति सुकवि' कहै घेरि-घेरि घहराहिं,
तकत अकत तन तापतैं तए-तए।
लाल बिनु कैसे लाज चादर रहैगी आज,
कादर करत मोहिं बादर नए-नए॥

[२६१]

चंचला चमाकैं चहुँ ओरन तें चाह भरी,
चरजि गई ती फेरि चरजन लागी री।
कहै 'पद्माकर' लवंगन की लोनी लता,
लरजि गई ती फेरि लरजन लागी री॥
कैसे धरों धीर वीर त्रिविध समीरै तन,
तरजि गई ती फेरि तरजन लागी री।
घुमड़ि घमंड घटा घन की घनेरी अवै,
गरजि गई ती फेरि गरजन लागी री॥

[२६२]

जौ लौं उतै जुगनू दरसैं, तनु ताप इतै तव लौं दरसै लगीं ।
जौ लौं समीर उतै सरसैं, 'नंदराम' उसास इतै उरसै लगीं ॥
जौ लौं जवास झरी झरसै उत, तौ लौं इतै छतियाँ झरसै लगीं ।
जौ लौं घनेरी घटा बरसै उत, तौलौं इतै अँखियाँ बरसै लगीं ॥

[२६३]

बरसत मेह नेह सरसत अंग-अंग,
झरसत देह जैसे जरत जवासो है ।
कहै 'पदमाकर' कलिंदी के कदंबन पै,
मधुपन कीन्ह्यो आय महत मवासो है ॥
ऊधो यह ऊधम जताय दीजो मोहन सों,
ब्रज में सुवासो भयो अगिनि अवासो है ।
पातकी पपीहा जलपान को न प्यासो,
काहू व्यथित वियोगिनी के प्रानन को प्यासो है ।

[२६४]

गरजैं न मेघ तोम तरजैं न छूटि छटा,
लरजैं न लौंग लता दादुर दरारैं ना ।
बोलैं न कलापी ये कदंबन की डारन पै,
कूकि-कूकि कोकिला कुठारन सों मारैं ना ॥

कहैं 'नंदराम' मेरी कही मानु मेरी भटू,
बंद करु भौंरन सो झिल्ली झनकारैं ना।
प्रानन को प्यारो परदेस में परोहै पीव,
पावस में पपिहा पपीहरा पुकारै ना॥

[२६५]

आवत चली ही यह विषम बयारि पेखि,
दबे-दबे पायन किवारन लरजि दे।
क्वैलिया कलंकिनी को देरी समुझाय,
मधुमाती मधुपालिन कुचालिन तरजि दे॥
आज ब्रजरानी के वियोग को दिवस तातें,
हरे-हरे कीर बकवारिन हरजि दे।
पी पी के पुकारिवे की खोलैं ज्यौं न जीहन,
त्यौं बावरी पपीहन के जूहन बरजि दे।

[२६६]

लखे सुखदान पयान ते जानि मयूरन देत भगाइ-भगाइ।
मने कै दियो पियरे पहराव को गाँव में प्यादे लगाइ-लगाइ॥
भुलावति याके हिये तें हरीहिं कथानि में 'दास' पगाइ-पगाइ।
कहा कहिये पिय बोलि पपीहा व्यथा जिय देत जगाइ-जगाइ॥

[२६७]

कैधों वहि देस घन घुमड़ि न बरसत,
कैधों मकरन्द नदी नदपथ भरिगे ।
कैधों पिक चातक चकित चक्रवाक वाक,
मत्त भए दादुर मधुप मोर मरिगे ।
मेरे मन आवत न आली प्यारे आवत हैं,
कामांकुर निकर मही ते धौं निकरिगे ।
कैधों पंच-सर हर फेरि कै भसम कीन्ह्यो,
कैधों पंच-सर जू के पाँचौ सर सरिगे ॥

[२६८]

फूले आस पास कास विमल विकास बाँस,
रही ना निसानी कहूँ मही में गरद की ।
राजत कमल दल ऊपर मधुप मैन,
छाप-सी दिखाई छबि बिरह फरद की ॥
'श्रीपति' रसिक लाल आली बनमाली बिनु,
कछु ना जुगुति मेरे जीय के दरद की ।
हरद समान तन भयो है जरद अब,
करद-सी लागति है चाँदनी सरद की ॥

[२६९]

ऐरे मतिमंद चंद ! धिक है अनंद तेरो,
जो पै बिरहिनि जरि जात तेरे ताप ते।
तू तो दोषाकर दूजे धरे हैं कलंक उर,
तीसरे कपाली संग देखो सिर छाप ते॥
कहै 'मतिराम' हाल जाहिर जहान तेरो,
बारुनी के बासी भासी रवि के प्रताप ते।
बाँध्या गयो मथ्यो गयो पियो गयो खारो भयो,
बापुरो समुद्र तो कुपूत ही के पाप ते॥

[२७०]

नवल वयसवारी ससि-बदनीहिं,
भौन माहिं तजि जब ते गयो है परदेस पति।
तब ते छरी-सी वह 'राजहंस' सूखि-सूखि,
पातरी परत जात बिसराय धृति मति॥
ठंढ ऐसी कठिन है जामें जमि जात जल,
जूड़ी-सी चढ़त देह पटन दुरी रहति।
एते हू पै अधरात माहिं है उघारि यह,
बिजन डुलाय परयंक परी तरफति॥

[२७१]

बालम बिरह जिन जान्यो न जनम भरि,
बरि बरि उठै ज्यों ज्यों बरसै बरफराति ।
बिजन डुलावत सखी जन त्यों सीत हू मैं,
सौति के सराप तन तापन तरफराति ॥
'देव' कहै साँसन ही अँसुवा सुखात मुख,
निकसै न बात ऐसी सिसकी सरफराति ।
लौटि लौटि परत करौट खाट पाटी लै लै,
सूखे जल सफरी ज्यों सेज पै फरफराति ॥

[२७२]

फूल से फैलि परै सब अंग, दुकूलन में दुति दौरि दुरी है ।
आँसुन के जल पूर मैं पैरति, साँसन सों सनि लाज लुरी है ॥
'देवजू' देखिए दौरि दसा, ब्रज पौरि बिथा की कथा बिथुरी है ।
हेम की बेल भई हिम रासि घरीक मैं घाम सों जाति घुरी है ॥

[२७३]

ये हो नंदलाल ऐसी व्याकुल परी है बाल,
हालही चलौ तो चलौ जोरी जुरि जायगी ।
कहै 'पदमाकर' नहीं तो ये झकोरे लगै,
और लौं अचाका बिन घोरें घुरि जायगी ॥

सीरे उपचारन घनेरे घनसारन को,
देखत ही देखो दामिनी लौं दुरि जायगी।
तौही लग चैन जौलौं चेती है न चंदमुखी,
चेतैगी कहूँ तो चाँदनी में चुरि जायगी ॥

[२७४]

विरह तिहारे लाल ! विकल भई है बाल,
नीद, भूख, प्यास, सिगरी विसारियतु है।
चोरी कैसी बात चंद्रमा हू ते चुराइयत,
बसननि तानि कै बयारि वारियतु है॥
कहै 'मतिराम' कलाधर कैसी कला छीन,
जीवन विहीन मीन-सी निहारियतु है।
बार बार सुकुमार फूलन की मार ऐसी,
मारके मरोरनि मरोरि मारियतु है॥

[२७५]

जबते वियोग भयो बाल को तिहारो लाल,
तबते नयन ताके नेकु चैन पावैं ना।
रहत बिहाल लाल लाल से अधीर अति,
कानन लौं आवैं जायँ अंगन थिरावैं ना॥

यदपि अकेला एक सूधो सो कुरंग बैठ्यो,
तदपि दुजेस बढ़ि घटि कल पावैं ना।
ताके मुख पै तो तरफत है कुरंग जुग,
देखौ चलि कहूँ छाती छेद करि जावैं ना॥

[२७६]

बरुनी बघंबर मैं गूदरी पलक दोऊ,
कोए राते बसन भगोहें भेष रखियाँ।
बूड़ी जल ही मैं दिन-जामिनि हूँ जागैं भौहैं,
धूम सिर छायो बिरहानल बिलखियाँ॥
अँसुआँ फटिक-माल लाल डोरे सेल्ही पैन्हि,
भई हैं अकेली तजि चेली संग सखियाँ।
दीजिए दरस 'देव' कीजिए संजोगिनि ये
जोगिनि ह्वै बैठी हैं बियोगिनि की अँखियाँ॥

[२७७]

दूर ही ते देखति दसा मैं वा वियोगिनि की,
आई दौरि भाजि ह्याँ न लाज मढ़ि आवैगी।
कहै 'पदमाकर' सुनौ हो घनस्याम वाहि,
चेतत कहूँ जो एक आह कढ़ि आवैगी॥

सर-सरितान को न सूखत लगैगी वेर,
एती कछू जुलसिन ज्वाला बढ़ि आवैगी।
वाकी विरहागि की कहौं मैं कहा बात,
मेरे गातहिं छुवौ तो तुम्हें ताप चढ़ि आवैगी॥

[२७८]

'शंकर' नदी-नद-नदीसन के नीरन की,
भाफ बनि अंबर ते ऊँची चढ़ जायगी।
दोनों ध्रुव छोरन लौं पल में पिघल कर,
घूम-घूम धरनी धुरी-सी बढ़ जायगी॥
झारेंगे अँगार ये तरनि तारे तारा-पति,
जारेंगे खमंडल में आग मढ़ जायगी।
काहू विधि विधि की बनावट बचैगी नाहिं,
जो पै वा वियोगिनी की आह कढ़ जायगी॥

[२७९]

गोपिन के अँसुवान के नीर, पनारे वहे वहिकै भए नारे।
नारे भए ते भई नदियाँ, नदियाँ नद ह्वै गए काटि कगारे॥
वेगि चलौ तो चलो ब्रजको, 'कवि-तोष' कहै ब्रजराज दुलारे।
वे नद चाहत सिंधु भए अब, सिंधु ते ह्वै हैं जलाजल खारे॥

[२८०]

सोवत आजु सखी सपने 'द्विजदेव' सु आनि मिले बनमाली ।
जौलौं उठी मिलिबे कहँ धाय, सु हाय भुजान भुजान पै डाली ॥
बोलि उठे ये पपीगन तौं लागि, पीव कहाँ कहँ कूर कुचाली ।
संपति-सी सपने की भई, मिलिबो ब्रजराज को आज को आली ॥

[२८१]

आवत मैं सपने हरि को लखि, नैसुक बाट संकोचन छोड़ी ।
आगे ह्वै आड़े भए 'मतिराम' महूँ चितयों चित लालच ओड़ी ॥
होठन को रसलेन को आलि री, मेरी गही कर काँपत ठोड़ी ।
और भई न सखी कछु बात, गई इतने ही में नींद निगोड़ी ॥

[२८२]

पौढ़ी हुती पलंगा पर मैं निसि ज्ञानरु ध्यान पिया मन लाए ।
लागि गई पलकैं पलसों पल लागत ही पल में पिय आए ॥
ज्योंही उठी उनके मिलबे कहँ जागि परी पिय पास न आए ।
'मीरन' और तो सोय कै खोवत हौं सखि प्रीतम जागि गवाए ॥

[२८३]

वा चकई को भयो चित चींतो चितौत चहूँदिसि चाय सों नाची ।
ह्वै गई छीन छपाकर की छबि जामिनि जोन्ह मनौ जम जाँची ॥
बोलत बैरी बिहंगम 'देव' सँजोगिनि की भई संपति काँची ।
लोहू पियो जु वियोगिनी को सु कियो मुखलाल पिसाचिनि प्राची ॥

[२८४]

जुगनू जमाती कैधों बाती बारि खाती,
प्राण ढूँढ़त फिरत घाती मदन अराती है।
झिल्ली झननाती भननाती है बिरह
भेरी कोकिला कुजाती मदमाती अनखाती है॥
घटा घननाती सननाती पौन 'शिवनाथ',
फनी फननाती ये लगत ताती छाती है।
सावन की राती दुखदाती ना सोहाती,
मोर बोलैं उतपाती इत पाती हू न आती है॥

[२८५]

आहि कै कराहि काँपि कृश तन बैठी आय,
चाहति सखी सों कहिवे को पै न कहि जाय।
फेरि मसि-भाजन मँगायो लिखिबे को कछू,
चाहत कलम गहिवे कों पै न गहि जाय॥
एते में उमँगि अँसुवान को प्रवाह आयो,
चाहति है थाह लहिवे को पै न लहि जाय।
दहि जाय गात बात बूझै ते न कहि जाय,
बहि जाय कागज कलम हाथ रहि जाय॥

[२८६]

आजु आली माथे ते सुबेंदी गिरै बार-बार,
मुख पर मोतिन की लरी लरकति है।
धरतहि पग कील चूरे की निकरि जात,
जब-तब गाँठि जूरेहू की भरकति है॥
जानि न परत 'पहलाद' परदेस पियु,
उससि उरोजन सों आँगी दरकति है।
तनी तरकति, कर चूरी करकति, अंग
सारी सरकति, आँख बाँई फरकति है॥

[२८७]

कोऊ न आयो उहाँ ते सखी री जहाँ मुरलीधर प्रान-पियारे।
याही अँदेसे में बैठी हुती उहि देस के धावन पौरि पुकारे॥
पाती दई धरि छाती लई दरकी अँगिया उर आनद भारे।
पूंछन को पिय की कुसलात मनो हिय-द्वार किवार उघारे॥

[२८८]

बिछुरे मग जाती सँघाती मिली चख चातिकै धार सवाती मिली।
रसना जड़की सरसाती मिली चित सूम को सोन की थाती मिली॥
जड़ बूड़ति नाव सोहाती मिली बिरहा कतलान की काती मिली।
कहि 'तोप' सबै सुखपाती मिली सजनी पिय-पानि की पाती मिली॥

[२८९]

आवन सुन्यो है मन भावन को भावती ने,
आँखिन अनंद आँसू ढरकि ढरकि उठैं।
'देव' दृग दोऊ दौरि जात द्वार देहरी लौं,
केहरी-सी साँसैं खरी खरकि-खरकि उठैं॥
टहलैं करति टहलैं न हाथ पाँय-रंग,
महलै निहारि तनी तरकि-तरकि उठैं।
सरकि-सरकि सारी दरकि-दरकि आँगी,
औचक उचौहैं कुच फरकि-फरकि उठैं॥

[२९०]

आँगन बैठी सुन्यो पिय आवन चित्त झरोखन में लरक्यों परै।
'देवजू' घूंघट के पटहू में समात न फूल्यो हियो फरक्यो परै॥
नैनन आनँद के अँसुवा मनौ भौंर सरोजन ते भरक्यो परै।
दंत लसै मृदु मंद हँसी सुख सों मुख दाड़िम-सो दरक्यो परै॥

[२९१]

आजु दिन कान्ह आगमन के बधाए सुनि,
छाए मग फूलन सुहाए थल-थल के।
कहैं 'पदमाकर' त्यों आरती उतारिबे कों,
थारन में दीप हीरा हारन के छलके॥

कंचन के कलस भराए भूरि पन्नन के,
ताने तुंग तोरन तहाँई झलाझल के।
पौर के दुवारे तैं लगाय केलि मंदिर लौं,
पदमिनि पाँवड़े पसारे मखमल के॥

[२९२]

बैठ्यो अँगना में पिय आय परदेसन सों,
ऊपर फुहारे नभ छिरकि-छिरकि जात।
इत नैन पीतम के ऊपर भ्रमत उठि,
उत पट खुलि-खुलि भिरकि-भिरकि जात॥
पिय के बिलोकिबे को खिरकीन-खिरकीन,
फिरकी सरीसी तिय थिरकि-थिरकि जात।
इत-उत चोरा-चोरी झाँकन में ताकै,
हिय हारन के मोती मंजु छिरकि-छिरकि जात॥

[२९३]

वारनि धूपि अँगारनि धूप कैं धूम अँध्यारी पसारी महा है।
आनन चंद समान उगो मृदु मंद हँसी जनु जोन्ह छटा है॥
फैलि रही 'मतिराम' जहाँ-तहाँ दीपति दीपनि की परभा है।
लाल! तिहारे मिलाप को बाल ने आजु करी दिन ही में निसा है॥

[२६४]

साँझ ही सों रँगरावटी में मधुरे सुर मोदन गाय रही है।
साँवरे रावरे की मुसकानि, कला कहिकै ललचाय रही हैं।
लालसा में 'लछिराम' निहोरि अबै कर जोरि बुलाय रही है
बैंजनी सारी के भीतर में पग पैंजनी प्यारी बजाय रही है।

[२६५]

साँझ ही तें करि राखै सबै करिबे के जे काज हुते रजनी के
पौढ़ि रही उमँगी अति ही 'मतिराम' अनंद अमात न जी के।
सोवत जानि कै लोग सबै अधिकाने मिलाप मनोरथ पी के
सेज ते बाल उठी हरुए हरुए पट खोलि दए खिरकी के।

[२६६]

सजि सेज रंग के महल में उमंग भरी,
पिय गर लागि काम कसकें मिटाए लेति।
ठानि विपरीत पूरे मैन के मसूसनि सों,
सुरति समर जय-पत्रहिं लिखाए लेति॥
'हरिचंद' केलि-कला परम प्रवीन तिया,
जोम भरि पियै झकमोरनि हराए लेति।
याद करि पीय की वे निरदई घातें आज,
प्रथम समागम को बदलो चुकाए लेति॥

[२९७]

वे उनसों रति को उमहैं फिरि वे उनसों विपरीत को रागैं।
वे उनको पट पीत धरैं अरु वे उनही सों निलंबर माँगैं॥
गोकुल दोऊ भरे रस-रंग निसा भरि यों हिय आनँद पागैं।
वे उनको मुख चूमि रहैं तब वे उनको मुख चूमन लागैं॥

[२९८]

सीस-फूल सरकि सुहावने लिलार लाग्यो,
लाँबी लटैं लटकि परी हैं कटि छाम पर।
'द्विजदेव' त्यों ही कछु हुलसि हिये ते हेलि,
फैलि गयो राग मुख पंकज ललाम पर॥
स्वेद सीकरन सराबोर ह्वै सुरंग चीर,
लाल दुति दै रही सुहीरन के दाम पर।
केलि-रस साने दोऊ थकित त्रिकाने तऊ,
हाँ की होत झमक सु ना की धूमधाम पर॥

[२९९]

लै पट पीत भले पहिरे पहिराय पियै चुनि चूनरि खासी।
त्यों 'पदमाकर' साँझहिते सिगरी निसि केलि-कला परगासी॥
फूलत फूल गुलाबन के चटकाहट चौंक चली चपला-सी।
कान्ह के कानन आँगुरी नाइ रही लपटाइ लवंग लता-सी॥

[३००]

आजु परभात छवि औरई लखानी तन,
और रंग तरुनी तिया को मन ह्वै गयो।
'राजहंस' सफल हिए की चारु आसा भई,
ललित मनोरथ को बीज बन ब्वै गयो॥
तपनि मिटावन अनंद सरसावन अमल
जीवधाम सो अमंद घन च्वै गयो।
आजु ही अनूप तेज राखि उर-अंतर,
समी के सम साँचोई तिया को तन ह्वै गयो॥

[३०१]

सुरत सुखद सम अति अरसाने अंग,
आनन अनूप सोनजूही छवि छावै है।
अमल रसाल सम युगल उरोज पर,
अधिक-अधिक स्यामताई सरसावै है॥
'राजहंस' नित निज रूपहिं बढ़ाय लंक,
तन-मन-वैन की चपलता हटावै है।
रवि-छवि, वारी वर उषा-सी रुचिर बाल,
गरभ समेत प्यारी काको न सुहावै है॥

[३०२]

उदित उदयगिरि अवलीन जैसे रवि,
जैसे राजै सरस कुसुम पुंज कोद में।
कवि 'राजहँस' जैसे सर में सरोज वर,
जैसे मनहर सुर सुंदर सरोद में॥
राजत भरत ज्यों शकुंतला के अंक रघु-
राजै ज्यों सुदच्छिना की भाग भरी गोद में।
तैसे ही हरनहारो प्यारो छबिवारो सिसु,
तरुनी तिया को पागै लाज औ प्रमोद में॥

[३०३]

राई-लोन करति गुराई देखि अंगन की,
दुरै न दुराई त्यों भुराई सों भिरति है।
ज्यौं-ज्यौं सुघराई सों न उघरन देति त्यौं-त्यौं,
सुंदर सुघर घर घेरन घिरति है॥
निठुर दिठौना दीन्हें नीठि निकसै न देति,
दीठि लागिवे को उर पीठि दै गिरति है।
जिन-जिन ओर चित चोर चितवत त्योंही,
तिन-तिन ओर तिन तोरति फिरति है॥

[३१०]

दुरिहै क्यों भूखन बसन दुति जोवन की,
देहहु की जोति होति द्यौस ऐसी राति है।
नाहक सुवास लागे ह्वै है कैसी 'केशव',
सुभावती की बास भौंर भीर फारे खाति है॥
देखि तेरी सूरति की मूरति विसूरति हूँ,
लालन के दृग देखिवे को ललचाति है।
चालिहै क्यों चंदमुखी कुचन के भार लए,
कचन के भारही लचकि लंक जाति है॥

[३११]

आयो बसंत रसाल प्रफुल्लित कोकिल बोलनि स्रौन सुहाई।
भौंरनि को 'मतिराम' किये गुन काम प्रसून-कमान चढ़ाई॥
रावरो रूप लग्यो मन में तन में तिय के झलकी तरुनाई।
धीर धरौ, अकुलात कहा? अब तो बलि बात सबै बनिआई॥

[३१२]

नैन बचाइ चवाइन के छन रैन में ह्वै निकसी यह टोली।
लौटि मिलैंगे जबै घर के नहिं भूलि है 'सेवक' भावती भोली॥
देखि तुम्हैं छतियाँ फरकी, त्यों तनी तरकी, दरकी कछु चोली।
आपने पीकी नुहारि निहारि विचारिकै तोसों मरूँ करि बोली॥

[३१३]

लेहु जू लाई हौं गेह तिहारे परे जेहि नेह सँदेस खरे मैं।
भेंटौ भुजा भरि, मेटौ बिथान, समेटौ जू तौ सब साध भरे मैं॥
संभु ज्यों आधे ही अंग लगाओ, बसाओ कि श्रीपति ज्यों हियरे में।
'दास' भरौ रसकेलि सकेलि, सुआनँद बेलि-सी मेलि गरे मैं॥

[३१४]

नैनन के तारन मैं राखौ प्यारे पूतरी कै,
मुरली ज्यों लाय राखो दसन बसन मैं।
राखौ भुज बीच बनमाली बनमाला करि,
चंदन ज्यों चतुर चढ़ाय राखौं तन मैं॥
'केसोराय' कल कंठ राखौ बलि कठुला कै,
भरमि भरमि क्यों हूँ आनी है भवन मैं।
चंपक कली-सी बाल सूँघि-सूँघि देवता-सी,
लेहु प्यारे लाल इन्हें मेलि राखौं तन मैं॥

[३१५]

आई चालि काल्हिही तू मायके तें एरी अलि,
कौन विधि कैसे मिलि प्रेम-जाल नाख्यो तू।
मेरे जान ईश प्यारो रूप को मयूख सींच,
वचन पियूख कैधों मृदु हँसि भाख्यो तू॥

कीनो शुभचार कैधों औरही विचार सुनो,
तूही निरधार चार सुख अभिलाख्यो तू।
एरी अरविंद-नैनी पिक-बैनी भोरही तें,
गोकुल के चंद को चकोर करि राख्यो तू॥

[३१६]

मेघ जहाँ-तहाँ दामिनी है अरु दीप जहाँ-तहाँ जोति है भातें।
केस जहाँ-तहाँ माँग सुबेस है, है गिरि गेरु तहाँ रँग रातें॥
मोहन सों मिलिबे को बलायल्यौं मैं 'रघुनाथ' कहौं हठि यातें।
होत नयो नहिं, आयो चल्यौ रँग साँवरे गोरे को संग सदातें॥

[३१७]

यह सावन सोक-नसावन है मनभावन यामें न लाज भरौ।
जमुना पै चलो सु सबै मिलि कै अरु गाइ-बजाइकै शोक हरौ॥
हरि आवत हैं 'हरिचंद' पिया अहो लाड़िली देर न यामें करौ।
बलि भूलौ झुलावौ झुकौ उझकौ यहि पाखें पतिव्रत ताखें धरौ॥

[३१८]

रितु पावस आई या भागन तें संग लाल के कुंजन मे विहरौ।
नहिं पाइहौ औसर ऐसो भटू अब काहे को लाज लजाइ मरौ॥
गुरु लोग औ चौचंदहाइन सौं विरथा केहि कारन वीर डरौ।
चलि चाखौ सुधा अभिलाखैं भरौ यहि पाखैं पतिव्रत ताखैं धरौ॥

[३१९]

चारहू ओर उदै मुखचंद की चाँदनी चारु निहारि लेरी।
बलि जोपै अधीन भयो पिय प्यारो तो एतो बिचार बिचारि लेरी॥
कवि 'ठाकुर' चूकि गयो जो गोपाल तो, तैं बिगरी को सुधारि लेरी।
अब रैहै न रैहै यही समयो बहती नदी पाँव पखारि लेरी॥

[३२०]

तूही को चाहत वे चित मौ अरु तूही हियो उनपै ललचावत।
मैं ही अकेली न जानत हूँ यह भेद सबै ब्रज-मंडली गावत॥
कौन संकोच रह्यो री 'नेवाज' जो तू तरसै औ उन्हैं तरसावत।
बावरी! जो पै कलंक लग्यो तो निशंक ह्वै काहे न अंक लगावत॥

[३२१]

दाजन दै दुर जीवन कौं अरु लाजनि दै सजनी कुल वारे।
साजन दै मन को नव नेम निवाजन दै मनमोहन प्यारे॥
गाजन दै ननदीन गुलाब विराजन दै उरमें गुन भारे।
भाजन दै गुरु लोगन कौ पुर बाजन दै अब नेह नगारे॥

[३२२]

तेरि ये चित्र के काज हमै करि, 'तोष' सबै बृजराज दये हैं।
पत्र विचित्र विचित्र बनाइ, दिखाइ सबै बहु मोद भये हैं॥
रंग बनावत अंग लगे, सर ल्यावत लेखनो काज नये हैं।
एरी भटू! बलि तेरे लिये हरि, मेरे चितेरे के चेरे भये हैं॥

[३२३]

लखो अपनी अँखियाँन सों मैं जमुनातट आजु अन्हात में भोर।
लगे दृग रावरे सों उनके लगे रावरे के उनके मुख ओर॥
दुरावति हौ सहवासिनि सों 'रघुनाथ' वृथा बतियान के जोर।
सुनो जग में उपखान प्रसिद्ध है चोरन की गति जानत चोर॥

[३२४]

यह प्रेम कथा कहिये किहिसों जो कहै तो कहा कोउ मानत है।
सब ऊपरी धीर धरायो चहै तन रोग नहीं पहिचानत है॥
कहि 'ठाकुर' जाहि लगी कसकै सुतो वै कसकैं उर आनत है।
बिन आपने पाँव बिवाँई भये, कोऊ पीर पराई न जानत है॥

[३२५]

धनि वै जिन प्रेम सने पिय के उर में रस बीजन बोवती हैं।
धनि वै जिन पावस में पिसिकै, मेहदी कर कञ्ज मलोवती हैं॥
धनि वै जिन सूरत साजि सजै, हम लाज के बोझ को ढोवती हैं।
धनि वै धनि सावन की रतियाँ पति की छतियाँ लगि सोवती हैं॥

[३२६]

मोर को मुकुट सीस, भाल खौरि केसरि की,
लोचन बिशाल लखि मन उमहत है।
मैन कैसे केश श्रुति कुण्डल वखत वेस,
झलक कपोल लखि थिर ना रहत है॥

कुलकानि धीरज मलाह मतवारे दोऊ,
मदन झकोर तन तीर ना गहत है।
श्याम छबि सागर में नेह की लहर बीच,
लाज को जहाज आज बूड़न चहत है॥

[३२७]

बैठी मंच मानिक को फेरत रई को,
औध माधुरी की मूरति सी सूरति सनेहकी।
सावन सुहावन को गावन सखीन
साथ, तैसई सोहाई आई छटा घटा मेघ की॥
ता समै बजाई कान्ह वंशी तान आई,
कान सुधि सो हेरानी हिये मैनवान वेहकी।
दूध की न दही की न माखन मही हू की,
न कुल की कहीं की नहिं देहकी न गेह की॥

[३२८]

मंद महा मोहक मधुर सुर सुनियत,
धुनियत सोस बँधी बाँसी है री बाँसी है।
गोकुल की कुलवधू को कुल सम्हारे? नहीं,
दो कुल निहारे लाज नासी है री नासी है॥

कहि धौं सिखावत सिखै धौं काहि सुधि होय,
सुधि बुधि कारे कान्ह डाँसी है री डाँसी है।
'देव' ब्रजवासी वा बिसासी की चितौनि वह,
गाँसी है री हाँसी वह फाँसी है री फाँसी है॥

[३२९]

प्यारे तरु नीजन विपिन तरुनी जन ह्वै,
निकसी निसंक निसि आतुर अतंक मैं।
गनै न कलंक मृदु लंकनि मयंक मुखी,
पंकज पगन धाई भागि निसि पंक मैं॥
भूषननि भूलि पैन्हे उलटे दुकूल 'देव'
खुले भुजमूल प्रतिकूल विधि वंक मैं।
चूल्हे चढ़े छाँड़े उफनात दूध भाँड़े उन,
सुत छाँड़े अंक पति छाँड़े परजंक मैं॥

[३३०]

मुरली सुनत वाम काम-जुर लीन भई,
धाई धुर लीक सुनि विधी बिधुरनि सों।
पावस न दीसी यह पावस नदी सो फिरै,
उमड़ी असंगत तरंगित उरनि सों॥

लाज काज सुख साज बंधन समाज नाँघि,
निकसीं निसंक सकुचैं नहिं गुरनि सों।
मीन ज्यों अधीनी गुन कीनी खैंच लीनी 'देव',
बंसी वार बंसी डार बंसी के सुरनि सों॥

[३३१]

बोन्यो बंस विरद मैं बौरी भई वरजत,
मेरे वार बार बीर कोई पास पैठो जनि।
सिगरी सयानी तुम विगरी अकेली हौं ही,
गोहन मैं छाँड़ो मोसों भौंहन अमेठो जनि।
कुलटा कलंकिनी हौं कायर कुमति कूर,
काहू के न काम की निकाम यातें ऐंठौ जनि॥
'देव' तहाँ बैठियत जहाँ बुद्धि बढ़ै, हौं तो
बैठी हौं बिकल कोई मोहिं मिलि बैठो जनि॥

[३३२]

अब का समुझावती को समुझै बदनामी के बीज तो बो चुकी री।
तब तौ इतनौ न बिचार कर्‍यो इहिं जाल परे कहु को चुकी री॥
कहि 'ठाकुर' या रस रीति रंगे करि प्रीति पतिव्रत खो चुकी री।
सखि नेकी बदी जो बदी हुती भाल पै होनी हुती सुतो हो चुकी री॥

[३३३]

चंद्रिका चकोर देखै निसि दिनकरै लेखै,
चंद बिन दिन दिन लागत अँध्यारी है।
'आलम' सुकवि कहै भले फल हेत गहे,
काँटे सी कटीली बेलि ऐसी प्रीति प्यारी है॥
कारो कान्ह कहत गँवार ऐसी लागत है,
मेरे वाकी श्यामताई अतिही उजारी है।
मन की अटक तहाँ रूपको विचार कैसो,
रीझिबे को पैंड़ो अरु बूझ कछु न्यारी है॥

[३३४]

कोऊ कहौ कुलटा कुलनि अकुलनि कहौ,
कोऊ कहौ रंकिनि कलंकिनि कुनारी हौं।
तैसो नरलोक वरलोक परलोकनि मैं,
कीन्ही हौं अलीक लोक लीकनि ते न्यारी हौं॥
तन जाउ मन जाउ 'देव' गुरुजन जाउ,
प्रान किन जाउ टेकु टरत न टारी हौं।
वृन्दावनवारी वनवारी के मुकुटवारी,
पीत पटवारी वहि मूरति पै वारी हौं॥

[३३५]

मंजुल मंजरी पंजरी सी ह्वै मनोज के ओज सम्हारत चीरन।
भूँख न प्यास न नींद परै परी प्रेम अजीरन के जुर जीरन॥
'देव' घरी पल जाति घुरी अँसुवान के नीर उसास समीरन।
आहन जाति अहीर अहे तुम्है कान्ह कहा कहौं काहू की पीरन॥

[३३६]

मंद हास चंद्रिका को मंदिर वदन चंद,
सुन्दर मधुर बानि सुधा सरसाति है।
इन्दिरा के ऐन नैन इन्दीवर फूलि रहे,
विद्रुम अधर दन्त मोतिन की पाँति है॥
ऐसी अदभुत रूप भावती को देख्यो 'देव',
जाके विनु देखे छिनु छाती ना सिराति है।
रसिक कन्हाई वलि बूझन हौं आई तुम्हैं,
ऐसी प्यारी पाइ कैसे न्यारी राखी जाति है॥

[३३७]

जोहे जाहि चाँदनी की लागति भली न छवि,
चंपक गुलाब सोन जूही जोतिवारी है।
जामते रसाल लाल करना कदम्बते वै,
वढ़ी है नवेली सुनु केतकी सुधारी है॥

कहै 'दास' देखौ यह तपनि विषादित्त की,
कैसी बिधि जाति दोपहरिया नेवारी है।
प्रफुलित कीजिए बरसि घनस्याम प्यारे,
जाति कुँभिलानि वृषभानजू की वारी है॥

[३३८]

अद्भुत एक अनूपम बाग।
जुगुल कमल पर गज वर क्रीड़त तापर सिंह करत अनुराग॥
हरि पर सर वर, सर पर गिरिवर, गिरि पर फूले कंज पराग।
रुचिर कपोत बसत ता ऊपर, ताहू पर अमृत फल लाग॥
फल पर पुहुप, पुहुप पर पालव, तापर सुक, पिक मृगमद काग।
खंजन धनुष चन्द्रमा ऊपर, ता ऊपर यक मनिधर नाग॥
अँग अँग प्रति और और छवि उपमा ताको करत न त्याग।
'सूरदास' प्रभु पियहु सुधारस, मानहु अधरन को बड़ भाग॥

[३३९]

ऐसे बने 'रघुनाथ' कहै हरि, काम कला छवि के निधि गारे।
झाँकि झरोखे सो आवत देखि, खड़ी भई आनि कै आपने द्वारे॥
रीझी सरूप सों भीजी सनेह यों, बोली हरे रस आखर भारे।
ठाढ़ हो तोंसो कहौंगी कछू अरे ग्वाल! बड़ी बड़ी आँखिन वारे॥

[३४०]

कुल लाज जंजीरन सों जकर्‍यो, जुलमी तऊ ऊधम ठानत है।
तन मैन महावत ऐड़ के आँकुस, ताहू की आनि न आनत है॥
झुकि झूमि झुकै उझकै न रुकै, 'परमेस' जू जोग न जानत है।
पिय रावरो रूप बिलोके बिना, मन मेरो मतङ्ग न मानत है॥

[३४१]

रावरे नेंह को लाज तजी अरु गेह के काज सबै बिसराये।
डारि दियो गुरुलोगनि को डरु गाँव चवाय में नाम धराए॥
हेत कियो हम जो तौ कहा तुम तौ 'मतिराम' सबै बहराए।
कोऊ कितेक उपाय करौ, कहूँ होत हैं आपने पीव पराए॥

[३४२]

औधि आधी रात की दै आपनो बतायो गेह,
देखि अभिलाष मिलिबे को सुखदाय के।
भूमिही में कैयो डारि तोसक बिछौना कीन्हें,
आस पास धर दीन्हें चौसर बनाय के।
पानी पान अतर नजीक सब राखे लाय,
गूजरेटी 'रघुनाथ' औरो चित चाय के।
खोलि राखी खिरकी बुझाइ राखे दीपद्वार,
लाइ राखे नैन कान आहट में पाय के॥

[३४३]

स्वै गई निशङ्क आज येरी परयङ्क पर,
बङ्क भौंह वारो मोहिं अङ्क मों लगा गयो।
मुरली मुकुट कटि तट पीतपट, तैसे
अटपटी चाल चित मेरो उरझा गयो॥
कहैं 'नन्दराम' मुरि मन्द मुसकाय,
नेक समुझि न पायो कछु कान में सुना गयो।
आ गयो अचानक देखा गयो मयङ्क मुख,
हाँ गयो कितै कि मोहिं सोवत जगा गयो॥

[३४४]

छूट्यो गेहकाज लोकलाज मन मोहनी को,
भूल्यो मनमोहन को मुरली बजाइबो।
देखो दिन द्वै में 'रसखान' बात फैलि जैहै,
सजनी कहाँ लौं चन्द हाथन दुराइबो॥
कालिहू कलिन्दी तीर चितयो अचानक ही,
दोउन को दोऊ मुरि मृदु मुसकाइबो।
दोऊ परैं पैयाँ दोऊ लेत हैं बलैयाँ उन्हैं,
भूलि गईं गैयाँ इन्हैं गागर उठाइबो॥

[३४५]

सकल सहेलिन के पीछे पीछे डोलति है,
मंद मंद गौन आजु आपु ही करत है।
सनमुख होत सुख होत 'मतिराम' जब,
पौन लागे घूंघट को पट उघरत है॥
जमुना के तट बँसी बट के निकट,
नंदलाल पै सकोचन ते चाह्यो ना परत है।
तन तो तिया को बर भाँवरे भरत,
मन सावरे बदन पर भाँवरै भरत है॥

[३४६]

जमुना के तीर बहै सीतल समीर जहाँ,
मधुकर मधुर करत मंद सोर है।
'कवि मतिराम' तहाँ छवि सी छबीली वैठी,
अंगन ते फैलत सुगन्ध की झकार है॥
पीतम बिहारी के निहारिवे की वाट ऐसी,
चहूँ ओर दीरघ द्दगन करी दौर है।
एक ओर मीन मनो एक ओर कंज पुंज,
एक ओर खंजन चकोर एक ओर है॥

[३४७]

भादों की भारी अँध्यारी निसा, झुकि बादर मन्द फुही बरसावै।
राधिका आपनी ऊँची अटा पै, चढ़ी रसमत्त मलारहि गावै॥
ता समै मोहन के दृग दूरि ते आतुर रूप की भीख यों पावै।
पौन मया करि घूंघट टारै दया करि दामिनि दीप दिखावै॥

[३४८]

सोने की सी बेली अति सुंदर नवेली बाल,
ठाढ़ी ही अकेली अलबेली द्वार महियाँ।
'मतिराम' आँखिन सुधा की बरखा सी भई,
गई जब दीठि वाके मुखचंद पहियाँ॥
नेकु नीरे जाय करि बातनि लगाय करि,
कछु मन पाय हरि वाकी गही बहियाँ।
चैनन चरचि लई सैनन थकित भई,
नैनन मैं चाह करै बैनन मैं नहियाँ॥

[३४९]

दानी भये नये माँगत दान हौ जानिहै कंस तौ बंधन जैहो।
टूटे छरा बछरादिक गोधन जो धन है सो सबै धन दैहो॥
रोकत हौ बन में 'रसखानि' चलावत हाथ घनो दुख पैहो।
जैहै जो भूषन काहू तिया को तौ मोल छला के लला न बिकैहो॥

[३५०]

कबहूँ फिर पाँव न देहौं लला, भजि जैहौं तहाँ जहाँ सूधी सहौं ।
'पदमाकर' देहरी द्वार किवार लगे ललचैहौ न ऐसी चहौ ॥
बहियाँ की कहा छहियाँ न कहूँ धुवे पावहुगे लला लाज लहौ ।
चित चाहै कहौ न कहौ बतियाँ, उतही रहौ हा हा हमैं न गहौ ॥

[३५१]

न्हातई न्हात तिहारेई स्याम कलिन्दजा स्याम भई बहुतै है ।
धोखेहु धोय हौं यामे कहूँ, तो यहै रंग सारिन में सरसै है ॥
साँवरे अंग को रंग कहूँ, यह मेरे सुअँगन में लगि जैहै ।
छैल छबीले छुओगे जु मोहिं तो गात में मेरे गोराई न रैहै ॥

[३५२]

दुहुँ ओर सों फाग मड़ी उमड़ी, जहाँ औचढ़ि भीर ते भीर भिरी ।
कुच कंचुकी कोर छुये छरकै, 'पजनेस' फँदी फरकै ज्यों चिरी ॥
धधकी दै गुलाल की धूँधुरि में, धरी गोरी लला मुख मीड़ी सिरी ।
चमकै झपै कौंधे कढ़ै तड़िता तड़पै मनो लाल घटा में घिरी ॥

[३५३]

ये नंदगाँव ते आये इहाँ उत आई सुता वह कौनहू ग्वाल की ।
त्यों 'पद्माकर' होत जुरा जुरो दोउन फाग फरी इहि ख्याल की ॥
डीठ चली उनकी इनपै इनकी उनपै चली मूठि उताल की ।
डीठसी डीठ लगी उनको इनके लगी मूठि सी मूठि गुलाल की ॥

[३५४]

या अनुराग की फाग लखो जहाँ रागतीं राग किशोर किशोरी।
त्यों 'पदमाकर' घाली घली फिर लालही लाल गुलाल की झोरी॥
जैसी को तैसी रही पिचकी कर काहून केसरि रंग से बोरी।
गोरिन के रंग भींजिगो साँवरो, साँवरे के रँग भींजीं सु गोरी॥

[३५५]

पायन को परिबो अपमान अनेक सों 'केशव' मान मनैबो।
सीठी तमूर खवाइबो खैबो विशेष चहूँ दिशि चौंकि चितैबो॥
चीर कुचीलन ऊपर पौढ़िबो पातहु के खरके भगि ऐबो।
आँखिन मूँदि कै सीखत राधिका कुञ्जन तें प्रति कुञ्जन जैबो॥

[३५६]

माइके के बिरह मयंकमुखी दुखी देखि,
भेद ताके सासुरे की मालिन बतायो है।
मोपै ठकुराइन हुकुम करिबोई करौ,
खिजमत करिबो हमारे बाँट आयो है॥
भौन में तिहारे बाग ताका हौंही सेवती हौं,
तामें तहखानों सूनो अति ही सुहायो है।
ताकी कोठरीन की अँध्यारी भारी सुन करि,
दुलही दुलारी के महा री मोद छायो है॥

[३५७]

रुचि पाय भँवाय दई मेंहदी, तेहि को रँगु होत मनौ नगु है।
अब ऐसे में स्याम बोलावैं भटू, कहु जाउँ क्यों पंकु भयो मगु है॥
अघरात अँधेरी न सूझै गली, भनि जोयसी दूतिन को सँगु है।
अब जाउँ तो जात धुयो रँगुरी, रंगु राखौं तो जात सबै रँगु है॥

[३५८]

सोसनी दुकूलनि दुराये रूप रोसनी है,
बूटेदार घाँघरी की घूमनि घुमाइकै।
कहैं 'पदमाकर' त्यौं उन्नत उरोजन पै,
तङ्ग अँगिया है तनी तनिन तनाइकै॥
छज्जन की छाँह छवि छैल के मिलै के हेतु,
छाजति छपा मैं यों छबीली छवि छाइकै।
है रही खरी है छरी फूलकी छरीसी छिपि,
साँकरी गली में फूल पाँखुरी बिछाइकै॥

[३५९]

पीछे परवीनैं बीनैं संग की सहेली, आगे
भार डर भूपन डगर डारै छोरि छोरि।
चौंकति चकोरनि त्यों मोरे मुख मोरनि त्यों,
भौंरनि की ओर भीरु देखै मुख मोरि-मोरि।

एक कर आली कर ऊपर ही धरे हरे
हरे पग धरै 'देव' चलै चित चोरि चोरि।
दूजे हाथ साथ लै सुनावति बचन राज-
हँसनि चुनावति मुकुत माल तोरि तोरि॥

[३६०]

दिनकै किवार खोलि कीनो अभिसार पै न,
जानि परी काहू कहाँ जाति चली छलसी।
कहै 'पद्माकर' न साँकरी सुखोरि जाहि,
काँकरी पगन लगै पंकज के दलसी॥
कामद सौं कानन कपूर ऐसी धूरि लगै,
पट सौ पहार नदी लागत है नलसी।
घाम चाँदनी सो लगै चंद सो लगत रवि,
मग मखतूल सो मही हू मखमल सी॥

[३६१]

घूंघट की घूम के सुभूम के जवाहिर के,
झिलमिल झालर की भूमि लौं झुलत जात।
कहै 'पद्माकर' सुधाकर मुखी के हीर,
हारन में तारन के तोमसे तुलत जात॥

मंद मंद मैकल मतंग लौं चलेई भले,
भुजन समेत भुज भूषन डुलत जात।
घाँघरे झकोरन चहूँधा खोर खोरन में,
खूब खसबोई के खजाने से खुलत जात॥

[३६२]

साँवरी सारी सखी सँग साँवरी, साँवरे धारि विभूषन ध्वैकै।
त्यों 'पदमाकर' साँवरेई अँग-रागनि आँगी रची कुच द्वैकै॥
साँवरी रैनि मैं साँवरी पै घहरै घनघोर घटा छिति छ्वैकै।
साँवरी कामरी की दैखुही, बलि साँवरे पै चली साँवरी ह्वैकै॥

[३६३]

सूझत न गात बीति आई अधराति अरु,
सोए सब गुरजन जानि कै नगर के।
छिपि कै छबीली अभिसार को केंवार खोले,
खुलिगे खजाने चारु चंदन अगर के॥
'देव' कहै भौंर गुंजि आए कुंज-कुंजनि तें,
पूँछि पूँछि पीछे परे पाहरू डगर के।
देवता कि दामिनी मसाल किधौं जोति जाल,
झगरे मचन लागे झगरे नगर के॥

[३६४]

अंगन मैं चंदन चढ़ाय घनसार सेत
सारी छीर फेन कैसी अंभा उफनाति है।
राजत रुचिर रुचि मोतिन के आभरन,
कुसुम कलित केस सोभा सरसाति है॥
'कवि मतिराम' प्रान प्यारे को मिलन चली,
करि कै मनोरथनि मृदु मुसकाति है।
होति न लखाई निसिचंद की उज्यारी मुख-
चंद की उज्यारी तन छाँहौ छपि जाति है॥

[३६५]

किंसुक के फूलन के फूलन विभूषित कै,
बाँधि लीनी वलया विगत कीनी वजनी।
तापर सँवार्यो सेत अंबर को डंबर,
सिधारी स्याम सन्निधि निहारी काहू न जनी॥
छीर की तरंग की प्रभा को गहि लीनी तिय,
कीन्हीं छीर सिन्धु छिति कातिक की रजनी।
आनन प्रभा ते तन छाँह हू छपाए जात,
भौंरन की भीर संग लाए जात सजनी॥

[२६६]

सजि ब्रजचंद पै चली यों मुखचंद जाको,
चंद चाँदनी को मुख मंद सो करत जात।
कहै 'पदमाकर' त्यों सहज सुगंध ही के,
पुंज बन कुंजन में कंज से भरत जात॥
धरत जहाँई जहाँ पग है सुप्यारी तहाँ,
मंजुल मजीठ ही की माठ सी ढुरत जात।
हारन ते हीरे ढरैं प्यारी के किनारन ते,
बारन ते मुकुता हजारन झरत जात॥

[२६७]

लाल लाल अँबर अनोखे नैन लाल लाल,
लाल लाल अधर ललाई है दसन में।
लाल लाल रेसम के फूलरा सुकेसन में,
छाय रहे छाती पर छाजत कुचन में॥
लाल लाल ककत विराजे कंज लाल लाल,
लाल लाल चरण चमक मुकतन में।
कहैं 'नंदराम' वाम रूप की रसाला आला
हेम कीसी माला ब्रजबाला चली वन में॥

[३६८]

हरी हरी भूमि जहाँ हरी हरी लोनी लता,
हरे हरे पात हरे हरे अनुराग में।
कहै 'नंदराम' हरे हरे यमुना के कूल
हरित दुकूल हरे हरे मोती मांग में॥
हरे हरे हारन में हरित बहारन में,
हरी हरी डारन में हरे हरे भाग में।
हरे हरे हरी को मिलन जात हरे हरे
हरी हरी कुंजन में हरे हरे बाग में॥

[३६९]

खरी दुपहरी भरी हरी हरी कुंज मंजु,
'देव' अलि पुंजन के गुंज हियो हरि जात।
सीरे नदनीरन गंभीरन समीर छाँह,
सोवै परे पथिक पुकारैं पिक करि जात॥
ऐसे में किसोरी भोरी गोरी कुम्हिलाने मुख,
पंकज से पाय धरा धीरज में धरि जात।
सोहैं घनस्याम मग हेरति हथेरी ओट,
ऊँचे धाम बाम चढ़ि आवत उतरि जात॥

[३७०]

गंजन सुगुंज लग्यो तैसौ पौन पुंज लग्यो,
दोस मनि कुंज लग्यो गुंजन सों गजि कै।
कहै 'पदमाकर' न खोज लग्यो ख्यालनिको
सालन मनोज लग्यो बीर तीर सजि कै ॥
सूखन सुथिंब लग्यो दूखन कदंब लग्यो,
मोहि न बिलंब लग्यो आई गेह तजि कै।
मीजन मयंक लग्यो मीतहू न अंक लग्यो,
पंक लग्यो पायन कलंक लग्यो बजि कै ॥

[३७१]

वारिध बिरह बड़ी वारिधि की बडवागि,
बूड़े बड़े बड़े जहाँ पारे प्रेम पुलते।
गरुओ दरप 'देव' जोवन गरब गिरि पर्यो
गुन टूटि छूटि बुधि नाउ डुलते ॥
मेरे मन तेरी भूल मरी हौं हिये की सूल,
कीन्हीं तिन तूल तूल अति ही अतुलते।
भाँवते ते भोंड़ी करी मानिनि ते मोड़ी करी,
कौड़ी करी हीरा ते कनौड़ी करी कुलते ॥

[३७२]

श्रीपति औ वृषभानलली न मिले डर लाजन प्रेम अगाधिका।
तैसी गुलाबकली चटकारिन डारी मरोरि मनोज की बाधिका।
बेलिन सो उरझी सुरझी सुरझीसी समीर सुगंधन साधिका॥
राधे परी कहि माधव माधव माधव टेरत राधिका राधिका॥

[३७३]

ह्वाँ मिलि मोहन सों 'मतिराम' सुकेलि करी अति आनंदवारी।
तेई लता द्रुम देखत दुःख चले अँसुवा अँखियान ते भारी॥
आवति हौं जमुना जलको नहि जानि परै बिछुरे गिरिधारी।
जानति हौं सखि आवन चाहत कुञ्जन ते कढ़ि कुञ्जबिहारी॥

[३७४]

हौं भई दूलह वे दुलही, उलही सुख बेलिसी केलि घनेरी।
मैं पहिरो पिय को पियरो, पहिरी उन री चुनरी चुनि मेरी॥
'देव' कहा करौं कौन सुनै री कहा कहे होत कथा बहुतेरी।
जे हरि मेरी धरैं पग-जेहरि ते हरि चेरी कै रंग रचै री॥

[३७५]

दूसरे की बात सुनि परत न ऐसी जहाँ,
कोकिल कपोतन की धुनि सरसाति है।
छाइ रहे जहाँ द्रुम बेलिन सों मिलि
'मतिराम' अलिकुलनि अँध्यारी अधिकाति है॥

नखत से फूलि रहे फूलन के पुंज घन
कुंजन में होत जहाँ दिनहूँ में राति है।
ता बन की बाट कोऊ संग न सहेली कहि
कैसे तू अकेली दधि बेचन को जाति है॥

[३७६]

आली हौं गई ही आज भूलि बरसाने कहूँ,
तापै तू परै है 'पदमाकर' तनैनी क्यों।
बृज-वनिता वे वनितान पै रचैहैं फाग,
तिनमें जो उधमिनि राधा मृगनैनी यों॥
घोरि डारी केसर सुबेसर बिलोरि डारी,
बोरि डारी चूनरि चुचात रंग रैनी ज्यों।
मोहिं झकझोरि डारी, कंचुकी मरोरि डारी,
तोरि डारी कसनि बिथोरि डारी बैनी त्यों॥

[३७७]

मोतिन की माल तोरि चीर सब चीर डारे,
फेरि कै न जैहों आली! दुख बिकरारे हैं।
'देवकीनंदन' कहैं धोखे नाग छौनन के,
अलकैं प्रसून नोचि नोचि निरवारे हैं॥

मानि मुखचंद भाव चोंच दई अधरन,
तीनौं ये निकुंजन में एकै तार तारे हैं।
ठौर ठौर डोलत मराल मतवारे तैसे,
मोर मतवारे त्यों चकोर मतवारे हैं॥

[३७८]

अलि हौं तो गई जमुना जल को सु कहा कहौं बीच बिपत्ति परी।
घहराइकै कारी घटा उनई इतने ही मैं गागरी सीस धरी॥
रपट्यो पग घाट चढ़्यो न गयो 'कवि मंडन' ह्वै कै बिहाल गिरी।
चिरजीवहु नंद को बारो अरी गहि बाँह गरीब ने ठाढ़ी करी॥

[३७९]

कामरी कारी कंधा पर देखि, अहीरहिं बोलि सबै ठहरायो।
जोइ है सोइ है मेरो तो जीव है, याको मैं पाय सभी कुछ पायो॥
कामरी लीन्हों उढ़ाय तुरंतहिं, कामरी मेरो कियो मन भायो।
कामरी तो मोहि जारो हुतो, वरू कामरी वारे बिचारे बचायो॥

[३८०]

हौं तो आजु घर ते निकरि कर दोहनी लै,
खरक गई ती जानि औसर दुहारी को।
दूरि रह्यो गेह उनै आयो अति मेह,
महा सोच है रसाल नई चूनरी की सारी को॥

हा हा रंग राखि लीजै ढील जिन कीजै लाल,
ऐसो नाहिं पैहौ हाय औसर अवारी को।
आनि कै छिपैये सुनि कुंअर कन्हैया दैया,
कहा घटि जैहै कारी कामरी तिहारी को॥

[३८१]

अब दोय घरी दिन शेष रह्यो, पथ जात गुलाब सु ठीक नहीं।
नजदीक न ग्राम उजार महा, मग लूटत लोग अथै दिनहीं॥
इहि ठाँ बहु धाम सरै सब काम तमाम मिलै वर वस्तु सही।
तुम जाहु न जाहु करौ जु रुचै सुदया धरि मैं हित बात कही॥

[३८२]

अंबर बीच पयोधर देखिकै, कौन को धीरज सों न गयो है।
'भंजनजू' नदिया यहि रूपकी, नाव नहीं रविहू अथयो है॥
पंथिक राति बसौ यहि देस, भलो तुमको उपदेस दयो है।
या मग बीच लगै वह नीच जु पावक में जरि प्रेत भयो है॥

[३८३]

ननंद निनारी सासु माइके सिधारी,
अहै रैनि अँधियारी भारी सूझत न कर है।
पीतम को गौन 'कविराज' न सोहात भौन,
दारुन बहत पौन लाग्यो मेघ झर है॥

संग ना सहेली बैस नवल अकेली,
तन पर तलबेली महा लाग्यो मैन सरु है।
भई अधरात मेरो जियरा डेरात,
जागु जागु रे बटोही इहाँ चोरन को डरु है॥

[३८४]

साँझ ही स्याम को लेन गई, सुबसी बन में सब जामिनि जायकै।
सीरी बयारि छिदे अँधरा, उरझे उर झाँखर झार मझाइकै॥
तेरी सी को करिहै करतूति, हुती करिबे सो करी तैं बनाइकै।
भोरही आई भटू इत मों–दुख दाइनि काज इतो दुखपाइकै॥

[३८५]

अलि दसे अधर सुगंध पाय आनन को,
कानन में ऐसे चारु चरन चलाए हैं।
फाटि गई कंचुकी लगे ते कंट कुंजन के,
बेनी बरहीन खोली बार छवि छाए हैं॥
बेग ते गवन कीन्हों धकधक होत सीनो,
दीरघ उसासैं तन स्वेद सरसाए हैं।
भली प्रीति पाली वनमाली के बुलाइबे को,
मेरे हेत आली बहुतेरे दुख पाए हैं॥

[३८६]

कंटक तें अटकि अटकि सब आपुहीं तें,
फटिगे बसन तिन्हैं नीके कै बनाय ले।
बेनी के विचित्र बार हारन में आय आय,
अरुझे अनोखे ते तौ बैठि सुरझाय ले॥
कहै 'शिव' कवि दबि काहे को रही है बाम!
घाम ते पसीना भयो ताको सियराय ले।
बात कहिबे में नंदलाल की उताल कहा?
हाल तो हरिन नैनी हफनि मिटाय ले॥

[३८७]

याही को पठाई वड़ो काम करि आई वड़ी,
तेरी है वड़ाई लख्यो लोचन लज़ीले सों।
साँची क्यों न कहै कछु मोको किधौं आपु ही को
पाई वकसीस लाई वसन छवीले सों।
कवि 'मतिराम' मोसो कहत संदेसो ऊन,
भरे नख सिख अंग हरख कटीले सों।
तू तो है रसीली रस-बातन बनाय जानै,
मेरे जान आई रस राखि कै रसीले सों॥

[३८८]

बोलति न काहे! एरी, पूछे बिन बोलों कहा,
पूछती हों काहे भई स्वेद अधिकाई है।
कहैं 'पदमाकर' सुमारग के गए आए,
साँची कह, मोसों आज कहाँ गई आई है।
गई आई हौं तो पास साँवरे के, कौन काज?
तेरे लिये ल्यावन सुतेरिये दुहाई है।
काहे तें न लाई फिरि मोहन बिहारी जू को,
कैसे वाहि ल्याऊँ? जैसे वाको मनलाई है॥
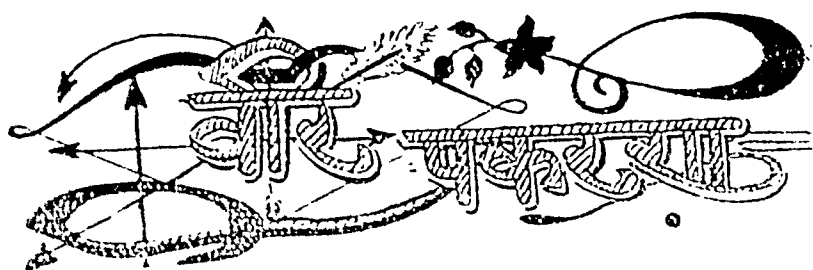
[३८६]

रानी है सकुंतला-सी भरत समान सिसु,
बल पृथु पारथ समान पूरो तन में।
भीषम समान प्रन भीम के समान तन,
धनद समान धन ऊँचो अति मन में॥
नेकहु गनै न शत्रुगन को जनम भरि,
रन में दिखात जैसे सिंह घन बन में।
'राजहंस' हिंदू-कुल तिलक प्रतापसिंह,
तेरे सम वीर और कौन त्रिभुवन में॥

[३६०]

विक्रम में विक्रम धरम-सुत धरम में,
धुंधमार धीर में धनेस वारों धन में।
'मतिराम' कहत प्रियवृत प्रताप में,
प्रबल बल पृथु पारथहिं वारौं पन में॥
शत्रुसाल नंदरैया राव भावसिंह आजु,
मही के महीप सब वारौं तेरे तन में।
नल वारौं नैननि में बलि वारौं बैननि में,
भीम वारौं भुजनि में करन करन में॥

[३६१]

बाजत नगारे जहाँ गाजत गयंद तहाँ,
सिंह सम कीन्हों बीर संगर विहार हैं।
कहै 'मतिराम' कवि लोगन को रीझि करि,
दीने ते दुरद जे चुवत मदवार हैं॥
शत्रुसाल नंदराव भावसिंह तेग त्याग,
तैसे और औनितल आजु न उदार हैं।
हाथिन विदारिवे को हाथ है हथ्यार तेरे,
दारिद विदारिवे को हाथियै हथ्यार हैं॥

[३६२]

औरन के सीरे तेज करिवे को आँच करै,
तेज तेरो भूप दिसि विदिस अपार में।
पर सुख अधिक अँधेरी करिवे को फैली,
जस की उजेरी तेरी जस के पसार में।
राव भावसिंह शत्रुसाल के सपूत यह,
अद्भुत बात 'मतिराम' के विचार में॥
आय के मरत अरि चाहत अमर भयो,
महावीर तेरी खड्गधार गंगधार में॥

[३९३]

जोरिदल जोरि साहिजहाँ साहजादो जंग,
जुरि मुरि गयो रही राव में सरम सी।
कहै 'मतिराम' देव मंदिर बचाये जाके,
बर बसुधा में वेद श्रुति विधि यों बसी॥
जैसे रजपूत भयो भोज को सपूत हाड़ा,
ऐसो और दूसरो भयो न जग में जसी।
गाइन को बकसी कसाइन की आयु सब,
गाइन की आयु सों कसाइन को बकसी॥

[३९४]

बगसि बितुण्ड दये झुंडन के झुंड रिपु,
मुंडन की मालिका दई है त्रिपुरारी को।
कहै 'पदमाकर' करोरन को कोन दये,
षोडसहू दीने महादान अधिकारी को॥
ग्राम दये धाम दये अमित अराम दये,
अन्न जल दीन्हें जगती के जीवधारी को।
दाता जयसिंह दोय बातें तो न दीनी कहूँ,
बैरिन को पीठि और दीठि परनारी को॥

[३६५]

वारिधर ऐसे वारिधर लौं उतंग जिन,
दन्त बीजुरी सों घन बीजुरी विदारे हैं।
मदभरे हरुरत झूमि झूमि थानन में,
मद जलधार मनु नील नग धारे हैं॥
'राजहंस' दिग्गज अपर से अपार बली,
अरि सारदूल जिन खेदि खेदि मारे हैं।
कारे रूपवारे जयश्री सिखरधारे कहूँ,
संगर न हारे ऐसे दुरद तिहारे हैं॥

[३६६]

टापन सों रुण्ड मुण्ड खण्डन बिदारि,
बार कैयक हजार जंग जीते जे जगत हैं।
राजत प्रतच्छ बिन पच्छ के पखेरू पूरे,
पैरि रहे मानो ऐसे चलत लगत हैं॥
अरि करि पेखि ताके माथे पर टेक लेत,
'राजहंस' रूरे वीरता के जे भगत हैं।
वीर वर वलन गरद करिवे के हेतु,
एरे! वर वीर तुरी तोर वलगत हैं॥

[३६७]

भूतन के हेतु रचे रुण्ड के अनेक नग,
भूतपति हेतु रची मुंडन की माल है।
द्विरद तुरग तनु तिनु से लगत लघु,
तूल सो लगत जाको वखतर जाल है॥
अरिकुल हेतु यह काल विकराल पै,
धरम विसतारिनी प्रजा की प्रतिपाल है।
शत्रुन के लोह प्रान खैंचिवे को 'राजहंस',
चुम्बक अचूक तेरे कर करबाल है॥

[३६८]

निकसत म्यान ते मयूखैं प्रलै भानु कैसी,
फारैं तम तोम से गयंदन के जाल को।
लागत लपट कंठ बैरिन के नागिन सी,
रुद्रहिं रिझावै दै दै मुण्डन के माल को॥
लाल छितिपाल छत्रसाल महाबाहु वली,
कहाँ लौं वखान करौं तेरी करवाल को।
प्रति भट कटक कटीले केते काटि काटि,
कालिका सी किलकि कलेऊ देति काल को॥

[३९९]

रहत अछक पै मिटै न धक पीवन की,
निपट जु नाँगी डर काहू के डरै नहीं।
भोजन बनावै नित चोखे खान खानन के,
श्रोनित पचावै तऊ उदर भरै नहीं॥
उगिलत आसो तऊ सुकल समर बीच,
राजै सत्रुसाल कर विमुख परै नहीं।
तेग या तिहारी मतवारी है अछक तौ लौं,
जौ लौं गजराजन की गजक करै नहीं॥

[४००]

भुज भुजगेश की वै संगिनी भुजंगिनी सी,
खेदि खेदि खातीं दीह दारुन दलनि के।
लखतर पाखरीन बीच धसि जात मीन,
पैरि पार जात परवाह ज्यों जलन के॥
रैयाराव चम्पति के छत्रसाल महाराज,
'भूषन' सकत को बखानि यों बलन के।
पच्छी परछीने ऐसे परे वर छीने वीर,
तेरी बरछी ने वर छीने हैं खलन के।

[४०१]

तेरी ललकार अरि हियरे बिदारिवे में,
देत काम कवि 'राजहँस' धनुबान को।
कटक सँहारिवे मैं हौंस तुव वीरन की,
देति है सहाय तुव उन्नत कमान को॥
तरल तुरंग की सुदृढ़ दंतपाँति देत,
नेकु बिसराम तुव तीछन कृपान को।
मरदन मरदि गरद करि डारिवे में,
दुरद दुरद रद्द करत गदान को॥

[४०२]

इन्द्र जिमि जम्भ पर वाड़व सुअंभ पर,
रावण सदंभ पर रघुकुलराज हैं।
पौन परिवाह पर संभु रतिनाह पर,
ज्यों सहस्र बाँह पर राम द्विजराज हैं॥
दावा द्रुम दंड पर चीता मृग झुण्ड पर,
'भूषण' वितुण्ड पर जैसे मृगराज हैं।
तेज तम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर,
त्यों मलेच्छ बंस पर सेर सिवराज हैं॥

[४०३]

पैज प्रतिपाल भूमिभार को हमाल चहुँ,
चक्क को अमाल भयो दण्डक जहान को।
साहिन को साल भयो ज्वार को जवाल भयो,
हर को कृपाल भयो हार के विधान को॥
वीर रस ख्याल सिवराज भुवपाल तुव,
हाथ को विसाल भयो 'भूषन' बखान को।
तेरो करवाल भयो दच्छिन को ढाल भयो,
हिन्द को दिवाल भयो काल तुरकान को॥

[४०४]

आरज धरम तरु सींचन घटा सी दीसी,
नासन जवासी अवरंग मनसा की है।
जामधि पतंग अफजल बहलोल आदि,
यवन अमीरन को दीपक सिखा सी है॥
माँगे बिनु कविन को दारिद मिटाय आसु,
पूरे मनसा की गति कलप लता की है।
'भूषन' गिरा की भूषनीय अरचा की हिंद,
वीरमद छाकी बाँकी नजर शिवा की है॥

[४०५]

वारिधि के कुंभ भव घन बन दावानल,
तरुण तिमिर हू के किरन समाज हौ।
कंस के कन्हैया कामधेनु हू के कंटकाल,
कैटभ के कालिका विहंगम के बाज हौ॥
'भूषन' भनत जग जालिम के सचीपति,
पन्नग के कुल के प्रबल पच्छिराज हौ।
रावण के राम छितिपाल के परसुराम,
दिल्लीपति दिग्गज के सिंह शिवराज हौ॥

[४०६]

तनै छत्रसाल के हठीले राव भावसिंह,
तेरे त्रास दुरजन जात भय भोय से।
कहै 'मतिराम' जाके तेज माँहि मारुत के,
मारतण्डहू के गुन रहे हैं समोय से॥
उड़ि जात भँय जात फूटि फूटि फाटि जात,
मिटि जात मुरि जात सूखि जात गोय से।
तूल से तरोवर से तिनुका से तोयद से,
तिमिर से तारा से तमीपति से तोय से॥

[४०७]

जौ लौं प्रान कंठ में न तौ लौं 'चिरजीव' कवौ,
इसलाम औंजिन को अच्छर उचारिबो ।
जौ लौं मुंड रुण्ड पै संयोग करै करतार,
तौ लौं ये पवित्र सीस पगन न परिबो ॥
चूभै हम दीक्षित सुमंत्र शिवराज तेरो,
बैर में बिधैयन के जीवन विदारिबो ।
तेरे भव्य भाल पै लिख्यो है यही जाने हम,
जौ लौं जग जीबो तौ लौं म्लेच्छन सँहारिबो ॥

[४०८]

जयसिंह सेर हू को कछूना बसात जापै,
यशवंत गेंड़े की तहाँ पै क्या बसाई है ।
जहाँ रहैं छक्के छूटे औरंग गजेन्दहु के,
सूकर सइसताखाँ की कौन धौं बड़ाई है ॥
रैमत से रीछ की चलावै कौन 'चिरजीव',
फैजल मृगाहू जहाँ हिम्मत हराई है ।
कंकन सु कानन ते कौन कौन सूखै प्रान,
सिवराज सिंह जहाँ वसत सदाई है ॥

[४०६]

तेरे अरिगनन को मद झरिजात पेखि,
प्रबल मतंगन के मद के झरन को।
तेरो तेज पेखि अरि साहस विलात इमि,
जिमि बात लागे पुंज सरद घनन को॥
अरि उतसाह उरहीं सो उठि जात सब,
सुनि तुव तरल तरंग बलकन को।
'राजहंस' तेरो बल चलनहिं माहिं,
अरि पानिप सुखात जिमि पानिप सरन को॥

[४१०]

'राजहंस' आयो राजपूत कुलचंद मान,
संग खानपान हेतु हठ करि अरिगो।
पाय सनमान जब लौट्यो लाय सेना साथ,
आतमाभिमान वीर तो हिये लहरिगो॥
बंक होत देखि तुव भृकुटि युगल तब,
संकमान सकल नृलोक खल भरिगो।
पंक गह्यो उदधि कलंक निसिनाथ गह्यो,
रंक गिरि केहरि अतंक सों हहरिगो॥

[४११]

आये दरबार बिललाने छरीदार देखि,
जापता करन हारे नेकहू न मनके।
'भूषन' भनत भौंसिला के आप आगे ठाढ़े,
बाजे भये उमराय तुजुक करन के॥
साहि रह्यो जकि सिवसाहि रह्यो तकि,
और चाहि रह्यो चकि बने ब्यौंत अनबन के।
ग्रीषम के भान सो खुमान को प्रताप देखि,
तारे सम तारे गये मूँदि तुरकन के॥

[४१२]

चकित चकत्ता चौंकि चौंकि उठै बार बार,
दिल्ली दहसति चितै चाह करषति है।
बिलखि बदन बिलखात बीजापूरपति,
फिरत फिरंगिन की नारी फरकति है॥
थर थर काँपत कुतुबसाह गोलकुण्डा,
हहरि हबस भूप भीरैं भरकति है।
राजा सिवराज के नगारन की धाक सुनि,
केते बादसाहन की छाती दरकति है॥

[४१३]

न को हार नह जित्त रहेइ न रहहि सूरवर।
धर उप्पर भर परत करत अति जुद्ध महाभर॥
कहौं कमध कहौं मत्थ कहौं कर चरन अंत दुरि।
कहौं कन्ध वहि तेग कहौं सिर जुट्टि फुट्टि उर॥
कहौं दन्त मंत हय खुर खुपरि कुंभ भ्रसुंडह रुंड सब।
हिन्दवान रान भयभरन मुख गहिय तेग चहुवान जब॥

[४१४]

बाजि बंब चढ़यो साजि बाजि जब कलौं भूप,
गाजी महाराज राजी 'भूषन' बखानते।
चंडी की सहाय महि मंडी तेजताई ऐंड,
छाँडी रायराना जिन दंडी औनि आन ते॥
मंदीभूत रवि रज वंदीभूत हठधर,
नंदी भूतपति भो अनंदी अनुमान ते।
रंकी भूत दुवन करंकीभूत दिगदंती,
पंकी भूत समुद सुलंकी के पयान ते॥

[४१५]

कीन्ह्यो पयान जबै तुव सैननि युद्ध के कारन युद्ध विलासी।
छूटि गये दिगदन्तिन के मद सेस को आवन लागी उसासी॥
लागत लागी अकास चढ़ी पग धूरि घनी अपरै ई धरासी।
ग्रीषम सी सरि छाम भई रज दाम मई सो भई बरखासी॥

[४१६]

झलकति आवैं झुंड झिलम झलानि झंप्यो,
तमकत आवैं तेगवाही औ सिलाही है।
कहै 'पद्माकर' त्यों दुन्दुभी धुकार सुनि,
अकबक बोलैं यों सुनीम औ गुनाही है॥
माधव को लाल काल हू ते विकराल दल,
साजि धायो ये दई दई धौं काह चाही है।
कौन को कलेऊ धौं करैया भयो काल अरु,
कापै यों परैया भयो गजब इलाही है॥

[४१७]

डह डहे डंकन के सबद निसंक होत,
वह बही सत्रुन की सेना ओर सरकी।
हरि केस सुभग घटान की उमण्डि उत,
चंपति को नंद कोप्यो उमंग समर की॥
हाथिन की गंड मारूराग की उमंड त्यों त्यों,
लाली झलकत मुख छत्रसाल वरकी।
फरकि फरकि उठैं बाहैं अस्त्रवाहिबे को,
करकि करकि उठैं करी बखतर की॥

[४१८]

कूरम नरिन्द गात सिंह जू के चढ़े दल,
लंक लौं अतंक बंक संक सरसाती है।
भनत 'कविन्द' बाजैं दुन्दुभी धुकार भारी,
धरा धसमसैं गिरिपाँती डगलाती हैं॥
कमठ की पीठ पर सेस के सहस फन,
दिया लौं दबात उमगात अधिकाती हैं।
फनन ते बाहर निसारि द्वै हजार जीभैं,
स्याह स्याह बाती लौं बुझाती रहि जाती हैं॥

[४१९]

धर धर हालै धाराधर धुन्धकारन सों,
धीर न धरत जे धरैया बलबाह के।
फूटत पताल ताल सागर सुखात सात,
जात हैं उड़ात व्योम विहंग बलाह के॥
झालरि रुकत झलकत झंपी फीलिन पै,
अली अकबर खाँ के सुभट सुराह के।
अरि उर रोर सोर परत धुकार घोर,
बाजत नगारे हैं बरौर सिरमौर के॥

[४२०]

साजि चतुरंग वीर रंग में उमंग चढ़ि,
सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत हैं।
'भूषन' भनत नाद बिहद नगारन के,
नैन नारबिंद दिसा गज को लगत हैं॥
ऐल फैल खैल भैल खलक में गैल गैल,
गजन की ठेल पेल सैल उलसत है।
तारा से तरनि धूरि धारा सो लगत जिमि,
थारा पर पारा पारावार यों हलत है॥

[४२१]

झुकत कृपान मयदान ज्यों उदोत भान,
एकन में एक मनो सुखमा जरद की।
कहै 'कवि गंग' तेरे बल की बयारि लागे,
फूटी गज घटा घन घटा ज्यों सरद की॥
एते मान सोनित की नदियाँ उमड़ि चलीं,
रही ना निसानी कहूँ महि में गरद की।
गौरी गह्यो गिरिपति गनपति गह्यो गौरी,
गौरीपति गह्यो पूँछि लपकि बरद की॥

[४२२]

गरद के झुंड ढक्यो मारतंड मण्डल लौं,
वाने फहराने जब ढिग आये अरिके।
तमकि तमकि तब तरजि तरजि वीर,
विरुझाने खरुझाने जैसे वाघ थरिके॥
मंडली विरचि लीन्हीं कोरन की वाग दीन्हीं,
दौरि के दरेरै जैसे भादों की लहरिके।
जित तित बीजुरी से लोह लगे लहकन,
बरसन बान लागे जैसे मेघ झरिके॥

[४२३]

छूटत कमान और तीर गोला बानन के,
मुसकिल होत मोरचान हू की ओट मैं।
ताही समै सिवराज हुकुम कै हल्ला कीन्ह्यो,
दावा बाँध पर हला वीर भट जोट मैं॥
'भूषन' भनत तेरी हिम्मत कहाँ लौं कहौं,
किम्मत इहाँ लगि है जाके भट झोट मैं।
ताव दै दै मूँछन कंगूरन पै पाँव दै दै,
घाव दै दै अरिमुख कूद परे कोट मैं॥

[४२४]

बाने फहराने घहराने घंटा गजन के,
नाहीं ठहराने राव राने देस देस के।
नग वहिराने अरि नगर पराने सुनि,
बाजत निसाने सिवराज जू नरेस के॥
हाथिन के हौंदा लौं कसाने कुंभ कुंजर के,
भौन को भजाने अलि छूटे लट केस के।
दलके दरारे हू ते कमठ करारे फूटे,
केरा कैसे पात बिहराने फन सेस के॥

[४२५]

घनन के घोर ते घनीन घरनीन ते,
हथ्यारन से गये पखरैतिन बिछोहा से।
कहै 'हरकेस' सार धार की लहर रन,
महल दिलीस परे तलफत रोहा से॥
पञ्च महिदेस वीर तेरे दल दौरहीं सु,
ह्वै गये पहार तुंग पुंगीफल दोहा से।
कायर भो कूर घन घायल कमठ ताकी,
पीठि रहे चपकि फनिन्द फन फोहा से॥

[४२६]

प्रबल प्रचंड बली बैरम से खान खाना,
तेरी धाक दीपन दिसान दह दहकी ।
कहैं कवि 'गंग' तहाँ भारी सूर वीरन के,
उमड़ि अखंड दल प्रलै पौन लहकी ॥
मच्यो घमसान तहाँ तोप तीर बान चलै,
मंडि बलवान किरवान कोपि गहकी ।
तुंड काटि मुंड काटि जोसन जिरह काटि,
नीमा जामा जीन काटि जिमी आनि ठहकी ॥

[४२७]

आनि कै सलाबत खां जोरि कै जनाई बात,
तोरि धर पंजर करेजे जाय करकी ।
दिल्लीपति साह को चलन चलिवे को भयो,
गाज्यो गर्जसिंह को सुनी है बात बरकी ॥
कहै 'बनवारी' बादसाहि के तखत पास,
फरकि फरकि लोथ लोथिन सों अरकी ।
कर की बड़ाई कै बड़ाई बाहिबे की करौं,
बाढ़ि की बड़ाई कै बड़ाई जमधर की ॥

[४२८]

अहमद नगर के थान किरवान लै कै,
नवसेरी खान सों खुमान भिरयो बलतें।
प्यादन सों प्यादे पखरैतिन सों पखरैत,
बखतर वारे बखतर वारे हलतें॥
'भूषन' भनत यों समान घमसान भयो,
जान्यों ना परत कौन आयो कौन दलतें।
समवेश ताके जहाँ सरजा सिवा के बाँके,
वीर जाने हाँके देत मीर जाने चलते॥

[४२९]

'राजहंस' बह्यो यों रुधिर रुंड मुंड धारी,
भेद ना बिसेस रह्यो सरि गिरि गाड़ में।
सुनि न परत वीर भेरी को गंभीर रव,
भयभीत दिग्गज की भीषण चिघाड़ में॥
कायर दबत जाय भाजि भाजि जहँ,
करि रुण्डन सों निरमित असित पहाड़ में।
ओले से सघन गोली गोले खाय वीर छन-
भर झुकि जात भूरे झाड़न की आड़ में॥

[४३०]

पटिगो प्रचण्ड रुंड मुंडन सों छिद्र पुंज,
मृत गजयूथन को पर्वत प्रकटिगो।
कटिगो प्रबल बल तृन सम 'राजहंस',
तोपन को निनद दिगन्त लौं विघटिगो॥
घटिगो निसाचर निकर सों धरा को भार,
जुत्थ जोगनीन को चहूँघा से उचटिगो।
चटिगो सलिल सरितान को सकल,
दिग मंडल अखिल धूमधारा सों लपटिगो॥

[४३१]

मारे गढ़ चक्कवै हमीर चहुवान चक्र,
डारे गोल गरद मिलाय मदमानी के।
लोटैं रेत खेत एकै मोटैं लेत देत एकै,
चोटन समेत लड़े लाड़िले परानी के॥
हारे डर मारे राह बसन हथ्यार डारे,
वाहन सम्हारै कौन भरे परेसानी के।
भागे जात दिली के अलाउद्दीन वारे दल,
जैसे मीन जाल ते परत दिसि पानी के॥

[४३२]

सेवाजी ने जीत्यो है सलोर के समर सुन,
सुन असुरन के सुसीने दरकत हैं।
देवलोक नागलोक नरलोक गावैं जस,
अजहूँ लौं परे खगदन्त खरकत हैं॥
कटक कटक काट कीट से उड़ाये केते
'भूषन' भनत मुख मोरे सरकत हैं।
रणभूमि लेटे अरसेटे सरसेटे परे,
रुधिर लपेटे पठनेटे फरकत हैं॥

[४३३]

जिन फन फूतकार उड़त पहार भार,
कूरम कमठ पीठ कमल विदलिगो।
विखजाल ज्वालामुखी लवलीन होत जिन,
झारन विदारि मद दिग्गज उचलिगो॥
कीन्हों जिन पान पयपान सो जहान कुल,
कूरम उछलि जलसिंधु खलभलिगो।
खागा खग्गराज महाराज सिवराज जू को,
खल दल नाग मुगलद्दल निगलिगो॥

[४३४]

गरुड़ को दावा जैसे नाग के समूह पर,
दावा नाग जूह पर सिंह सरताज को।
दावा पुरुहूत को पहारन के कूल पर,
पच्छिन के गन पर दावा जिमि बाज को॥
'भूषन' अखंड नवखंड महिमंडल में,
तम पर दावा रवि किरन समाज को।
पूरब पछाँह देस उत्तर ते दच्छिन लौं,
जहाँ बादसाही तहाँ दावा सिवराज को॥

[४३५]

मार कर बादसाही खाकसाही कीन्हीं जिन
जेर कीन्हीं जोर सों लै हद्द सब मारे की।
खिस गई सेखी फिस गई सूरताई सब,
हिस गई हिम्मत हजारों लोग सारे की॥
बाजत दमामें लाखौं धौंसा आगे घहरात,
गरजत मेघ ज्यों बरात चढ़ भारे की।
दूल्हो सिवराज भयो दच्छिनी दमामें वाले,
दिल्ली दुलहिन भई सहर सितारे की॥

[४३६]

दुग्ग पर दुग्ग जीते सरजा सिवाजी गाजी,
खग्ग नाचे खग्ग पर रुंड मुण्ड फरके।
'भूषन' भनत बाजे जीत के नगारे भारे,
सारे करनाटी भूप सिंहल को सरके॥
मारे सुनि सुभट पनारे उदभट तारे,
तारे लागे फिरन सितारे गढ़धर के।
गोलकुंडा धीरन के बीजापुर बीरन के,
दिल्ली उर मीरन के दाड़िम से दरके॥

[४३७]

ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहनवारी,
ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहाती हैं।
कन्द मूल भोग करैं कन्द मूल भोग करैं,
तीन बेर खाती थीं वे तीन बेर खाती हैं॥
भूषन सिथिल अंग भूषन सिथिल अंग,
बिजन डुलातीं ते वै बिजन डुलाती हैं।
'भूषन' भनत सिवराज वीर तेरे त्रास,
नगन जड़ाती ते वै नगन जड़ाती हैं॥

[४३८]

सोवत हुतीं जो फूल पाँखुरीन पर अब
रोवति हैं बैठि काँकरीन की चटान में।
भवन भ्रमन ही में मानती जु श्रम बहु;
पातीं विसराम हू न अटवी अटान में॥
भाषै 'राजहंस' ए हो वीरवर! राजसिंह,
ऐसो हाल कीन्हों तुम समर कटान में।
सोई अरिनारी बितवत निज रातैं अब;
महल अटान तजि घूक की घटान में॥

[४३९]

कत्ता की कराकनि चकत्ता को कटक काटि,
कीन्हीं सिवराज वीर अकह कहानियाँ।
'भूषन' भनत तिहूँ लोक में तिहारी धाक,
दिल्ली औ बिलाइति सकल बिललानियाँ॥
आगरे अगारन है फाँदती कगारन छ्वै,
बाँधती न बारन मुखन कुम्हलानियाँ।
सी वी कहे मुख ते गरीबी गहे भागी जाँय,
बीबी गहे सूथनी सुनीवी गहे रानियाँ॥

[४४०]

डाढ़ी के रखैयन की डाढ़ी सी रहत छाती,
बाढ़ी मरजाद जस हद्द हिन्दुआने की।
कढ़ि गई रैयति के मन की कसक सब,
मिटि गई ठसक तमाम तुरकाने की॥
'भूषन' भनत दिल्लीपति दिल धकधका,
सुनि सुनि धाक सिवराज मरदाने की।
मोटी भई चंडी बिन चोटी के चबाय सीस,
खोटी भई संपति चकत्ता के घराने की॥

[४४१]

गढ़न गढ़ी से गढ़ि महल मढ़ी से मढ़ि,
बीजापुर वीर दलपति घुघराई में।
'कालिदास' कोप्यो वीर औलिया अलमगीर,
तीर तरवार गही पुहुमी पराई में॥
बूँद ते निकसि महिमंडल घमंड मची,
लोहू की लहरि हिमगिरि की तराई में।
गाड़ि कै सुझण्डा आड़ कीन्हीं पातसाह,
ताते डकरी चमुण्डा गोलकुण्डा की लराई में॥

[४४२]

अजौं भूतनाथ मुंडमाल लेत हरसत,
भूतनि अहार लेत अजहूँ उछाह है।
'भूषन' भनत अजौं काटे करवालन के,
कारे कुंजरनि परी कठिन कराह है॥
सिंह सिवराज सलहेरि के समीप ऐसो,
कीन्हों कतलाम दिल्ली दल को सिपाह है।
नदी नद मंडल रुहेलन रुधिर अजौं,
अजौं रविमंडल रुहेलनि की राह है॥

[४४३]

खेले खरदूषन सिकार बगरेले जंग,
झेले कुंभकरन कुलेले अनरथ के।
'लछिराम' लै कर कमान अगरेले छेले,
मान मेघनाद महिरावन समत्थ के॥
मेले राम रावन सुहेले कै भुजन फेले,
रेले रंग रुधिर प्रकास लंक पथ के।
कौन को पछेले तैं न समर झमेले बीच,
बाँकुरे बघेले अलबेले दसरथ के॥

[४४४]

कातिल रुकै न चाटै चरबी रुचिर चल,
खलभल पारति खलक जोम लाली को।
'लछिराम' बारमैं असुर मुण्डमाल दै दै,
बरदान पावै मुण्डमाली महाकाली को॥
ज्वाली जंग जौहर जबान जहरीली बढ़ि,
प्रबल अतंक प्रलयानिल प्रनाली को।
संग सान रावरी कृपान राव रामचंद्र,
हेरै क्यों न पन्नगी हजार फनवाली को॥

[४४५]

इत कपि रीछ उत राच्छसन ही की चमू,
डंका देत बंका गढ़ लंका ते कढ़ै लगी।
कहै 'पदमाकर' उमंड जग ही के हित,
चित्त में कछूक चोप चाव की चढ़ै लगी॥
बानन के बाहिबे को कर में कमान कसि,
धाई धूर धार आसमान में मढ़ै लगी।
देखतै बनी है दुहूँ दल की चढ़ा चढ़ी में,
राम दृग हू पै नेक लाली जो चढ़ै लगी॥

[४४६]

लोक लच्छ देव फेन फैलत फनी के मुख,
धँसि गई धरा धराधर उर धरके।
हरके रहे न भानु भरके तुरंग कहुँ,
भाजि चले वाहन विरंचि हरिहर के॥
झाँपति नगन झुकि कंपित भुवन हल
कंपित दुवन गुन खैंचे रघुबर के।
दन्ती दबे आसन सकाने पाक सासन,
न कोऊ थिर आसन सरासन के करके॥

[४४७]

इतै रमानंद उतै रावन को नंद बढ़ी,
मारयो बलन्द ज्यों धनंजय निसाद को।
दुहू रनधीर दुहूँ धरम धुरीन कान
कुंडल कोदंड चंड मंडली विषाद को॥
भूपरन भूपर दिसान विदिसान पर,
छाय सुरखंड छोर मंडित निनाद को।
यानावली व्योम परे वानावली छकी देखि,
वानावली लच्छन कुमार मेघनाद को॥

[४४८]

सबल विसाल दंडरूपी रणभूमि मध्य,
मंडित ललाई वर विक्रम धकूत की।
सोभित बसल सुभ्र सुजस अनूप मंजु,
राम नाम चित्र चारु उपमा अभूत की।
पवन उमंग ते उतंग फहरात भूरि,
दूरि ते दिखात पूरि पूर गुन नूत की॥
'रसिकबिहारी' सुखकारी भारी भीति हारी,
जीति की धुजा है कै भुजा है पौन-पूत की।

[४४९]

समर समुद्र अवगाहैं वर बली राम,
समरस छाहैं नरदेव सन्त जन की।
उभय उमाहैं खंभ सेनप सुकंठ हेत,
विरद उमाहैं भरी मानद लखन की॥
'लछिराम' राम अनुसासन कलाहैं कल,
वगर विधंसिनी असुर खलनन की।
दान सनमान सान कलपलता हैं वीर,
हनूमान वाहैं ये पनाहैं त्रिभुवन की॥

[४५०]

मान की भरन भूरि भान की धरन देव,
प्रान की सरन वेगि बरन दिसान की।
सान की हरन जातुधान की दरन,
उद्धवान की धरन ढार ढरन सुबान की॥
बान की बरन पूरी आन की अरन ओज,
नित्य प्रति 'रसिकबिहारी' सुखदान की।
दान की करन जानकीस जानकीस जान,
हद्द हठ हिम्मत हठीले हनुमान की॥

[४५१]

समर समुद्र महारुद्र लौं भवान कर,
काल विकराल राकसन की धनी को है।
पुरुष प्रवीन परमानँद परमहंस,
'लछिराम' अस त्यों रतन अनी को है॥
बलवंत विरद महातम अनंत फैल्यो,
सिरमौर सेतराम कौसल-धनी को है।
अवतार आनंद उदार दल को सिंगार,
कपि कुल कलस किसोर अंजनी को है॥

[४५२]

वारि टारि डारौं कुंभकर्णहि विदारि डारौं,
मारौं मेघनादै आजु यों बल अनंत हौं।
कहै 'पद्माकर' त्रिकूट ही को ढाहि डारौं,
डारत दुरेई यातुधानन को अंत हौं॥
अच्छहि निरच्छ करि रुच्छहि उचारौं इमि,
तो सुतिच्छ तुच्छन को कछुवै न मंद हौं।
जारि डारौं लंकहि उजारि डारौं उपवन,
फारि डारौं रावण को तो मैं हनुमन्त हौं॥

[४५३]

कीजै न कोप कृपानिधि राम जो तो गढ़ लंक उठाय मैं लाऊँ।
कोउन को भय शंक न मानिके रावण-नारि पै पानी भराऊँ॥
लच्छ कहैं कविराज समच्छ विपच्छ जो शोणित सिन्ध चलाऊं।
माथे मरोर धरों दसकंध के, नाथ के हाथ के पान जो पाऊँ॥

[४५४]

कर वान सिखीन असेस समुद्रहिं सोखि सखा सुखही तरिहौं।
पुनि लंकहि औटि कलंकित कै फिरि पंक कलंकहि की भरिहौं॥
भल भूँजिकै राकस खाकस कै दुख दीरघ देवन को हरिहौं।
सितकंठ के कंठन को कठुला दसकंठ के कंठन को करिहौं॥

[४५५]

सोहैं पत्र ओड़े जे न छाड़े सीस संगर के,
लंगर लंगूर उच्च ओज के अतंका में।
कहै 'पदमाकर' त्यों हुँकरत फुंकरत,
फैलत फुलत फाल बाँधत फलंका में॥
दूत रघुवीर के समीर के तनै के संग,
तारी दै तड़ातड़ के तड़के तमंका में।
शंका दै दसानन को हंका दै सवंका वीर,
डंका दै विजै को कपि कूदि परयो लंका में॥

[४५६]

धमक धरा में धाक हाँक पलकी सी फिरै,
धरत न धीर सुने बैरिन पैं जरसों।
मंडन महान राजे मारतंड 'लछिराम',
खण्डन करत असुरावली अजर सों॥
अकथ अतोल वल विरद बखाने कौन,
आनंद असंग रस वीर भीन जरसों।
संग रंग राम रघुवीर जंग साँकरे में,
वजरंग जंग वाज वजरे वजर सों॥

[४५७]

नाचि नाचि कूदि कूदि किलकि किलकि कढ़ि,
उछरि उछरि राह लेत आसमान की।
वलकि वलकि वल करि करि छरि दरि,
छरत छरेद भेद कृत गति भान की॥
रुण्डन सों रुण्ड अरु मुण्डन सों मुण्ड करि,
भार भट झुण्डन घुमण्ड मारु घान की।
'शावस' कहत राम हिय हरसात जात,
देखो वीर लखन लड़नि हनुमान की॥

[४५८]

जो दससीस महीधर ईस को बीस भुजा खुलि खेलन हारो।
लोकप दिग्गज दानव देव सबै सहमें सुनि साहस भारो॥
बीर बड़ो बिरुदैत बली अजहूँ जग जानत जासु पँवारो।
सो हनुमान हन्यो मुठिका गिरिगो गिरिराज ज्यों गाज को मारो॥

[४५९]

अंजनि तात दई जव लात गिर्यो हहरात भगात सँभार्यो।
फेरि सचेत उठ्यो रणधीर भई अति पीर सरीर न टार्यो॥
'कृष्ण' प्रसंसि कह्यो मनुजाद इजाद है पौरुप कीस तिहारो।
देखि हिये सकुचे हनुमान न प्रान गयो धिकमान हमारो॥

[४६०]

गहि मन्दर बन्दर भालु चले सो मनो उनये घन सावन के।
तुलसी उत झुंड प्रचंड झुके झपटे भट जे सुर दावन के॥
बिरुझे बिरुदैत जे खेत अरे न टरे हठि बैर बढ़ावन के।
रन मारि मची उपरी उपरा भले वीर रघुप्पति रावन के॥

[४६१]

राम सरासन ते चले तीर, रहे न सरीर, हड़ावरि फूटी।
रावण धीर न पीर गनी लखि लैकर खप्पर जोगिनि जूटी॥
सोनित छीट-छटानि जटे 'तुलसी' प्रभु सोहैं महाछवि छूटी।
मानौ मरक्कत सैल विसाल में फैलि चलीं वर वीर वहूटी॥

[४६२]

वारहों विभाकर तें बाड़व अनल ज्वाली,
बाड़वा अनल तें फनाली सेसवर में।
सेसफन ज्वाला सों लखन कन्त बान, बान
लखन ते कालकूट कातिल गहर में॥
'लछिराम' कालकूट हू ते ब्रह्मफाँस,
ब्रह्मफाँस ते प्रलै प्रकास वासव वजर में।
वासव वजर तें कहर कालदण्ड,
कालदण्ड ते कहर राम रावन समर में॥

[४६३]

चली ह्वै कै विकराल महाकाल हू की काल
किये दोऊ दृग लाल धाई रन समुहान।
जहाँ क्रुद्ध ह्वै महान युद्ध करि घमसान,
लोथ लोथ पै लदान तड़पी ज्यों तड़ितान॥
जहाँ ज्वाल कोटि भान के समान दरसान,
जीव जंतु अकुलान भूमि लागी थहरान।
तहाँ लागे लहरान निशिचर हू परान,
वहाँ कालिका रिसान झुकि झारी किरपान॥

[४६४]

जेहि सर मधु मुर सुरदि महासुर मर्दन कीन्हेउ।
मारेहु कर्कस नरक संख हति संख जु लीन्हेउ॥
निष्कंटक सुर कटक करयो कैटभ वपु खण्ड्यो।
खरदूषन त्रिसिरा कबन्ध तरुखण्ड विहण्ड्यो॥
सह कुंभकर्न ज्यहि संहरयो पल न प्रतिज्ञा ते टरयो।
तेहि बान आन दसकंठ के कंठ दसौ खंडित करयो॥

[४६५]

आझरी की झोरी काँधे आँतन की सेल्ही बाँधे
मूड़ के कमंडल खपर किए कोरि कै।
जोगिनी झुटंग झुंड झुंड बनी तापसी सी,
तीर तीर बैठीं सो समर सर खोरि कै॥
सोनित सो सानि सानि गूदा सतुआ से,
प्रेत एक पियत बहोरि घोरि घोरि कै।
तुलसी बैताल भूत साथ लिए भूतनाथ,
हेरि हेरि हँसत हैं हाथ जोरि जोरि कै॥

[४६६]

गंगा राजरानी को सुभट अभिमानी भट,
भारत के वंश में न भीषण कहाऊँ मैं।
जो पै शर चोटन चपेटि रथ पारथ को,
लोकालोक पर्वत के पार न वहाऊँ मैं॥
'मिश्र जू' सुकवि महिमंडल में घूमि घूमि,
खाँड़ौ दाहि दाहि दिगमंडल दहाऊ मैं।
कहत पुकार ललकारि महाभारत मैं,
देखौ जो न शस्त्र आजु हरि को गहाऊँ मैं॥

[४९७]

अरजुन आपनी पताका को सभारौ सुनौ,
मेरे ना भरोसे रहौ अब सिर थापी के।
आगे मैं सहे हैं रामचंद्र के समर, बान
अगिनि समान दसग्रीव सिर जापी के॥
पुनि कुंभकरन बली के बलवंत सहे,
'तोषनिधि' आगे मेघनाद महापापी के।
अब तौ या भारत में आरत सहे न परैं,
बान विषहा ये रविनंदन प्रतापी के॥

[४९८]

भारत समर महाभारत सुभट भीर,
जुरे 'तोषनिधि' कहै पारथ प्रहारे से।
मारे हारे कौरव प्रचंड खंड खंडेवर,
बंडे युद्धवीर ईरखा के अनुसारे से॥
फैलि फटि विसि फाटि फूटि दबि टूटि लूटि,
प्रतिहत भए भट परम पसारे से।
पोटरी से पट से पटीर से पटंबर से,
पाट से पटा से खटपाटी से पिटारे से॥

[४६६]

शक्र जो न माँगि लेता कुंडल कवच पुनि,
चक्र जो न लीलतो धरनि रथ धारतो ।
कुंती जो न सरन समेटि लेति द्विजराज-
साप जो न होतो सल्य सारथी निबाहतो ॥
ताषनिधि' जो पै प्रभु पीतपट वारो बनि,
सारथीपने को कछु कारज न सारतो ।
तौ तौ वीर करन प्रतापी रविनंदन,
सु पाँडु सुत-सेना को चबेना करि डारतो ॥

[४७०]
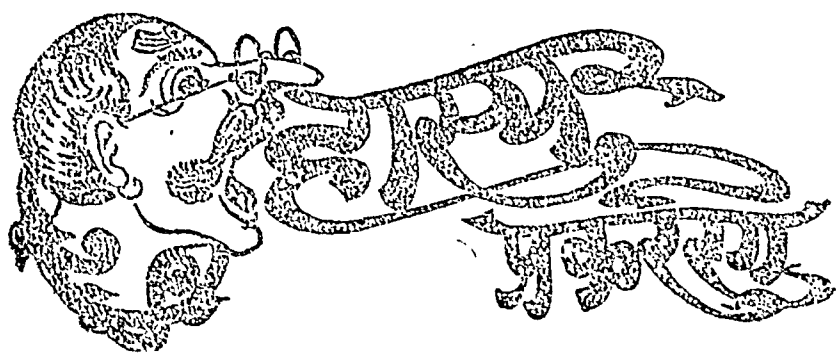
परचण्ड वली खटकीर अहैं, लखिकै भय होत महीसन के।
जिनको भय मानि रमापति भागि कै, सेज पै सोवैं अहीसन के॥
विधि जाय के पंकज माहिं दुरे हिमवास सुहाय गिरीसन के।
'कवि विष्णु' भनै खटिया में छिपैं खुले खून करैं दस बीसन के॥

[४७१]

बेटा बिगरै बाप सों करि तिरियन सो नेहु।
लटापटी होने लगी मोहि जुदा करि देहु॥
मोहि जुदा करि देहु घरी माँ माया मेरी।
लैहों घर अरु द्वार करौं मैं फजिहति तेरी॥
कह 'गिरधर कविराय' सुनौ गदहा के लेटा।
समय परयो है आय बाप सों झगरत बेटा॥

[४७२]

कौआ कहत मराल सों, कौन जाति को गोत।
तोसों बदरूपी महा, कोउ न जग में होत॥
कोउ न जग में होत, कुटिल मैले मल खाने।
ऊसर बैठि अचार सबै मरजाद नसाने॥
कह 'गिरधर कविराय' कहाँ ते आयो हौआ।
धन्य हमारो देस जहाँ, सज्जन जन कौआ॥

[४७३]

महुआ नित उठि दाख सों, करत मसलहत आय।
हम तुम सूखे एक से, हूजत हैं रस राय॥
हूजत हैं रस राय, विलग जिन जिय में आना।
मधुराई में अधिक नेक नहिं अंतर मानो॥
कह 'गिरधर कविराय' कहत साहिब सो रहुआ।
तुम नीची कुल बेलि बृच्छ हम ऊँचे महुआ॥

[४७४]

साँई घोड़न के अछत, गदहन पायो राज।
कौआ लीजत हाथ में, दूर कीजियत बाज॥
दूर कीजियत बाज, राज ऐसो ही आयो।
सिंह कैद में कियो, स्यार गजराज चढ़ायो॥
कह 'गिरधर कविराय' जहाँ यह बूझ बड़ाई।
तहाँ न कीजै साँझ भोर ही चलिए साँई॥

[४७५]

अमला आँख दिखावहीं, जब लौं मिलै न घूस।
रुसवत पाये भीतरे, काम करें ज्यों मूस॥
काम करैं ज्यों मूस, हाल कोई नहिं जानै।
लिखैं और इजहार, असामी और बखानै॥

कपटी बकुला बरन, बाँधिकै बैठे समला।
परधन हरन प्रवीन, बड़े अपकारी अमला॥

[४७६]

पल पल बाँधे पाग, बसन अति उज्वल राखैं।
बहुरि जाय बाजार, पान चाभैं प्रति भाखैं॥
रूपवंत गुनवंत नजर कोउ नाहिंन आवैं।
जाहि ताहि निज सुजस आप बर जोर सुनावैं॥
निज छाँह निरखि राजी रहत, पुनि देखत दर्पन सही।
मन रहत तेल अरु मैन में, जबहिं वेस उभरत नई॥

[४७७]

'हँस' कहाँ मिलिहैं अब तो बर भक्ति के भाव वे पूरब वारे।
तीरथ में छहरात न शाँति सदा घहरात हैं लोभ नगारे॥
मंदिर के दृढ़ जाल तनाय तहाँ बहु ब्याध पुजारी निहारे।
फाँसत कामिनी कंचन की चिरियाँ धरि मूरति के वर चारे॥

[४७८]

दान औ मान को जानै नहीं सब दूर भई गुन की परिपाटी।
हैं बिभिचारी अचारी बड़े जिन लागे नहीं दरबार में साटी॥
नारि कबारी कहारनी राखत इष्ट विरोधी कुबुद्धिन राटी।
लोक में सोई बड़े भगता धरे कंठ में काठ कपार में माटी॥

[४७९]

बड़े व्यभिचारी कुलकानि तजिडारी,
निज आतमा विसारी अघ ओघ के निकेत हैं।
जटा सीस धारैं मीठे बचन उचारैं न्यारे,
न्यारे पंथ पारें सुभ पंथ पीठ देत हैं ॥
गावत कहानी वेद भेद की न मानी,
ऐसे उमर कहानी होत आए वार सेत हैं।
कवि ठकुराई में बिराग की बड़ाई करैं,
माई माई करिके लुगाई करि लेत हैं ॥

[४८०]

खाय गईं खसम भसम को रमाय लाईं,
संपति नसाय दुहूँ कुल में विघन की।
छाई भई साधुन की पाँति को पवित्र कीन्हों,
माई जी कहाय कै लुगाई बनीं जन की ॥
कासमीरी छोहरे दिखाय परैं कहूँ तो,
न पायँ धरैं भूमै न हवास रहैं तन की।
पाय पाय पूतन वहाय दीन्हीं सोतन में,
हाय गति कहाँ लौं वखानौं भगतिन की ॥

[४८१]

तिय तन चुंबक में लोह से लगत दौरि,
हरि ध्यान रंग माँह उजहे कपूर से।
ज्ञान घन दुँदुभी बजत काँपै कायर से,
नारि नैन नावक विसिख सहैं सूर से॥
स्वारथ के बातन में सावधान रोज रोज,
लाये परमारथ में पकरे मजूर से।
काम की कथान सो पियूष सो पियत फिरैं,
हरिगुन गान तजैं माहुर धतूर से॥

[४८२]

म्यान सों कलमदान कर तें निकारि तामें,
स्याही जल विष में बुझाई डार डार है।
चारु युक्ति जौहर जगावत सनेह संग,
अकिल अनेक तामें सकिल सुढार है॥
'जुगुलकिशोर' चलै कागद धरा पै
धाय, धारै ना दया को नेक लागे वारपार है।
पाय के गवार गाइ साफ़ करै साइत में,
मुनसी कसाई की कलम तरवार है॥

[४८३]

ऐंठे से रहत बैन सूधे ना कहत,
हठ आपनी गहत करै काहू को न पास है।
म्याने कर डील राखे आँख में न सील राखे,
रन में असील ते चलत चाल रास है॥
धन्य यह बाना 'कवि राम' खूब जाना इन्हैं,
जित बतयाना वे नसानी जग खास है।
पावैं आठ आना तौहू खाना को उदास फिरैं,
बाँधे खपरा से चपरासी चपरास हैं॥

[४८४]

काँच की उतारै चुरी कंचन की धारै प्रेम,
और सों पसारै दिया बारै चारि बाती को।
अंजन लगावै उपपति को बुलावै सैन,
रूप दरसावै जैसे महामदमाती को॥
'राम कवि' नारिन में बैठिकै किलोलैं करै,
सब ही सों बोलै लाज खोलै ठोंकि छाती को।
खाय खोवा खाँड़ रहै सब ही सों चाँड़,
सदा कहिबे को राँड़ कान काटै अहिवाती को॥

[४८५]

होत ही प्रात जो घात करै नित, पारै परोसिन सों कल गाढ़ी।
हाथ नचावत मुंड खुजावत, पौर खड़ी रिस कोटिक बाढ़ी॥
ऐसी बनी नख ते सिख लौं, 'ब्रजचंद्र जू' क्रोध समुद्र तें काढ़ी।
ईंटा लिए पिय को मग जोवति, भूत सी भामिनि भौन में ठाढ़ी॥

[४८६]

पावतो अहार मन भावतो अधिक,
एक सेर अरहरि की जु दालि और दलतो।
चूल्हो न जरायो तापै माँगत है भोजन,
सरम नाहिं तोको करि कारो मुख टलतो॥
तेरी हौं गुलाम कैधों मेरो तैं गुलाम ?
करु काम, न अराम को इहाँ है फल फलतो।
कहत लुगाई ऐसे पतिपशु मेरे,
तौ पै लादती गरभ जो पै मेरो वस चलतो॥

[४८७]

भूत सी भयावनी भुजंग सी पयावनी औ,
चूल्हे की सी लावनी ज्यों नील में रगाई है।
हाथी कैसे खाल चूढ़े भालू कैसे वाल,
मनो विधि ते विधाता आवनूस की बनाई है॥

चौदस अमावस सी अधिक लसति स्याम,
कहै 'कवि गोविंद' ज्यों हवसी की जाई है।
तवा तिमिरावली मसी तैं महा कालिमा तू
ऐसो रूप सुंदर कहाँ तें लूटि लाई है॥

[४८८]

पेट पिराय तो पीठहिं टोवत, पीठ पिराय तो पाँय निहारें।
द पुरिया पहिले विष की, पुनि पीछे मरे पर रोग विचारें॥
बीस रुपैया करैं कर फीस न देत जवाब न त्यागत द्वारें।
भाषैं 'प्रधान' ये बैद कसाई हैं, दैव न मारै तो आपही मारें॥

[४८९]

गोरे गोरे भुजदंड, दीरघ विसाल नैन,
बदन रसाल जाके सुखमा बखाने हैं।
'बेनी कवि' कहै जाके अजब जलूस सोहै,
हाजिर हुजूर पूर पुहुमी खजाने हैं॥
ऐसे नर नाहर को देखिवे को चित्त भयो,
ताते कवि आस पास आनि ठहराने हैं।
हम मरदाने जानि बिरद बखाने, पर-
द्वारे चोपदार कहैं साहिब जनाने हैं॥

[४६०]

पाजिन को पृथु से, प्रियव्रत से पातुर को,

भाड़न को भोज से हमेसा मौज कीबे को ।

कुटनी को करन, कलावंत को कल्पतरु,

वलि सम भए बहुरूपिन के जीवे को ॥

परम उदार डाँड़ लाखन के भरिबे को,

दारू को विशेष दाम रात-दिन पीवे को ।

खरच की तंगी है भुआल को सदा ही,

एक ईश्वर निमित्त औ कबीश्वर के दीबे को ॥

[४६१]

दृग अँधियारी छाई-सीस सित केस भए,

नित ही शिकायतें है पचन अनाज की ।

तऊ रंजि अंजन लगाय के खिजाब चलै,

ढूढ़त किताब दवा थंभन दराज की ॥

जात अबलागन को देखत हैं घूरि घूरि,

हाय ना जवानी रही बात बेइलाज की ।

सोक साज वाज की मिटी न राज काज की सा,

मोज है हनोज हू मनोज महराज की ॥

[४९२]

बारी औ कहार नाऊ धीमर कुहार,
काछी खटिक दसौंधी ये हुजूर को सुहात हैं।
कोल गोड़ गूजर अहीर तेली नीच सबै,
पास के रहे ते महा ऊँचे भए जात हैं॥
'बुधसेन' राजन के निकट हमेस बसैं,
कूकर बिचार कहाँ गुन अधिकात हैं।
दूर ही गयन्द बाँधे दूर गुनवान ठाढ़े,
गज औ गुनी को कहूँ मोल घटि जात हैं॥

[४९३]

हाव भाव विविधि दिखावै भली भाँतिन सों,
मिलत न रति दान जोग संग जामिनी।
सुबरन भूषन सँवारे ते विफल होत,
जाहिर किये तें हँसैं नर गजगामिनी॥
रहै मनमारे लाज लागत उघारे बात,
मन पछितात न कहत कहूँ भामिनी।
'देनी कवि' कहैं बड़े पापन तें होत दोऊ,
सूम को सुकवि औ नपुंसक को कामिनी॥

[४६४]

दाख पछितात अरु अम्ब रहि जात,
कंद मंद सों लखात देखि ताकी सुद्धताई है।
मिसिरी से खाँचे तेऊ साँचे ना वखानि सकै,
बसि कै कुसंग पुनि एती नफ़ा पाई है॥
ऊख औ पियूष दोऊ समता न करि सकैं,
कहैं 'शिवराम' मिथ्या विधि ने बनाई है।
झूठे की झुठाई में मिठाई जौन पाई,
तौन मेवा में मिठाई ना मिठाई में मिठाई है॥

[४६५]

गावत बाँदर बैठ्यो निकुञ्ज में ताल समेत मैं आँखिन पेखे।
तें जो कह्यो यह सो सुनि कै अपने मन में इन साँच न रेखे॥
यामे न झूठ कछू 'रघुनाथ' है ब्रह्म सनातन माया के लेखे।
गाँव में जाय के मैं हूँ बछानि को बैलहिं वेद पढ़ावत देखे॥

[४६६]

जैसे पृथुराज पर काज के जहाज भये,
तैसे पर दोप सुनिवे को सत कान हैं।
कहत बड़ाई प्रभुताई की सहस फणि,
ऐसी विधि औगुन निकाई के सुजान हैं॥

सुख पर मिलैं आय पीछे बुरी कहैं जायँ,
कीजे गुण मेटन को राम कैसे बान हैं।
गज की अवाज सुनि आये ज्यों गरुड़ छाँड़ि,
तैसे पर निन्दा सुनिबे को सावधान हैं॥

[४९७]

छेद हैं हजारन हजारन लगी है पाती,
मैले गंदे चीकटे सुचीथरा लपेटे हैं।
कारी कारी हाँड़ी फूटे फाटे से पुराने दोना,
आपनें सिराने बड़े जतन समेटे हैं॥
'अम्बिका प्रसाद' कहै दूर सों बचावै ऐसे,
बाढ़े बार भालू कैसे धूर में धुरेटे हैं।
गाड्यो धन जिमींमें बिछाय राखी तामें खाट,
तापै रहैं लेटे ऐसे सूमन के बेटे हैं॥

[४९८]

आध पाव तेल में तयारी भई रोसनी की,
आध पाव रुई में पोसाक भई वरकी।
आध पाव छाले को गिनौरा दियो भाइन को
माँगि माँगि लायो है पराई चीज घर की॥

आधी आधी जोरि 'बेनी कवि' की बिदाई कीन्ही,
ब्याहि आयो जबते न बोलै बात थिरकी।
देखि देखि कागद तबीयत सुमांदी भई,
सादी काह भई बरबादी भई घर की॥

[४९९]

बारह मास लौं पथ्य कियो षटमास लौं लंघन को कियो कैठो।
'माधो' भनै नित मैल छोड़ावत खाल कढ़ै जनु जात है ऐंठो॥
जो कबहूँ बहू देति खवाय तो कै कर डारत सोच में पैठो।
मूँड़ मुड़ाय कै मूछ घोटाय कै फस्त खोलाय तुला चढ़ि बैठो॥

[५००]

दाम की दाल छदाम के चाउर घी अँगुरीन लैं दूरि दिखायो।
दोनो सो नोन धर्‌यो कछु आनि, सबै तरकारी को नाम गनायो॥
विप्र बुलाय पुरोहित को अपनी विपता सब भाँति सुनायो।
साहजी आज सराध कियो सो भली विधि सों पुरखा फुसलायो॥

[५०१]

सूम के सुखोने बीच चिरिया चलाई चोंच,
आप उड़ि गई प्रान वाहू के उड़ाय के।
करि हाय हाय गिरि पर्‌यो मुख बाय,
बात कही ना सकाय बहू नाक दाब्यो आय के॥

वाके घर पर्‍यो सोर काग सुने करैं रोर,
ऐरे दग़ा बाज़ नहीं गयो कछू खाय के।
धान धर लीनो और मडुवा सहेज लीनो,
उरद परेरुयो तब पैठो प्रान आय के॥

[५०२]

सूम पतिनी सो कहै सुन सपने की बात,
अकथ कहानी रात बरसत हारो तो।
चानी में खरो तो जिमि गाड़ि के धरो तो,
ताहि मन में बिचारि खोदि हाथ को निकारो तो॥
कहै 'कविराम' आयो कवि एक ताही समै,
कवित्त पढ़ो तो हौं तो दीबो अनुसारो तो।
होतो कुल दाग बड़े जेठन के भाग अरे,
जागि ना परो तो मैं रुपैया दिए डारो तो॥

[५०३]

उर्द के पचाइबे को हींग अरु सोंठ जैसे,
केरा के पचायबे को घिव निरधार है।
गोरस पचायबे को सरसो प्रबल दंड,
आम के पचाइबे को नीबू को अचार है॥

'श्रीपति' कहत परधन के पचायबे को,
कानन छुवाय हाथ कहिबो नकार है।
आज के जमाने बीच राजा राव सबै जानैं,
रीझ के पचाइबे को वाह वा डकार है॥

[५०४]

जामे दो अधेली, चार पावली, दुअन्नी आठ,
तामें पुनि आना सही सोरह समात हैं।
बत्तिस अधन्नी जामें, चौंसठ पईसा होत,
एक सौ अठाइस अधेला गुन मात हैं॥
जुग सत छप्पन छदाम तामें देखियत,
दमरी सु पाँच सत बारह लखात हैं।
कठिन समैया, कलिकाल को कठिन दैया,
सलग रुपैया भैया का पै दियो जात है॥

[५०५]

आजु जो कहैं तो आठ मास में न लागे ठीक,
कालिह जो कहैं तो मास सोरह चलावहीं।
पाँच दिन कहे पाँच बरस बिताय देहिं,
पाँच वर्ष कहैं तो पचास पहुँचावहीं॥

भाखत 'प्रधान' जो पै तऊ पै न त्यागै द्वार,
आपन लजात फेर वाहू को लजावहीं।
ऐसे सत्यभाषी सरदार हैं देवैया जहाँ,
काहू को पवैया तहाँ जीवत लौं पावहीं॥

[५०६]

देवता को सुर औ असुर कहैं दानव को,
दाई को सुधाय दार दैतिये लहत हैं।
दर्पन को आरसी त्यों दाखका मुनक्का कहैं,
दास को खवास आम खास विचरत हैं॥
देवी को भवानी और देहरा का मठ सदा,
याही विधि 'घासीराम' रीति अवरत हैं।
दाना को चवैना दीपमाला को चिराग जाल,
देवे के डरन कवौं दद्दाना कहत हैं।

[५०७]

पौढ़ि कै किवारे देत घरै सवै गारी देत,
साधुन को दोष देत प्रीति ना चलति हैं।
माँगन को ज्वाव देत वाल कहे रोय देत,
लेत देत भाँजी देव ऐसे निवहति हैं॥

बागेहू के बंद देत बाहन की गाँठ देत,
पर्दन की काँछा देत काम में रहति हैं।
येते पै सबैई कहैं लाला कछु देत नाहिं,
लाला जी तो आठों याम देत ही रहति हैं॥

[५०८]

तिमिरलंग लई मोल चली बाबर के हल के।
रही हुमाऊँ साथ गई अकब्बर के बल के॥
जहाँगीर जस लियो पीठ को भार छुड़ायो।
साहजहाँ करि न्याव ताहि पुनि माँड चटायो॥
बल रहित रह्यो पौरुष थक्यो भगी फिरत बन स्यार डर।
औरंगजेब अतिसै बली सो दीनी कविराज कर॥

[५०९]

घोड़ा गिरयो घर बाहर ही, महराज कछू उठवावन पाऊँ।
टेढ़ो परो बिच पैंड़ोई माझ, चलै पग एक न कैसे चलाऊँ॥
होय कँहारन को जु पै आयसु, डोली चढ़ाय यहाँ तक लाऊँ।
जीन धरौं कि धरौं तुलसी मुख, देउँ लगाम कि राम कहाऊँ॥

[५१०]

देखत धोती न धोवे को लेत कि पानी में डारे मैं पाऊँ न पाऊ ।
थीगरी ऊपर थीगरि राजत ताहू पै खोंपें लगी हैं अगाऊ ॥
आप समान उदार धनी लहि और के द्वारे मैं जात लजाऊँ ।
जो पै मया करि दीन्हों झंगा तो पै सूजी तगा दोनों साथहिं पाऊ ॥

[५११]

कारीगर कोऊ करामात तें बनाय ल्यायो,
लीनी दाम थोरी जान नई सुघरई है ।
रायजू का रायजू रजाई दीन्ही राजी ह्वै कै,
सहर में ठौर ठौर सोहरत भई है ॥
'बेनी कवि' पाय के अवाय घरी द्वैक रहे,
कहत बनै ना कछू ऐसी गति ठई है ।
साँस लेत उड़िगो उपरला भितरला हू,
दिना द्वैकी बाती हेतु रुई रह गई है ॥

[५१२]

चोंटी की चलावे को मसा के मुह आप जाय,
साँस की पवन लागे कोसन भगत है ।
ऐनक लगाए मरु मरु कै निहारे परै,
अनु परमानु की समानता खगत है ॥

'बेनी कवि' कहै और कहाँ लों बखान करों,
मेरे जान ब्रह्म को विचारबो सुगत है।
ऐसे आम दीने दया राम मन मोद करि,
जाके आगे सरसों सुमेरु सो लगत है॥

[५१३]

सीय पायो दुख अरु पारबती बंझा तन,
नृग ने नरक पायो बेस्या गति पाई है।
वेनु भये सुखी हरिचन्द नृप दुखी भये,
बलिको पताल, स्वर्ग पूतना पठाई है॥
शंकर को विष विषधर को दियो है अंग,
पाण्डव पठाये जहाँ विष अधिकाई है।
हाल ठकुराइसि में बोलिबो अचम्भो यह,
ईश्वर के घर ते अपेलि चलि आई है॥

[५१४]

चन्दन में फूल और ऊख में न दीन्हें फल,
बड़े बड़े कण्टक गुलाबन के डार की।
कोयल सुबानी दै उन्हार कीन्ही कागन की,
छोटी छोटी अँखियाँ बनाई गज भार की॥

सोने में सुगंध नाहीं हीरा विष मूल कीन्हो,
आग निस धूम गति थिर नहीं पारे की।
भाषैं 'सीताराम' हेर हेर एक आनन ते,
कौन कौन चूक चतुरानन विचारे की॥

[५१५]

गृहिन दारिद्र, गृह त्यागिन विभूति दियो,
पापिन प्रमोद पुण्यवन्तन छलो गयो।
असित ग्रहेस कियो सनि को सुचित,
लघु व्यालन सुछंद सेष भारन दलो गया॥
फेरन फिरावत गुणीन नित नीच द्वार,
गुणन विहीन तिन्हैं बैठे ही भलो गयो।
कहाँ लौं गिनाऊँ दोष तेरे एक आनन सों,
नाम चतुरानन पै चूकतो चलो गया॥

[५१६]

आपु को वाहन बैल वली वनिताहू को वाहन सिंहहिं पेखिकै।
मूसे को बाहन है सुत एक सु दूजो मयूर के पच्छ विशेषिकै॥
भूषन हैं कवि चैन फनिंद के वैर परे सब ते सब लेखिकै।
तीनहु लोक के ईश गिरीश सुयोगी भए घर की गति देखिकै॥

[५१७]

चतुरानन बाप पचानन आप, षड़ानन बेटो गजानन भाई।
सेवक एक दशानन सो, सहसानन अंग रहे लपटाई॥
गोद में लीन्हे वरानन को, अरु शीश सितानन है सुखदाई।
काहे न होय सदा सुखिया वरदा घर एक सबै वरदाई॥

[५१८]

लोचन असम अंग भसम चिता को लाय,
तीनो लोक नायक सौं कैसे कै ठहरतो।
कहै 'पदमाकर' विलोकि इमि ढंग जाके,
वेद हू पुरान गान कैसे अनुसरतो॥
बाँधे जटा जूट बैठे परवत कूट माँहिं,
महाकाल कूट कहो कैसे कै ठहरतो।
पीवै नित भंगै रहै प्रेतन के संगै ऐसे,
पूछतो को नंगै जो न गंगै सीस धरतो॥

[५१९]

भिक्षुक गो कित को गिरिजे, सु तो माँगन को वलि द्वारे गयो री।
नाच नच्यो कित हो भव भाव, कलिन्द सुता तटनी के नयो री॥
भाज गयो वृषपाल सु जानत, गोधन संग सदा सुछयो री।
सागर शैल सुतान के आज यों, आपस में परिहास भयो री॥

[५२०]

जांट जुलाहा जुरे दरजी मरजी में रहै चिक चोर चमारो।
दीनन की सुधि दीनी बिसारि सु तादिन में नहीं कौन गुहारो॥
को 'शिवलाल' की बातै सुनै, इनहीं को रहै दिन रात अखारो।
एते बड़े करुनाकर को इन पाजिन ने दरबार बिगारो॥

[५२१]

गढ़ लंक बिभीषन को जो दयो, तो निसंक ह्वै भेद बताइबे को।
गनिका जो तरी कर टेकि रही, हरि नाम सुवा के पढ़ाइबे को॥
अरि बिप्र सुदामा को दीनो महाधन, दास प्रतिज्ञा बढ़ाइबे को।
बिन काज जो दीन पै दाया करै, तब जानियो दानी कहाइबे को॥

[५२२]

परम पुनीत परमारथ की राह सुनो,
एहो कवि 'रघुनाथ' वेद के प्रमान की।
मुकति की लालसा प्रथम मिली चाही मिले,
लालसा के मिलति नवनि नीके ठान की॥
नवनि सों साधु मिलें साधु सों सुमति मिले,
सुमति सों सरधा मिलति है बखान की।
सरधा सों गुरु मिले गुरु सों मिलत ज्ञान,
ज्ञान सों मिलत कृपा पुरुष पुरान की॥

[५२३]

कर्म ते अधिक धर्म धर्म तें अधिक दान,
दान तें अधिक ज्ञान अति अभिराम है।
ज्ञान तें अधिक दाया दाया तें सुबैन मृदु,
अधिक सुबैनहु तें दीनता अराम है॥
दीनता तें अधिक स्वरूप को विचार सदा,
ताहु तें अधिक सतसंग सुखधाम है।
'रसिकबिहारी' सतसङ्ग ते अधिक हेरो,
अभिमत देन्हारो सीताराम नाम है॥

[५२४]

आयो मन हाथ पै न आयबो रह्यो न कछू,

भायो गुरुज्ञान फेर भाइबो कहां रह्यो।

कहै 'पदमाकर' सुगंगा की तरंग जैसे,

पायो भवपार फेर पाइबो कहां रह्यो॥

ज्ञान फल ध्यान फल विविध विधान फल,

छायो जग पुंज फेर छाइबो कहां रह्यो।

ध्यायो राम रूप सब ध्याइबो रह्यो न कछू,

गायो राम नाम सब गाइबो कहां रह्यो॥

[५२५]

प्रीति सी न पाती कोऊ प्रेम सो न फूल और,

चित्त सो न चन्दन सनेह सो न सेहरा।

हृदै सो न आसन सहज सो न सिंहासन,

भाव सी न सेज और भक्ति सो न गेहरा॥

सील सो सजाव नहिं ध्यान सो न धूप और

ज्ञान सो न दीपक अज्ञान तम केहरा।

मन सी न माला कोऊ सोहं सो न जाप और

आतम सो देह नहिं देह सो न देहरा॥

[५२६]

झीनी झीनी बीनी चदरिया ।

काहे का ताना काहे कि भरनी कौन तार से बीनी चदरिया ।
इङ्गला पिङ्गला ताना भरनी सुखमन तार से बीनी चदरिया ॥
आठ कँवल दस चरखा डोलै पाँच तत्व गुन तीनी चदरिया ।
साँई को सियत मास दस लागै ठोंकि ठोंकि कै लीनी चदरिया ॥
सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी ओढ़ि कै मैली कीनी चदरिया ।
दास 'कबीर' जतन ते ओढ़ी ज्यों की त्यों धरि दीनी चदरिया ॥

[५२७]

माया महा ठगिनि हम जानी ।
तिरगुन फाँस लिए कर डोलै बोलै मधुरी बानी ।
केसव के कमला ह्वै बैठी, सिव के भवन भवानी ॥
पंडा के मूरति ह्वै बैठी तीरथ में भइ पानी ।
जोगी के जोगिनि ह्वै बैठी राजा के घर रानी ॥
काहू के हीरा ह्वै बैठी काहु के कौड़ी कानी ।
भक्तन के भक्तिनि ह्वै बैठी ब्रह्मा के ब्रह्मानी ॥
कहै 'कबीर' सुनो हो संतो यह सब अकथ कहानी ।

[५२८]

केसव कहि न जाय का कहिए ?
देखत तव रचना विचित्र अति समुझि मनहिं मन रहिए।
सून्य भीति पर चित्र, रंग नहिं, तनु बिनु लिखा चितेरे॥
धोए मिटै न, मरै भीति दुख, पाइय यहि तनु हेरे।
रविकर नीर वसै अति दारुन मकर रूप तेहि माहीं।
बदनहीन सो ग्रसै चराचर पान करन जे जाहीं॥
कोउ कह सत्य झूठ कह कोऊ जुगल प्रवल करि मानै।
'तुलसिदास' परिहरै तीनि भ्रम सो आपन पहिचानै॥

[५२९]

करम गति टारी नाहिं टरी।
मुनि बसिष्ठ से पंडित ज्ञानी सोधि के लगन धरी।
सीता हरन मरन दसरथ को वन में विपति परी॥
कहँ वह फंद कहाँ वह पारधि कहँ वह मिरगचरी।
सीता को हरि लै गो रावन सुवरन लंक जरी॥
नीच हाथ हरिचंद विकाने वलि पाताल धरी।
कोटि गाय नित पुन्न करत नृग गिरगिट जोनि परी॥
पाँडव जिनके आप सारथी तिनपर विपति परी।
दुरजोधन को गरव घटायो जदुकुल नास करी॥

राहु केतु औ भानु चंद्रमा विधि संजोग परी।
कहत 'कबीर' सुनौ भइ साधो होनी ह्वै के रही॥

[५३०]

करम गत टारे नाहिं टरे।
सतवादी हरिचंद से राजा, नीच घर नीर भरे।
पांच पांडु अरु कुंती द्रोपदी हाड़ हिमालय गरे॥
जज्ञ कियो बलि लेन इन्द्रासन, सो पाताल धरे।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, विष से अमृत करे॥

[५३१]

पिय तें बिछुरे तोहि री बिते बहुत हैं रोज।
पिय पिय पपिहा जड़ रटैं तू न करै पिय खोज॥
तू न करै पिय खोज कितै दुरमति मैं भूली।
होन लगे सित केस कौन मद में अब फूली॥
बरनै 'दीनदयाल' सुमिरि अजहूँ तेहि हिय तें।
है सब तेरी चूक नहीं कछु तेरे पिय तें॥

[५३२]

गौने के दिन निकट अब होन चहै पिय मेल।
अजहूँ छुटो न ताहि री गुड़ियन को यह खेल॥
गुड़ियन को यह खेल खेलि सब समै बिगारे।
सिखे नहीं गुन कछू पिया मन मोहन वारे॥

बरनै 'दीनदयाल' सीख पैहै पिय भौने।
ए री भूषन साजि भद्र दिन आवत गौने॥

[५३३]

सौदागर तू समुझि कै सौदा करि इहि हाट।
जैहै उठि दिन दोय मैं पछितैहै फिरि बाट॥
पछितैहै फिरि घाट वस्तु कछु भली न लीनी।
यों ही लम्पट होय खोय सब सम्पति दीनी॥
बरनै 'दीनदयाल' कौन बिधि ह्वै है आदर।
गये आपने देस बिना सौदा सौदागर॥

[५३४]

पनिहारी इहि सर परे लरति रही सब पांह।
रीती घट लै घर चली उतै मारि है नाह॥
उतै मारिहै नाह काह तिहि उत्तर दै है।
रोय रोय पति खोय फेरि सर पै फिरि ऐहै॥
बरनै 'दीनदयाल' इतै हसिहैं सब नारी।
ख्वारी दुहुँ दिसि परी अरी ग्वाँरी पनिहारी॥

[५३५]

एरे मेरे धोबिया तोसों भाखत टेरि।
ऐसी धोनी धोइ जो मैलो होय न फेरि॥
मैलो होय न फेरि चीर इहि तीर न आवै।
साबुन लाउ विचार मैल जाते छुटि जावै॥
बरनै 'दीनदयाल' रंग चढ़ि है चहुँ फेरे।
जा तू देहै धोय भले जल उज्जल एरे॥

[५३६]

माली नींव रसाल सँग लाय करी अनरीति।
काग आम पिक नींव पै बैठारे विपरीति॥
बैठारे विपरीति रीति तू कछू न बूझै।
स्याम स्याम सब एक नहीं औगुन गुन सूझै॥
बरनै 'दीनदयाल' कौन यह तेरी चाली।
कोकिल तें करि ऊँच काग को मानत माली॥

[५३७]

आली चन्दन की न क्यों पाली माली कूर।
मतवाली मति तो भई सींचत वैरि बबूर॥
सींचत बैरि बबूर दुखद कंटक हैं ताके।
सेवत क्यों नहिं अंध गंध मुद कर बर जाके॥

बरनै 'दीनदयाल' सबै स्रम जैहै खाली।
पालत है किन ताप समय चंदन की आली॥

[५३८]

भूपन तें आदर लयो दल को भयो सिंगार।
अजहूं तजी न बानि गज सिर पर डारत छार॥
सिर पर डारत छार भूल डारे मखमल की।
चल्यो हठीली चाल भयो जगसीमा बल की॥
बरनै 'दीनदयाल' होत नहिं कछु रूपन तें।
छुटै न बंस सुभाय पाय आदर भूपन तें॥

[५३९]

वै तो मानत तोहि नहिं तैं कित भरयो उमंग।
नहिं दीपहि कछु दरद क्यों जरि जरि मरै पतंग॥
जरि जरि मरै पतंग तासु ढिग कदर न तेरी।
तू अपनो हित जानि भाँवरै भरत घनेरी॥
बरनै 'दीनदयाल' प्रानप्रिय मान्यो तैं तो।
मुख मलीन करि रहैं चहैं नहिं तो को वैं तो॥

[५४०]

सोवै किते चकोर तू सफल करै किन नैन।
चार दिना यह चाँदनी फिर अँधियारी रैन॥
फिरि अँधियारी रैन सखे लखि सोच मरैगो।
सजग रहै नहिं भूलि काल कृत जाल परैगो॥
वरनै 'दीनदयाल' लाल यह काल न खोवै।
रोम रोम प्रति सोम कला फैली कित सोवै॥

[५४१]

प्यारे करै गुमान जनि सुनि प्रसून! सिख मोरि।
तो समान इहि वाग में फूलि झरे हैं कोरि॥
फूलि झरे हैं कोरि वहोरि किते विनसैहैं।
या वहारि दिन चारि गए फिरि ग्रीखम ऐहैं॥
वरनै 'दीनदयाल' न करि सारंगहि न्यारे।
तो रस जाननिहार वड़े हित कारक प्यारे॥

[५४२]

नाहीं भूलि गुलाव! तू गुनि मधुकर गुञ्जार।
यह वहार दिन चार की वहुरि कटीली डार॥
वहुरि कटीली डार होहिंगी ग्रीपम आए।
लुवैं चलैंगी संग अंग सव जैहैं ताये॥

बरनै 'दीनदयाल' फूल जौ लों ता पाहीं।
रहे घेरि चहुँ फेरि फेरि अलि ऐहैं नाहीं॥

[५४३]

तौ लों अलि तू बिहरि लै जौ लों मित्र प्रकास।
पीछे बाँध्यो जायगो रजनी नीरज पास॥
रजनी नीरज पास बँधे फिरि स्वास न ऐहै।
यह तो विधि की तात कला इत नाहिं चलैहै॥
बरनै 'दीनदयाल' सुमन सेया कई सौ लों।
बुड्यो कोकनद नहीं रही चतुराई तौ लों॥

[५४४]

आई निसि अलि कमल तें क्यों नहिं होत उदास।
नहिं ह्वैहै छन एक में सुखद अंत की वास॥
सुखद अंत की वास नहीं सब बंधन दैहै।
ऐहै कुंजर जबै सखा जुत तो को खैहै॥
बरनै 'दीनदयाल' भलो बहु लोभ न भाई।
तजिके रस की आस चलो अब तो निसि आई॥

[५४५]

भौंरे भूलि न वे भरम लखि इक सोभत भेस।
कढ़िगो सौरभ सुमन तें रही लालिमा सेस॥
रही लालिमा सेस कहूँ मकरंद न यामै।
पौन पराग उड़ाय गयो कहु मोहत कामै॥
वरनै 'दीनदयाल' साँझ ढिग आई बौरे।
चले बिहंग बसेर कहा अब भूले भौंरे॥

[५४६]

या वन में करि केहरी कूप गंभीर अपार।
द्वै पहार के ओट में बसत एक बटपार॥
बसत एक बटपार उभै धनु सर सन्धाने।
ता पीछे इक स्याह नागिनी चाहति खाने॥
वरनै 'दीनदयाल' इनै लखि डरिये मन में।
पंथी सुपंथ विहाय भूलि जनि जैये वन में॥

[५४७]

"देव" जियै जब पूछौ तौ पीर को पार कहूं कहि आवत नाहीं।
सो सब झूंठ मतै मन कै वकि मौन सोऊ सहि आवत नाहीं॥
है नद नंद तरंगनि मैं मन फेन भयो गहि आवत नाहीं।
चाहै कह्यो बहुतेरो कछू पै कहा कहिये कहि आवत नाहीं॥

[५४८]

गुरुजन जावन मिल्यो न भयो दृढ़ दधि,
मथ्यो न विवेक रई 'देव' जो वनायगो।
माखन मुकुति कहां छाँड्यो न भुगति जहां,
नेह विनु सगरो संवाद खेह नायगो॥
विलखत वच्यो मूल कच्यो सच्यो लोभ भाँड़े,
तच्यो कोप आँच पच्यो मदन छिनायगो।
पायो न सिरावन सलिल छिमा छींटन सों,
दूध सो जनमु विनु जाने उफनायगो॥

[५४९]

पटिगो अँध्यार ही सों फटिगो उज्यारी फैल,
मैल ह्वै अमैल ज्ञान गैल ते नहटिगो।
हटिगो चमतकार चेतन अपार महा,
उज्वल अनूप निजरूप ते उघटिगो॥
घटिगो घनों सुख सिमिटिगो घनेरो दुख,
आप को न जान्यो आपु य विधि उलटिगो॥
लटिगो मुगुध ह्वै के सटिगो विषै में यह,
आतम उचटि माया नटी सों लपटिगो॥

[५५०]

गेह तज्यो अरु नेह तज्यो पुनि खेह लगाय कै देह सँवारी।
मेह सहै सिर सीत सहै पुनि धूप समै पंचागिनि बारी॥
भूख सही रहि रूख तरे पर 'सुन्दर' दास सहै दुख भारी।
डासन छांड़ि कै कासन ऊपर आसन मारी पै आस न मारी॥

[५५१]

भोग में रोग वियोग संयोग में जोग में काम कलेस कमायो,
त्यों 'पदमाकर' वेद पुरान पढ़्यो, पढ़ि कै बहुबार पढ़ायो।
दूनो दुरास में दास भयो पै कहूं बिसराम को धाम न पायो,
कासो गँवायो सु ऐसे ही जीवन, हाय मैं राम को नाम न गायो॥

[५५२]

गंगा जल अमल अमंद मकरंद वर,
सुचित सुगंध गाय वेद हू न तरिगो।
धरानंद पावन पराग परसत पद,
रंभारति मान जाको चित्त वित्त हरिगो॥
सुक-सनकादि नारदादि सुर सेवैं सदा,
वदत 'गुलाम' राम तोहि क्यों विसरिगो।
राम पद पंकज विहाय हाय मीच वस,
मन भृंग विषय बबूर वन परिगो॥

[५५३]

ऐसेहि जनम-समूह सिराने।
प्राननाथ रघुपति से प्रभु तजि सेवत चरन बिराने॥
जे जड़ जीव कुटिल कायर खल केवल कलि मल साने।
सूखत बदन प्रसंसत तिन्ह कहँ हरि ते अधिक करि माने॥
सुख हित कोटि उपाय निरंतर करत न पाँय पिराने।
सदा मलीन पंथ के जल ज्यों कबहुँ न हृदय थिराने॥
यह दीनता दूर करिबे को अमित जतन उर आने।
'तुलसी' चित चिंता न मिटै बिनु चिंतामनि पहिचाने॥

[५५४]

खोदत डोल्यो भूमि गड़ी नहिं पाई संपति।
धौंकत रह्यो पखान कनक के लोभ लगी मति॥
गयो सिंधु के पास तहाँ मुकुता नहिं पायो।
कौड़ी कर नहिं लगी, नृपन के सीस नवायो॥
साधे प्रयोग समसान में भूत प्रेत बैताल सजि।
कितहूँ न भयो कुछ मनोरथ अब तो तृष्णा मोहि तजि॥

[५५५]

ऐसी हौं जु जानतो कि जैहै तू विषै के संग,
ऐरे मन मेरे हाथ पाँव तेरे तोरतो।
आजु लगि कति नरनाहन की नाहीं सुनी,
नेह सों निहारि हारि बदन निहोरतो॥
चलन न देतो 'देव' चंचल अचल करि,
चाबुक चेतावनीन मारि मुँह मोरतो।
भारो प्रेम पाथर नगारो दै गरे मों बाँधि,
राधाबर बिरद के बारिद में बोरतो॥

[५५६]

मन पछ्तैहै अवसर बीते।
दुर्लभ देह पाइ हरिपद भजु करम वचन अरु ही ते।
सहसबाहु दसबदन आदि नृप बचे न काल बली ते॥
हम हम करि धन धाम सँवारे अंत चले उठि रीते।
सुत वनिताहि जानि स्वारथ रत न करु नेह सबही ते।
अंतहुँ तोहिं तजेंगे पामर तू न तजै अबही ते॥
अब नाथहिं अनुरागु जागु जड़ त्यागु दुरासा जीते।
बुझै न काम अगिनि 'तुलसी' कहुँ विषय भोग बहु घी ते॥

[५५७]

कान के गए ते कहाँ कान ऐसो होत मूढ़,
नैन के गए ते कहाँ नैन ऐसे पाइए।
नासिका गए ते कहाँ नासिका सुगंधि लेत,
मुख के गए ते कहाँ मुख ऐसो लाइए॥
हाथ के गए ते कहाँ हाथ ऐसो काम होत,
पाँव के गए ते ऐसो पाँव कत धाइए।
याहि ते विचार देख 'सुंदर' कहत तोहिं,
देह के गए ते ऐसी देह नहिं आइए॥

[५५८]

असन बसन तजि आसन करौ अनेक,
घरौ त्यागि धरो जाय ध्यान निरमोही में।
तीरथ अटन करौ वेद की रटन करौ,
जटन बढ़ाय तपौ जाय गिरि खोही में॥
तेरी या त्रितापन की तपन मिटैगी तबै,
जब मन डूबैगो अमिय धार ओही में।
कहौं मैं पुकार देख आप तू विचार ऐरे,
तेरी करी व्याधि को उपाय अब वोही में॥

[५५९]

रंक को नचावै अभिलास धन पावन की,
निस दिन सोच कर ऐसे ही पचत है।
राजहिं नचावै सब भूमि ही को राज लेन,
और हू नचावै जौन देह सों रचत है॥
देवता, असुर, सिद्ध, पन्नग, सकल लोक,
कीट पसु पंखी कहु कैसे कै बचत है।
'सुंदर' कहत काहू संत की कही न जाय,
मन के नचाए सब जगत नचत है॥

[५६०]

पूरीं धन आस आजु जो पै रे कुटिल मन,
तौऽब काल्हि ही ते राजि आसा लगि जावैगी।
काल्हि चक्कवै ही बनि आयो जो उपाय करि,
तुरतहि सुर-सुंदरी की सुधि आवैगी॥
एक गुनी आसा पूजिहै जु 'राजहंस' कहि,
सौगुनी अपार आस बासना दिखावैगी।
आसा पुनि आसा पुनि आसा पुनि आसा,
पुनि आसा ही की आसा में निरासा घरि खावैगी॥

[५६१]

औरो देखु कोऊ रोवै पुत्र औ कलत्र हित,
कोऊ धन लाभ हेत रोवत अपार है।
'राजहंस' कोऊ राजमान पाइवे में राज-
द्वारे जाय पावै नित कोटि फटकार है॥
कोऊ रूप लाभ माँहि करत विलाप वहु,
कोऊ वहु भोग ही की चिंता महँ छार है।
जहाँ देखु तहाँ दुख जाहि देखु ताहि दुखी,
चारों ओर लगी एक दुख की वजार है॥

[५६२]

अर्जन में दुख परिपालन में दुख औ,
विलास में ता दुखहि को फैल्यो पारावार है।
संचित रहे ते चहुँओरन सों वार वार,
जाचक लुटेरे वटपारन की मार है॥
रहै बिसवास नहिं भाई बंधुहूँ में नेकु,
होत नित चित माँहि चिंता को प्रचार है।
कवि 'राजहँस' ऐसे धन के भए ते काह,
जामें इमि संकट समूह अधिकार है॥

[५६३]

करि देत चित्त सों विराग को सुपंथ दूरि,
ज्ञान दीप हेतु यह पूरी मेघवारी सी ।
जगत को जाल पहिरावन में पटु अति,
सारहीन लसत सुरूप फुलवारी सी ॥
ऐसेई सुनिर्मल विवेक तरु भंजन को,
चल चखवारी हुती कामिनी कटारी सी ।
ता पै निज कल्पना कुपंथ में चलाय काहे,
कलि के कविन्ह कविता की सान धारी सी ॥

[५६४]

कामिनी की हाँसी दृग फाँसी मति फँसै मीत,
मारिहै फसाय कै वड़ोई ठग मैन है ।
मरे हैं अनेक परे लोटत नरक वीच,
ताहू पै कहत हमैं वड़ो सुख चैन है ॥
अहो मोह महिमा न जानी जग जात कछू,
देखि दहैं दुख मैन सुनै साधु बैन है ।
त्यागि जग-जाल तू गोपाल भज दीनदयाल,
चार दिना चाँदनी अंधेरी पुनि रैन है ॥

[५६५]

हानि अरु लाभ ज्यान जीवन अजीवन हूँ,
भोगहू वियोग हू संजोगहू अपार है।
कहै 'पदमाकर' इते पै और केते कहौं,
तिनको लख्यो न वेदहू में निरधार है॥
जानियत याते रघुराय की कला को,
कहूँ काहू पार पायो कोऊ पावत न पार है।
कौन दिन कौन छिन कौन घरी कौन ठौर,
कौन जाने कौन को कहाधों होनहार है॥

[५६६]

रे मन मूढ़ वृथा भटकै नव मास कहौ सुध कौन लई है।
जन्म भयो तोहि पीछे कहूँ पहिले ई करी तेहि छीर मई है॥
सो करुणानिधि भूल्यो नहीं अब नाहक तो हिय ऊब भई है।
काहे वृथा भरमैं चहुँओर तू देहै वही जिन देह दई है॥

[५६७]

मेरा तेरा मनुवाँ कैसे एक होय रे!
मैं कहता हौं आँखिन देखी तू कहता कागद की लेखी।
मैं कहता सुरझावन हारी, तू राख्य उरझाय रे।
मैं कहता तू जागत रहियो, तू रहता है सोइ रे।

मैं कहता निरमोही रहियो, तू जाता है मोहि रे।
जुगन जुगन समझावत हारा, कहा न मानत कोइ रे।
तू तो रंगी फिरै बिहंगी सब धन डारे खोइ रे।
सतगुरु धारा निरमल बाहै वामें काया धोइ रे।
कहत 'कबीर' सुनौ भइ साधो तब ही वैसा होइ रे ॥

[५६८]

बैस बिसासिनि जाति वही उमही छिनही छिन गंग के धार सी।
त्यों 'पदमाकर' पेखनियाँ अजहूँ न भजै दसरत्थ कुमार सी ॥
बार पके थके अंग सबै मदि मीच गरेई परी हर हार सी।
देखै दसा किन आपनी तू अब हाथ के कंगन को कहा आरसी ॥

[५६६]

बटाऊ रे चलना आजि कि काल्हि।
समुझि न देखै कहा सुख सोवै रे मन राम सभालि ॥
जैसे तरवर बिरस बसेरा, पंखी बैठे आइ।
ऐसे यह सब हाट पसारा आप आप कौं जाइ ॥

कोइ नहिं तेरा सजन सँघाती जिनि खोवे मन भूल।
यहु संसार देखि जिनि भूलै, सवही सेंवल फूल॥
तन नहिं तेरा धन नहिं तेरा कहा रह्यो इहिं लागि।
'दादू' हरि बिन क्यों सुख सोवै काहे न देखै जागि॥

[५७०]

नाव को समाज कैधों बसिबो सराय कैसो,
तीरथ को मेला तामे कवलों रहायँगे।
आतस की बाजी तन साचो है सपन ऐसो,
भूत को कटक देखि यामें भरमायँगे॥
पानी को बुला जो जैसे पानी में बिलाय जांय,
ऐसे पंचभूत पंचभूत में मिलायँगे।
देखत हमारे चलो जात है जगत ऐसे,
देखत जगत के हमहुँ चले जायँगे॥

[५७१]

चमकि चमाचम रहे हैं मनिगन चारु,
सोहत चहूँधा धूम धाम धन धाम क ।
फूल फुलवारी फल फैलिकै फबे हैं तरु,
छबि छटकीली यह नाहिन आराम की।

काया हाड़ चास की लै नाम की बिसारी सुधि,
जाम की को जानै बात करत हराम की ।
'अंबादत्त' भाषैं अभिलाषैं क्यों करत झूठ,
मूँदि गई आँखैं तब लाखैं कौन काम की ॥

[५७२]

मेरो गढ़, ग्राम, नाम, मेरो कलधौत धाम,
मेरो गजराज, राज मोहि दगा दै गयो ।
मेरो सुत, मेरो हित, तरल तुरंग मेरो,
मेरी इंदुमुखी हौं अनंग ताप तै गया ॥
काम सम सरस सुरूप मेरो कूप मेरो,
विमल तड़ाग वाग अनुराग नै गयो ।
'कवि कृष्ण' भजिवे की सुधि भूली मेरे मन,
मेरो मेरो करत निवेरो काल कै गयो ॥

[५७३]

कौन ने पठायो कहाँ आयो औ समायो कहाँ,
काको लपटायो कहा देखत तमासो है ।
नित्त ही अनित्त में लोभायो ललचायो मोहि,
नाहक भुलायो फाँसिन को पतासो है ।

'ग्वाल कवि' कहैं अरे जीय तू न हीय जानै,
कौन दिन कौन छिन होयगो निकासो है।
आई या न आई कहा पौन की बड़ाई ऐसे,
साँस के भरोसे गढ़ माँस में मवासो है॥

[५७४]

बागो बनो जरपोस को तामधि ओस को जाल तन्यो मकरी ने।
पानी में पाहन पोत चल्यो चढ़ि कागद की छतुरी कर लीने॥
काँख में बाँधिकै पाँख पतंग के 'देव' सुसंग पतंग को कीने।
मोम को मंदिर माखन को गृह बैठ्यो हुतासन आसन दीने॥

[५७५]

पेट चढ़्यो, पलना पलिका चढ़ि पालकि हू चढ़ि मोद मढ़्यारे।
चौक चढ़्यो चितसारी चढ़्यो गज बाजि चढ़्यो गढ़ गर्व चढ़्योरे॥
ब्योम बिमान चढ़्योई रहै कहि 'केसव' सों कबहूँ न पढ़्योरे।
चेतन नाहिं रह्यो चढ़ि चित्त सुचाहत मूढ़ चिता हू चढ़्योरे॥

[५७६]

आस बस डोलत सु याको बिसवास कहा,
साँस बल बोलै मल-माँस ही को गोला है।
कहै 'पदमाकर' विचार छन भंगुर या,
पानी कैसो फेन जैसे फलक फफोला है॥

करम करोरा पंचतत्वन बटोरा फेर,
ठौर ठौर जोला फेरि ठौर ठौर पोला है।
छोड़ि हरिनाम नहिं पैहै बिसराम अरे,
निपट नकाम तन चाम ही को चोला है॥

[५७७]

ख्याल ही की खोज में अखिल ख्याल खेल खेल,
गाफिल ह्वै भूल्यो दुख दोस की खुस्याली तें।
लाख लाख भाँति अभिलाख लखे लाख अरु,
अलख लख्यो न लखी लालन की लाली तें॥
'देव' विधि हरिहर सों न प्रीति पाली पल,
दै दै करताली न रिझायो वनमाली तें।
झूठी झिलमिल की झलक ही में भूल्यो,
जल मल की पखाल खल! खाली खाल पाली तें॥

[५७८]

धोखा की धुजा है औ रुजा है महादोषन की,
मल की मँजूषी मोहमाया की निसानी है।
कहै 'पद्माकर' सुपानी भरी खाल ताके,
खातिर खराब फत होत अभिमानी है॥

राखे रघुराज के रहै तो रहै प्रानी नहीं,
जंगी जमराज ही के हाथन विकानी है।
जौ लों लगि पानी तौ लौं देह सी दिखानी,
फेर पानी गए खारिज पखाल ज्यों पुरानी है॥

[५७६]

खेलि ले नैहरवा दिन चारि।
पहिली पठौनी तीन जन आए नौवा, बाम्हँन, वारि।
वाबुल जो मैं पैंया तोरी लागौं अबकी गवन दे टारि॥
दुसरी पठौनी आपै आए लैके डुलिया कहार।
धरि वहियाँ डुलिया बैठारिन कोऊ न लागै गुहार॥
लै डुलिया जाइ बन माँ उतारिन कोऊ न संगी हमार।
कहै 'कबीर' सुनो भाइ साधो इक घर है दस द्वार॥

[५८०]

पेटहि ते कढ़ि पेटहि को चले पेटहि ते कुछ ऐसी लपेट है।
भाल में रेख दई विधना वह काहू सों मेटी गई न अमेट है॥
आवत रोकि सकै न कोऊ अरु जात रहै गहि काहू न फेंट है।
है मिलनो सपनो छिन को पुनि रैन कहाँ औ कहाँ पुनि भेंट है॥

[५८१]

पंकज फूल में भौंर फँस्यो अफसोस कियो अति ही मन ऊबा।
ह्वै है प्रभात उदैहै दिवाकर जैहै सबै मिटि जाल को खूबा॥
'बेनी' अजौं नहिं चीतत मूढ़ न जानत काल को ख्याल अजूबा।
खाय लियो नलिनी गजराज रह्यो मन को मन में मनसूबा॥

[५८२]

कौ लौं करौं मोह मोहि मोही की परी है 'देव'
मोहन से मोह महामाया में मिलायँगे।
मनु से मुनीस मन मन से मनुज मन मानी,
मानधाता सानौ सैन पिघलायँगे॥
बावन से रावन से रामजू से खेलि खेलि,
खलन के खालन खेलौना ज्यों खेलायँगे।
काटे काल चाल ऐसे बली बलभद्र ऐसे,
बल ऐसे बालि से बघूला से बिलायँगे॥

[५८३]

राग कीन्हें रंग कीन्हें तरुणी प्रसंग कीन्हें,
हाथ कीन्हें चीकने सुगन्ध लाय चोली में।
गेह रचि देह रचि सुंदर सनेह रचि,
बासर बितीत कीन्हें नाहक ठठोली में॥

'बेनी कवि' कहै और कहाँ लौं गिनाऊँ सबै,
दिना चार स्वाँग ते दिखाय चले होली में।
बोलत न डोलत न खोलत पलक हाय,
काठ से परे हैं आठ काठ की खटोली में॥

[५८४]

जाकी हमेस चली हुकुमें छिति मंडल बीच अड़ी नहीं आड़ी।
साहिबी संपति कौन गिनै मनि मानिक मोहर की निधि गाड़ी॥
भाखे 'प्रधान' पयान समै वह संपति साज चलै नर छाँड़ी।
चानी के बासन गाड़े रहैं मरि पीपर टाँगे छदाम की हाँड़ी॥

[५८५]

कौनो ठगवा नगरिया लूटल हो।
चंदन काठ के बनल खटोलना तापर दुलहिन सूतल हो।
उठौरी सखी मोरि माँग सँवारौ दुलहा मोसे रूसल हो॥
आए जमराज पलँग चढ़ि बैठे नैनन आँसू टूटल हो।
चारि जने मिलि खाट उठाइन चहुँदिसि घू घू ऊठल हो॥
कहत 'कबीर' सुनो भाइ साधो जग से नाता छूटल हो।

[५८६]

बलि विक्रम वेणु दधीचि गए अरु पारथ गे जिन भारथ ठाना।
बालि गए बलि रूप गए जिनकी कखरी दसकंठ समाना॥
गए दुरजोधन जंग जुरे जिन चौंसठ कोस लौं छत्र विताना।
धरा को प्रमान यही 'तुलसी' जा फरा सो झरा औ बरा सो बुताना॥

[५८७]

इस दम दा मैनूँ कीवे भरोसा आया आया न आया न आया।
या संसार रैन दा सुपना कहिं दिखा कहिं नाहिं दिखाया॥
सोच विचार करे मत मन में जिसने ढूँढ़ा उसने पाया।
'नानक' भक्तन के पद परसे निस दिन रामचरन चितलाया॥

[५८८]

मन रे परसि हरि के चरन।
सुभग सीतल कमल कोमल त्रिविध ज्वाला हरन।
जे चरन प्रह्लाद परसे इंद्र पदवी धरन॥
जिन चरन ध्रुव अटल कीनो राखि अपने सरन।
जिन चरन ब्रह्मंड भेंट्यो नख सिखौ श्रीभरन॥
जिन चरन प्रभु परसि लीने तरी गौतम घरन।
जिन चरन कालीहि नाथ्यो गोप लीला करन॥

[५८६]

देस विदेस के देखे नरेसन रीझि की कोऊ न बूझ करैगो।
तातों तिन्हैं तजि जान गिरयो गुन से गुन औगुन गाँठि परैगो॥
बाँसुरीवारो बड़ो रिझवार है स्याम जो नैकु सुढार ढरैगो।
लाड़लो छैल वही तौ अहीर कौ पीर हमारे हिये की हरैगो॥

[५६०]

द्रौपदी औ गनिका गज गीध अजामिल सों कियो सो न निहारो।
गौतम गेहनी कैसी तरी प्रहलाद को कैसे हरयो दुख भारो॥
काहे को सोच करै 'रसखानि' कहा करि हैं रविनंद विचारो।
ता खन जा खन राखिए माखन चाखन हारो सो राखन हारो॥

[५६१]

पानी ही का बुंद तातें पिंड को प्रगट कीनों,
आँच ते उबारिबे को बीच ओट नाखी है।
अंतर तो पोखि पुनि बाहर बनायो वय,
सुरत सँभारी तौ लों दीनता न भाखी है॥
कलते चलावत जगत सबै पूतरी ज्यों,
बाजी को बनाय पुनि आप रह्यो साखी है।
भूल्यो निज ताहि जो न भूले छन एक तोहि,
आस कर ताकी जिन साँस गिन राखी है॥

[५६२]

सकल बिगारे काज परिकै सिंगार माहिं,
बीर न बन्यो रे कबौं धर्म दया दान तें।
तन जो विभत्स मल पूरित अशुद्ध ताहि,
अद्भुत रूप दरसायो तू बखान ते॥
रौद्र रूप काल की भयानक अवाई भई,
शान्त ना भयो है कहौं निज अनुमान ते।
हास्य मोहिं आवै लखि तेरी गति एरे मन,
करुणा न चाहै अजौं करुणानिधान ते॥

[५६३]

तन की रुचि में मन मूढ़ पगे जसुदातन को तनकौ न चहै।
जस दातन के ढिग ओरत है जस दांतन काढ़ि कै बोलि रहै॥
निज देह की नारी न संग चलै सँग नेह की नारी को कौन लहै।
सपना जग होयगो एक दिना कस ना रसना हरिनाम कहै॥

[५६४]

प्रानन प्रेम की गाँसी नहीं नहिं कानन बाँसुरी को सुर छायो।
बैननि सों न जप्यो नंदनन्द न नैनन सों ब्रजचंद लखायो॥
'ठाकुर' हाथ न माल लई नहिं पायन सों हरि मंदिर धायो।
नेकु कियो न सनेह गोपाल सों देह धरे का कहा फल पायो॥

[५६५]

एक तो दियो है तोहि मानुस को तन, दूजे
उत्तम बरन तीजे उत्तम बरन देह।
ताहू पर परम कृपा करि कृपानिधान,
कैरा वैरा बौरा गूँगा बावरो करो न एह॥
कहत 'किसोर' जोर अच्छर को आयो भयो,
चातुर कहायो पायो प्रेम पन्थ निज गेह।
धिक तोको अधम अभागे कृतहीन जो पै,
ऐसे में न ऐसे दीनबंधु सों लगायो नेह॥

[५६६]

पीयुस पयोधि मद्ध मणिन सों बद्ध भूमि,
रोध सों रुधिर रुचि रोचक रतन में।
काम तरु विपिन कदंब उपवन सीरी,
सुरभि पवन डोलै मृदु सी गवन में॥
चिंतामणि मंडप विराजै जगदंब सदा,
सावधान 'मतिराम' सेवक अवन में।
लंपट लुबुध मन! भव में भँवत काह,
कर भूरि भाव ताकी भावना भवन में॥

[५९७]

साँचे गोविंद हैं झूठो सबै जग काँचे सरीर रहै दिनचारी।
नाचे वृथा ही प्रपंचन में भ्रमि खाचे हिये नहिं नाम बिचारी॥
राँचे न नेह में तू मन 'बीरन' स्वाँग बनाय कहा ये अचारी।
आँचे वृथा भव आँच दवानल एकहु बार न नाथ बिचारी॥

[५९८]

ऋषिनारी उधारि कियो शठ केवट मीत पुनीत सुकीत्ति लही।
निज लोक दियो सवरी खग को कपि थाप्यो सो मालुम है सबही॥
दससीस विरोध सभीत विभीषण भूप कियो जग लीक रही।
करुणानिधि को भजु रे 'तुलसी' रघुनाथ अनाथ के नाथ सही॥

[५९९]

प्रभु सत्य करी प्रहलाद गिरा प्रगटे नर केहरि खंभ महाँ।
झखराज ग्रस्यो गजराज, कृपा ततकाल, विलम्ब कियो न तहाँ॥
सुर साखी दै राखी है पाण्डुवधू पट लूटत, कोटिक भूप जहाँ।
'तुलसी' भजु सोच विमोचन को जन को पन राम न राख्यो कहाँ॥

[६००]

तिनते खर सूकर स्वान भले जड़ता बस जे न कहैं कछु वै।
'तुलसी' जेहि राम सों नेह नहीं सो सही पसु पूंछ विखान न द्वै॥
जननी कत भार मुई दस मास भई किन बाँझ गई किन च्वै।
जरि जाहु सो जीवन जानकिनाथ जिये जग में तुम्हरो बिनु ह्वै॥

[६०१]

जाके प्रिय न राम बैदेही ।
सो छाँड़िए कोटि बैरी सम जद्यपि परम सनेही ॥
तज्यो पिता प्रह्लाद, विभीषन बंधु, भरत महतारी ।
बलि गुरु तज्यो कंत ब्रजबनितनि भे सब मंगलकारी ॥
नाते नेह राम के मनियत सुहृद सुसेव्य जहाँ लौं ।
अंजन कहा आँखि जेहि फूटै बहुतक कहौं कहाँ लौं ॥
'तुलसी' सो सब भाँति परमहित पूज्य प्रान ते प्यारो ।
जासों होइ सनेह राम-पद एतो मतो हमारो ॥

[६०२]

अब लौं नसानी अब न नसैहों ।
राम कृपा भवनिसा सिरानी जागे फिरि न डसैहौं ॥
पायों नाम चारु चिन्तामनि उर-करते न खसैहौं ।
स्याम रूप सुचि रुचिर कसौटी चित कंचनहिं कसैहौं ॥
परवस जानि हँस्यो इन इन्द्रिन निज वस ह्वै न हँसैहौं ।
मन मधुकर पनकरि 'तुलसी' रघुपति-पद-कमल बसैहौं ॥

[६०३]

देखि राम स्याम घन दामिनी दसन दुति,
कृपा दृष्टि वृष्टि कहूं अनत न राचैगो ।
गिरा गर जानि जाकी अंकन मधुर मूरि,
पूरि कै अनन्त सुख निजानन्द माचैगो ॥
प्रीति रितु पावस उदै के भये गये ताप,
सीतल समीर सान्त कान्त घन वाचैगो ।
चदत 'गुलामराम' एक रस आठो याम,
मेरो मन मुदित मयूर कब नाचैगो ॥

[६०४]

केते करो कोय पैये करम लिखोय ताते
दूसरी न होय उर सोय ठहराइये ।
आधी ते सरस बीती गई है बयस अब,
दुज्जन दरस बीच रस न बढ़ाइये ॥
चिन्ता अनुचित धरु धीरज उचित,
'सेनापति' ह्वै सुचित रघुपति गुन गाइये ।
चारि बरदानि तजि पाय कमलेच्छन के,
पायक मलेच्छन के काहे को कहाइये ॥

[६०५]

पान चरनामृत को गान गुन गानन को,
हरि कथा सुने सदा हिये को हुलसिबो।
प्रभु के उतीरन की गुदरी औ चीरन की,
भाल भुज कंठ उर छापन को लसिबो॥
'सेनापति' चाहत है सकल जनम भरि,
बृन्दावन सीमातें न बाहर निकसिबो।
राधा मन रंजन की सोभा नैन कंजन की,
माल गरे गुञ्जन की कुञ्जन को बसिबो॥

[६०६]

महा मोह फन्दनि मैं जगत जकन्दनि मैं,
दिन दुख दंदनि में जात है बिहाय कै।
सुख को न लेस है कलेस सब भाँतिन को,
'सेनापति' याही तें कहत अकुलाय कै॥
आवे मन ऐसी घर-बार परिवार तजौं,
डारौं लोकलाज के समाज बिसराय कै।
हरिजन पुञ्जनि मैं बृन्दावन कुञ्जनि मैं,
रहौं वैठि काहू तरवर तर जायकै॥

[६०७]

नैया मेरी तनकसी बोझी पाथर भार।
चहुँदिसि अति भौंरें उठत केवट है मतवार॥
केवट है मतवार नाव मँझधारहिं आनी।
आँधी उठत प्रचण्ड तिहूँ पर बरसत पानी॥
कह 'गिरधर कविराय' नाथ हौ तुमहिं खेवैया।
उठहि दया को डाँड़ घाट पर आवै नैया॥

[६०८]

प्रलै के पयोनिधि ज्यौं लहरैं उठन लागीं,
लहरा लग्यो त्यों होन पौन पुरवैया को।
धीर भरी झाँझरी विलोकि मँझधार परी,
धीर न धराय 'पद्माकर' खेवैया को॥
कहाँ वार कहाँ पार जानी है न जात कछू,
दूसरो देखात न खवैया और नैया को।
चहन न देहै घेरि पारहि लगैहै ऐसो,
अमित भरोसो मोहि मेरे रघुरैयाको॥

[६०९]

आधि व्याधि विविध व्यथान की उपाधि माँहि,
निपट विकल मम जीव जकरो सो है।
फाँसनि फसो सो दुख गाँसनि गंसो सो,
असहाय मन-मीन ताते रेत में परो सो है॥
संकट घटा में विज्जु विपत कटा में,
कवि 'राजहंस' एते हू पै धीरज धरो सो है।
करुणानिधान ! नटनागर ! जगतपति !
मोहिं तो तिहारो एक अमित भरोसो है॥

[६१०]

ताही भाँति धाऊँ 'सेनापति' जैसे पाऊँ तन,
कंथा पहिराऊँ करौं साधन जतीन के।
भसम चढ़ाऊँ जटा सीस पै बढ़ाऊँ
नाम वाही को पढ़ाऊँ दुख-हरन दुखीन के॥
सबै बिसराऊँ उर तामें उरझाऊँ कुञ्ज-
बन बन धाऊँ तीर भूधर नदीन के।
मन बिसराऊँ मन मनहिं रिझाऊँ, बीन
लै कै कर गाऊँ गुन वाही परवीन के॥

[६११]

मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै ।
जैसे उड़ि जहाज को पंछी फिरि जहाज पर आवै ॥
कमल नयन को छाँड़ि महातम, और देव को धावै ।
परम गंग को छाँड़ि पियासो दुर्मति कूप खनावै ॥
जिन मधुकर अंबुज रस चाख्यो क्यों करील फल खावै
'सूरदास' प्रभु कामधेनु तजि छेरी कौन दुहावै ॥

[६१२]

घड़ी एक नहीं आवड़े, तुम दरसण विन मोय ।
तुम हो मेरे प्राणजी कासूं जीवण होय ॥
धान न भावै नींद न आवै, विरह सतावै मोय ।
घायल सी घूमत फिरूं रे, मेरा दरद न जाणै कोय ॥
दिवस तो खाय गमायो रे, रैण गमाई सोय ।
प्राण गमायो झूरतां रे, नैण गमाई रोय ॥
जो मैं ऐसा जाणती रे, प्रीति किये दुख होय ।
नगर ढंढोरा फेरती रे, प्रीति करो मत कोय ॥
पंथ निहारूं डगर बोहारूं, ऊभी मारग जाय ।
'मीरा' के प्रभु कबरे मिलोगे, तुम मिलियाँ सुख होय ॥

[६१३]

हेरी मैं तौ प्रेम दिवाणी, मेरा दरद न जाणे कोय ॥
सूली ऊपर सेज हमारी, किस विध सोणा होय ॥
गगन मँडल पै सेज पियाकी, किस विध मिलणा होय ॥
घायल की गति घायल जाणै, की जिन लाई होय ॥
जौहरी की गति जौहरी जाणै, की जिन जौहर हाय ॥
दरद की मारी बन बन डोलूं, बैद मिल्या नहिं कोय ॥
'मीरा' की प्रभु पीर मिटैगी, जब बैद संवलिया होय ॥

[६१४]

बंसीवारो आयो म्हारे देस थाँरी साँवरी सुरत बाली वैस ।
आऊँ आऊँ कर गया साँवरा कर गया कौल अनेक ॥
गिणते गिणते घिस गई उँगली घिस गयीं उँगलीकी रेख ।
मैं बैरागिणि आदि की थाँरे म्हारे कद को सँदेस ॥
बिन पाणी बिन साबुण साँवरा हुइ गई धुई सपेद ।
जोगिण हुई जंगल सब हेरूँ तेरा नाम न पाया भेस ॥
तेरी सुरत के कारणों धर लिया भगवा भेस ।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, घूँघर वाला केस ।
'मीरा' को प्रभु गिरिधर मिल गये, दूना बढ़ा सँदेस ॥

[६१५]

अजहुँ न निकसे प्रान कठोर।
दरसन बिना बहुत दिन बीते सुंदर प्रीतम मोर॥
चार पहर चारहु जुग बीते रैन गँवाई भोर।
अवध गये अजहूँ नहिं आए कतहुँ रहे चित चोर॥
कबहूँ नैन निरख नहिं देखे मारग चितवत तोर।
'दादू' अइसहिं आतुरि बिरहिनि जइसहि चन्द चकोर॥

[६१६]

अब हौं नाच्यो बहुत गोपाल।
काम क्रोध को पहिरि चोलना कंठ विषय की माल॥
महा मोह के नूपुर बाजत निंदा सबद रसाल।
भरम भरयो मन भयो पखावज चलत कुसंगति चाल॥
तृसना नाच करति घट भीतर नाना विधि दै ताल।
माया को कटि फेंटा बाँधे लोभ तिलक दै भाल॥
कोटिक कला काछि दिखराई जल थल सुधि नहिं काल।
'सूरदास' की सबै अविद्या दूरि करहु नँदलाल॥

[६१७]

मेरो मन हरि हठ न तजै।
निस दिन नाथ देउँ सिख वहु विधि करत सुभाव निजै॥
ज्यों जुवती अनुभवति प्रसव अति दारुन दुख उपजै।
ह्वै अनुकूल बिसारि सूल सठ पुनि खल पतिहिं भजै॥
लोलुप भ्रमत गृह-पशु ज्यों जहँ तहँ सिर पदत्रान बजै।
तदपि अधम बिचरत तेहि मारग कबहुँ न मूढ़ लजै॥
हौं हारयो करि 'जतन विविध विध अतिसय प्रबल अजै।
'तुलसिदास' वस होइ तबहिं' जब प्रेरक प्रभु बरजै॥

[६१८]

ऐसी मूढ़ता या मनकी।
परिहरि राम-भगति सुर-सरिता आस करत ओसकन की॥
धूम-समूह निरखि चातक ज्यों तृषित जानि मति घन की।
नहिं तहँ सीतलता न बारि पुनि हानि होति लोचन की॥
ज्यों गच काँच बिलोकि सेन जड़ छाँह आपने तन की।
टूटत अति आतुर अहार बस छति बिसारि अनन की॥
कहँ लौं कहौं कुचाल कृपानिधि जानत हौ गति जन की।
'तुलसिदास' प्रभु हरहु दुसह दुख करहु लाज निजपन की॥

[६१९]

व्याध हूँ ते बिहद असाधु हौं अजामिल लौं,
ग्राह ते गुनाही कहाँ तिनमें गिनाओगे।
स्योरी हौं न सूद्र हौं न केवट कहूँ को,
न तु गौतमी तिया हौं जापै पग धरि आओगे॥
राम सों कहत 'पदमाकर' पुकारि तुम,
मेरे महापापन को पारहू न पाओगे।
झूठे हूँ कलंक सुनि सीता ऐसी सती तजी,
साँचेहू कलंकी मोहिं कैसे अपनाओगे॥

[६२०]

रूठै क्यों न जन जानि मन में विकार सबै,
रूठैं जाति पाति और रूठैं दुखदाइये।
रूठैं रावराना सबै जाना वही ठौरही में,
रूठैं जो परोसी ताहि मनमें न लाइये॥
रूठैं परिवार यार सारा संसार मूढ़,
पण्डित कविन्द 'रविदत्त' ना सकाइये।
एते सब रूठैं आप चूमैंगे अंगूठे मेरो,
ये हो रघुनाथ एक तू न रूठो चाहिये॥

[६२१]

कहु को भरि है रितये हरि के रितवै पुनि को हरि जो भरि हैं।
उथपै थिति को जेहि राम थपै थपि है तिहि को हरि जो टरिहैं॥
'तुलसी' यह जानि हिये अपने सपने नहिं कालहुँ ते डरिहैं।
कुमया कछु हानि न औरन की जो पै जानकीनाथ मया करिहैं॥

[६२२]

ए ब्रजचन्द गोविंद गोपाल सुनो न क्यों केते कलाम किये मैं।
त्यौं 'पदमाकर' आनन्द के कंद हौ नंदनन्दन जानि लिये मैं॥
माखन चोरी कै खोरिन ह्वै चले भाजि कछू भय मानि जिये मैं।
दूरिहूँ दौरि दुरयो जो चहो तौ दुरौ किन मेरे अंधेरे हिये मैं॥

[६२३]

प्रभुजी संगति सरन तिहारी।
जग जीवन राम मुरारी॥
गली गली को जल बहि आयो सुरसरि जाय समायो।
संगत के परताप महातम नाम गँगोदक पायो॥ १॥
स्वाँति बूंद बरसै फनि ऊपर सीस विषै होइ जाई।
चहै बूंद कै मोती निपजै संगत की अधिकाई॥ २॥

तुम चंदन हम रेंड बापुरे निकट तुम्हारे आसा।
संगत के परताप महातम आवे बास सुबासा ॥ ३ ॥
जाति भी ओछी करम भी ओछा ओछा कसब हमारा।
नीचे से प्रभु ऊंच कियो है कह 'रैदास' चमारा ॥ ४ ॥

[६२४]

तातल सैकत वारि बिन्दु सम सुत मित रमणी समाजे।
तोहे बिसरि मन ताहे समरपल अब मझु हव कोन काजे ॥
माधव हम परिणाम निराशा।
तुहु जगतारण दीन दयामय अतए तोहारि विशोयाशा।
आध जनम हम नींदे गमाओल जरा शिशुकत दिन गेला ॥
निधुवने रमणी रसरंगे मातल तोहे भजब कोने बेला।
कत चतुरानन मरि मरि जाओत न तुया आदि अवसाना।
तोहे जनमि पुनि तोहे समाओत सागर लहरि समाना ॥
भनये 'विद्यापति' शेष शमन भय तुया बिनु नहिं आरा।
आदि अनादिक नाथ कहाओसि अवतारण भार तिहारा ॥

[६२५]

राम मैं पूजा कहा चढ़ाऊं। फल अरु मूल अनूप न पाऊं ॥
थनहर दूध जो बछरू जुठारी। पुहुप भंवर जल मीन बिगारी ॥
मलयागिर बेधियो भुअंगा। विष अमृत दोउ एकै संगा ॥

मनही पूजा मनही धूप। मनही सेऊं सहज सरूप॥
पूजा अरचा न जानूं तेरी। कह 'रैदास' कवन गति मेरी॥

[६२६]

चारन में सगुनागुन के तोहि भूलि चराचर विश्व गया है।
स्यामछकी छबि नैननमें कोउ गावत है कोउ मौन भया है॥
काऊ दुहूं करतूत न थापत जान हमारे तिहूं को मया है।
तीनहुँ छाँड़ि भजै तोहि 'बीरन' माँगत केवल प्रेम दया है॥

[६२७]

मोहिं तुम्हैं अंतरु गनैं न गुरजन, तुम
मेरो हौं तुम्हारी पै तऊ न पघिलत हौ।
पूरि रहे या तन मैं मन मैं न आवत हौ,
पंच पूछि देखे कहूँ काहू ना हिलत हौ॥
ऊंचे चढ़ि रोई कोई देत न दिखाई 'देव',
गातन की ओट बैठे बातन गिलत हौ।
ऐसे निरमोही सदा मोही मैं बसत अरु,
मोही ते निकरि फेरि मोहीं न मिलत हौ॥

[६२८]

तारयो है निषाद प्रहलाद को उबारयो, शुद्ध
सादर अहल्या करी पदरज लाय कै।
कहै 'जगन्नाथ' हाथ धरि गिरि ब्रजनाथ,
पाल्यो ब्रज पथ ते पुरन्दरै लजायकै॥
बार न करी है नेक बारन के तारन में,
कारन कहा है जगतारन कहाय कै।
जोवत इतै हौ नहिं, सोवत किते हौ प्रभु,
ऐसे ही वितैहो कै चितैहो चित लायकै॥

[६२९]

औगुन अनंत खरदूसन लौं दोसवंत,
तुच्छ त्रिसिरा लौं जाको नेकहू न जस है।
कहै 'पदमाकर' कबन्ध लौं मदन्ध,
महापापी हौं मरीच लौं न दायाको दरस है॥
मन्थरा लौं मन्थर कुपन्थी पंथ पाहन लौं,
बालिहू लौं विषयी न जान्यो और रस है।
व्याधहू लौं बधिक बिराध लौं बिरोधीराम,
एते पै न तारो तो हमारो कहा बस है॥

[६३०]

आलस नींद में माते सदा अरु उद्दम हीन दुबेर खवैया।
प्यास लगै नहिं पानी भरौं अरु पास धरो उठिकै न पिवैया॥
ऐसे निकम्मन के 'सुखदेव' कृपा के सुधाम हौ पेट भरैया।
भोर ते साँझरु साँझ ते भोर लौं मो सों कपूत न तोसों देवैया॥

[६३१]

भील कब करी थी भलाई जिय आप जान,
फील कब हुआ था मुरीद कहु किसका।
गीध कब ज्ञान की किताब का किनारा छुआ,
व्याध और बधिक निसाद कहु तिसका॥
नाग कब माला लैके बंदगी करी थी बैठ,
मुझको भी लगा था अजामिल का हिसका।
एते बदराहों की बदी करी थी माफ जन,
'मलूक' अजाती पर एती करी रिसका॥

[६३२]

केसव आपु सदा ही सह्यो दुख दासनि देखि सके न दुखारे।
जाको भयो जेहि भाँति जहाँ, दुख त्यौंही तहाँ तिहि भाँति पधारे॥
मेरिये वार अबार कहा कहुँ, नाहिन दास के दोष विचारे।
बूड़त हौं मनमोह समुद्र में, राखत काहे न राखनहारे॥

[६३३]

है अति आरत मैं बिनती बहुबार करी करुणा रस भीनीं।
कृष्ण कृपानिधि दीनके बन्धु सुनी असुनी तुम काहेको कीन्हीं॥
रीझते रंचक ही गुण सों वह बानि बिसार मनो अब दीन्हीं।
जानि परी तुम हूं प्रभुजी कलिकालके दानिन की गति लीन्हीं॥

[६३४]

जोग जप संध्या साधु साधन सबैई तजे,
कीन्हें अपराध जे 'अगाध मनभावते।
तेते तजि औगुन अनन्त 'पदमाकर' तौ,
कौन गुन लैके महाराजहि रिझावते।
जैसे अहैं तैसे पै तिहारे, बड़े कामके हैं,
नाहीं तो न ऐसे बैन कबहूं सुनावते।
पावते न मोसों जो पै अधम कहूँ तो राम,
कैसे तुम अधम उधारन कहावते।

[६३५]

मीनसो विषय रस प्रेमी कच्छ सो कठोर।
सूकर सरिस पंकही में मति को धरै।
पर सुख भंजिबे में नरसिंह रूप नित,
बौनो बहु ऊंची अभिलासैं अतिसै भरै॥

राम सों सदाचरणवान बुद्ध सों विसुद्ध,
स्याम सों जगत प्रिय जग में दिखापरै।
क्रोधी द्विजराय सो विनासी कल्कि सम प्रभु,
तेरे आचरण मन मेरो नित ही करै॥

[६३६]

अब की कहानी मेरी जात न भुलानी कछू,
न्याय के समय यम दफा कहाँ पाइहैं।
फैसल न करत बनैगो कछु हा हा नाथ,
मिसिल को छोड़ चित्रगुप्त घबराइहैं॥
नरक सिकोरि नाक देइगो दुहाई तेरी,
सब मिलि तेरे पास अन्त में पठाइहैं।
तबहिं लखत दोऊ नैनन तें इन्दुमुख,
'बीरन' पहार पाप बेगि हीं नसाइहैं॥

[६३७]

कीन्हों तुम सेत मैं असेत कृत कीन्हों,
तुम धर्म अनुराग्यो मैं अधर्म अनुराग्यो है।
कहै 'पदमाकर' अखाँग्यो तुम लंकपति,
हमहू कलंकपति ह्वैबोई अखाँग्यो है॥

हम तुम हूँ ते अति करम करैया बड़े,
अंकनि गनै पै यों गुमान जिय जाग्यो है।
खीजियो न मो पै मुख लागत भले हो राम,
नाम हू तिहारो जो हमारे मुख लाग्यो है॥

[६३८]

पातकी पावन हौ तुम राम रहैं हम पातक में मदमाते।
दीन के बंधु दयाल इके तुम हौ हम दीन दसा नहिं पाते॥
पालक हौ तुम विप्रन के हमहूँ 'पदमाकर' विप्र सुहाते।
यातैं रहौ न हटा प्रभु पास तें हैं तुमतें हमतें बहु नाते॥

[६३९]

तुम करतार जगरच्छा के करनहार,
पूरत मनोरथ हौ सब चित चाहे के।
यह जिय जानि 'सेनापति' हू शरण आयो,
हूजिये दयाल ताप मेटौ दुख दाहे के॥
जो यों कहौ तेरे हैं रे करम अनैसे
हम गाहक हैं सुकृति भगति रस लाहे के।
आपने करम करि उतरौंगो पार तौऽब,
हम करतार करतार तुम काहे के॥

[६४०]

खात न अघात सब जगत खवावत है,
द्रौपदी को शाक पात खातहिं अघाने हौ।
'केशोदास' नृपति सुता के सति भाव भये,
चोर ते चतुरभुज सब जग जाने हौ॥
माँगनेऊ द्वारपाल दास हित सूत सुनौ,
काठ माँझ कीने पाठ वेदन बखाने हौ।
और है अनाथन को नाथ कोउ रघुनाथ,
तुम तौ अनाथन के हाथ ही बिकाने हौ॥

[६४१]

पूरण पुराण परमानंद परेस तू है,
पारावार हूते परे प्रकृति प्रधान में।
घट घट तेरो वास सदा तू स्वयं प्रकास,
तेरो चिदाभास सो न आवत बखान में॥
विधि औ निषेध भावाभाव सों रहित तू है,
तू है शुद्ध बुद्ध तू है धाता ध्येय ध्यान में।
तू है निहसंग तो में गुन के प्रसंग ऐसे,
ऐसे जैसे रंग देखियत फटिक पखान में॥

[६४२]

धन्य जगनन्दन भैभंजन अनन्द कन्द,
संकट निकन्दन अनन्द रूपधारी धन्य ।
धाम करुणा के प्रभुता के महिमा के महा,
सिन्धु सुखमा के श्री रमा के चितहारी धन्य ॥
शेष शिव शारद सनातन शुकादि सेव्य,
संत सुर सुखद सहाय सुखकारी धन्य ।
आदि अज अजर अगोचर अनादि एक,
अमित अनेक ब्रह्मपूरन मुरारी धन्य ।

[६४३]

लाल है भाल सिंदूर भरो मुख उद्यत चारु जु बाहु विशाल है ।
शाल हैं शत्रुन के उर को उत सिद्धिद चन्द्रकला धरे भाल है ॥
भा लहै 'दत्त जू' सूरज कोटिकी कोटिन काटत संकट जाल है ।
जाल है बुद्धि विवेकन को यह पारवती को लड़ाइतो लाल है ॥

[६४४]

कुंडलित सुंड गंड गुंजत मलिन्द वृन्द,
बदन विराजै अति अद्भुत गति को ।
माल ससिभाल तीन लोचन विसाल राजै,
फनिगन माल सुभ सदन सुमति को ॥

ध्यावत बिना ही श्रम लावत न बार नर,
पावत अपार भार मोद धनपति को।
पाप तरु कन्दन को बिघन निकंदन को,
आठों याम बन्दन करत गणपति को॥

[६४५]

हरि जस पावस में कहरै सिखी सी तुही,
वेद कुसुमाकर में कूजति पिकी सी है।
तू ही सुखदानी रसधर्म की कहानी माँहि,
कर्म बीथिका में बानो दीपिका सी दीसी है॥
नीति छीर धारा में उदारा नव नीत तू ही,
मेधा मेघमाला में लसति दामिनी सी है।
ज्ञातन की प्रतिभा सुमति कविनाथन की,
गाथन की सिद्धि तेरे हाथन बिकीसी है॥

[६४६]

भाल में जाके कलानिधि है सोइ साहब ताप हमारी हरैगो।
अंग में जाके बिभूति भरि रहै भौन में सम्पति भूरि भरैगो॥
घातक है जा मनोभव को मन पातक वाहि के जारे जरैगो।
'दास' जू सीस पै गंग धरे रहै ताकी कृपा कहो को न तरैगो॥

[६४७]

नन्दी की सवारी नाग शृंगी कर धारी नित,
संत सुखकारी नील कंठ त्रिपुरारी है।
मुण्डमाल कारी सिरगंग जटाधारी वाम—
अंग में बिहारी गिरिराज सुता प्यारी है॥
दानि रेख भारी सेष सारदा पुकारी काशी—
पति मदनारी कर शूल, चक्र धारी है।
कला उजियारी 'बलदेव' सो निहारी : यश—
गावैं वेद चारी सो हमारी रखवारी" है॥

[६४८]

देव नर किन्नर अनन्त गुण गावत पै,
पावत न पार जा अनन्त गुण पूरे को।
कहै 'पदमाकर' सुगाल के बजावतहि,
काज कर देत जन जाचक जरूरे को॥
चन्द्र की छटान जुत पन्नग फटान जुत,
मुकुट विराजै जटा जूटन के जूरे को।
देखो त्रिपुरारि की उदारता अपार जहाँ,
पैये फल चारि फूल एक दै धतूरे को॥

[६४९]

कोटिक सुरेस गुण गावत गनेस कहि,
थकि जात सेस न कहत वार पारे हैं।
पूजत हमेस 'राजहंस' सविशेष जाहि,
नित अचलेस जा रहत हिये धारे हैं ॥
आनँद भरन दुख दारिद दरन अति,
तारन तरन जौन सुखमा सँवारे हैं।
हीतल हरन अति सीतल करन,
जगतीतल सरन ऐसे चरन तिहारे हैं ॥

[६५०]

जग जगमगत भगत जन रसबस, भव भयहर कर करत अचरचर।
कनक बसन तन असन अनल बड़ पट दल बसन सजल थल थलकर ॥
अजर अमर अजबरद चरनधर परम धरम गन बरन शरनपर।
अमल कमल बर बदन सदन जस हरन मदन मद मदन कदन हर ॥

[६५१]

शुंभ निशुंभ विनासिनि आसिनि वासिनि विन्ध्य गिरीश की रानी।
शंकर संग विलासिनि अंग हुलासिनि श्री कमलासिनि दानी ॥
जाहि सदाशिव ध्यान धरैं अरु गान करैं मुनि चातुर ज्ञानी।
'नाथ' कहैं सोइ शैलकुमारि हमारी करैं रखवारी भवानी ॥

[६५२]

कालकूट तुल्य है कलेवर विशाल जाको,
हिय माँहि सोहै बीर मुण्डन की मालिका ।
अरिरक्त पान हेतु खप्पर है एक कर,
एक कर माँहि करवाल सत्रु सालिका ॥
'राजहंस' रच्छिनी प्रतच्छ प्रभुता है जाकी,
भक्त जन संकट समूह सर्व चालिका ।
धर्म प्रति पालिका अधर्म उर घालिका है,
रूप में कराल पै कृपाल मातु कालिका ॥

[६५३]

किंकिनी क्वनित ध्वनि नूपुर रणित अगणित,
सुवरन आभरण झनकार की ।
दिव्यपट भाल्यभाल कुंकुम विपंक मुख,
मंडल मयंक सोभा सरद सुधार की ॥
खड्ग शूल वान धनु धारिनि सहित त्रनि,
दास त्रास हारि नित प्रभा भुज चार की ।
दामिनी सी देह दुति सर्वंग स्वामिनी सो,
नैनपथ गामिनी है भामिनी पुरारि की ॥

[६५४]

जारे ताप दाहन के मारे पाप पाहन के,
निपट निरासरे ये आस का की धरते।
छूटे सतसंग के अनङ्ग बटपार लूटे,
कूटे कलिकाल के कहाँ ते जाय अरते॥
अति अकुलाय कै डराय घबराय धाय,
त्राहि त्राहि कहि काके आगे आय परते।
होते जो न अम्ब तेरे चरण सरण तौ ये,
अरज गरज बंद कापै जाय करते॥

[६५५]

गंग के चरित्र लखि भाषै जमराज इमि,
एरे चित्रगुप्त मेरे हुकुम में कान दे।
कहै 'पदमाकर' ये नरकनि मूंदि कर मूंदि,
दरवाजन को तजि यह ध्यान दे॥
देखु यह देव नदी कीन्हें सब देव यातें,
दूतन बुलाय के बिदा के वेगि पान दे।
फारि डारु फरद न राखु रोज नामा कहुँ,
खाता खत जान दे बही को वहि जान दे॥

[६५६]

आयो जौन तोरी धौरी धारा में धँसत जात,
तिनको न होत सुरपुर ते निपात है।
कहै 'पदमाकर' तिहारो नाम जाके मुख,
ताके मुख अमृत को पुंज सरसात है॥
तेरो तन छूकै औ छुवत तन जाको वात,
तिनकी चली न यमलोकन में बात है।
जहाँ जहाँ मैया तेरी धूरि उड़ियत गंगे,
तहाँ तहाँ पापन की धूरि उड़िजात है॥

[६५७]

यमपुर द्वारे लगे तिनमें किवारे कोऊ,
है न रखवारे ऐसे वन के उजारे हैं।
कहै 'पदमाकर' तिहारे प्राणधारे तऊ,
करि अघ भारे सुरलोक को सिधारे हैं।
सुजन सुखारे करे पुण्य उजियारे बहु,
पतित कतारे भवसिन्धु तें उतारे हैं।
काहू ने न तारे तिन्हें गंग तुम तारे,
और जेते तुम तारे तेते नभ में न तारे हैं॥

[६५८]

जैसो तैं न मोसो कहूँ, नेकहू डरात हुतो,
ऐसो अब हौ हूँ तो सो नेकहू न डरिहौं।
कहै 'पदमाकर' प्रचंड जो परैगो तो,
उमंड करि तोसों भुजदंड ठोकि लरिहौं॥
चलो चलु चलो चलु विचलु न बीच ही तैं,
कीच बीच नीच तो कुटुम्ब को कचरिहौं।
एरे दगादार मेरे पातक अपार तोहि,
गंगा के कछार में पछारि छार करिहौं॥

[६५६]

तन की दुति स्याम सरोरुह लोचन कंज की मंजुलताई हरैं।
अति सुन्दर सोहत धूरि भरे छबि भूरि अनङ्ग की दूरि करैं॥
दमकैं दतियाँ दुति दामिनि ज्यों किलकैं कल बाल बिनोद करैं।
अवधेश के बालक चारि सदा 'तुलसी' मन मन्दिर में बिहरैं॥

[६६०]

पग नूपुर औ पहुँची करकंजनि मंजु बनी मनिमाल हिये।
नव नील कलेवर पीत झँगा झलकैं पुलकैं नृप गोद लिए॥
अरविन्द सो आनन रूप मरंद अनंदित लोचन-भृंग पिए।
मन में न बस्यौ अस बालक जो 'तुलसी' जग में फल कौन जिए॥

[६६१]

तारी ऋषिनारी वज्र अंकुशादि धारी,
चित्रकूट बनचारी सहचारी त्रिपुरारी के।
अधम उधारी मुनि मानस बिहारी,
सारी बिपति विदारी पूज्य कपि गिरधारी के॥
सोच के सहारी पाप तम के तमारी,
दीन दास निरधारी प्रिय जनकदुलारी के।
'रसिकविहारी' भारी दोष दुखहारी सदा,
सब सुखकारी पद अवधविहारी के॥

[६६२]

तृण के समान धन धान राज त्याग करि,
पाल्यो पितु-बचन जो जानत जनैया है।
कहै 'पदमाकर' विवेक ही को वानो बीच,
साँची सत्यवीर धीर धीरज धरैया है॥
सुमृति पुराण वेद आगम कह्यो जो पंथ,
आचरन सोइ सुद्ध करम करैया है।
मोह मति मन्दर पुरन्दर महा को धन्य,
धरम धुरन्धर हमारो रघुरैया है॥

[६६३]

रूप सुरूप सरोरुह मूरत मों मन में रमि राम रहा है।
डाल चुकी जय माल सखी अरु माख चुकी अपनो दुलहा है॥
चाहै कोऊ सो कहै सजनी अपने मन में वह लाग रहा है।
चाप निगोड़ो अबै जरिजाय चढ़ै तो चढ़ै न चढ़ै तो कहा है॥

[६६४]

बेर बेर बेर लै सराहै बेर बेर बहु,
'रसिकबिहारी' देत बन्धु कहँ फेर फेर।
चाखि चाखि भाखैं यह बहुतै लगत मीठे,
लेहु तो लखन यों बखानत हैं हेर हेर॥
बेर बेर देवें बेर शबरी सुबेर बेर,
तऊ रघुवीर बेर बेर तेहि टेर टेर।
बेर जनि लावो बेर बेर जनि लावो बेर,
बेर जनि लावो बेर लावो कहैं बेर बेर॥

[६६५]

आनन्द के कन्द जग ज्यावत जगत वंद्य,
दसरथ नंद के निवाहे ही निवहिये।
कहै 'पदमाकर' पवित्र पन पालिवे को,
चौर चक्रपानि के चरित्रन को चाहिये॥

अवधविहारी के विनोदन में बीधि बीधि,
गीध गुह गीधे के गुनानुवाद गहिये ।
रैन दिन आठों याम सीताराम सीताराम,
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये ॥

[६६६]

सापहर पापहर कलि के कलाप हर,
तीखन त्रिताप हर तारक तरैया को ।
कहै 'पदमाकर' त्यों प्रभा सो प्रकासमान,
पोषक पियूष ऐसो जैसो काम गैया को ॥
मुख सुखदायक सहायक सबन सूधो,
सुलभ सरन्य सरनागत अवैया को ।
मीठो भर कठवति परत न फीको नित,
नीको निरदोस नाम राम रघुरैया को ॥

[६६७]

सुख भरपूरि करै दुखन को दूरि करै,
जीवन समूर सो सजीवन सुधार को ।
चिंता हनिबे को चिन्तामनि सी बिराजै,
कामना को कामधेनु सुधा संयुत सुनार को ॥

भनै 'भगवंत' सूधी होत जेहि ओर, देत-
साहिवी समृद्ध देखि परत उदार की।
जन मन रंजिनी है गंजनी विथा की,
भय भंजिनी नजरि अंजनी के ऐड़दार की॥

[६६८]

पायन नूपुर मंजु बजै कटि किंकिणि में धुनि की मधुराई।
साँवरे गात लसै पट पीत हिये हुलसै वनमाल सुहाई॥
माथे किरीट बड़े दृग चंचल मंद हंसी मुखचंद जुन्हाई।
जै जग मन्दिर दीपक सुन्दर श्री ब्रज दूलह देव सहाई॥

[६६९]

छबि सों फबि सीस किरीट बन्यो रुचिसाल हिये बनमाल लसै।
कर कंजनि मंजु रली मुरली कछनी कटि चारु प्रभा दरसै॥
कवि ''कृष्ण' कहैं लखि सुन्दरि मूरति यों अभिलास हिये सरसै।
वह नन्द किसोर विहारी सदा यहि बानिक मो मन माँहि बसै॥

[६७०]

छहरै सिर पै छबि मोरपखा उनकी नथ के मुकता थहरैं।
फहरै पियरो पट वेनी इतै उनकी चुनरी के झवा झहरैं॥
रसरंग भिरे अभिरे हैं तमाल दोऊ रस ख्याल चहैं लहरैं।
नित ऐसे सनेह सों राधिका स्याम हमारे हिये में सदा ठहरैं॥

[६७१]

वसो मेरे नैनन में नन्दलाल ।
मोहनी मूरति साँवरि सूरति नैना बने बिसाल ।
अधर सुधा रस मुरली राजित उर बैजन्ती माल ॥
छुद्र घंटिका कटि तटि सोभित, नूपुर सब्द रसाल ।
'मीरा' प्रभु संतन सुखदाई, भक्त वछल गोपाल ॥

[६७२]

धूरि भरे अति सोहत स्याम जू तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी ।
खेलत खात फिरैं अंगना पग पैंजनी बाजत पीरी कछौटी ॥
वा छबि को 'रसखानि' बिलोकत वारत काम कला निज कोटी ।
काग के भाग बड़े सजनी हरि हाथ सों लै गयो माखन रोटी ॥

[६७३]

हम बूझति सतिभाव न्याव तुम्हरे मुख साँचो ।
प्रेम नेम रस कथा कहौ कंचन की काँचो ॥
जो कोउ पावै सीस दै ताको कीजै नेम ।
मधुप हमारी सों कहो, हो, जोग भलो किधौं प्रेम ॥
प्रेम प्रेम सों होइ प्रेम सों पारहि जैये ।
प्रेम बँध्यो संसार प्रेम परमारथ पैये ॥
एकै निहचै प्रेम को जीवन मुक्ति रसाल ।
साँचो निहचै प्रेम को, हो, जिहि मिलिहैं नँदलाल ॥

सुनि गोपिन को प्रेम नेम ऊधो को भूल्यो।
गावत गुन गोपाल फिरत कुंजन में फूल्यो॥
छिन गोपिन के पग परै धन्य तुम्हारो नेम।
धाय धाय द्रुम भेटहीं, हो, ऊधो छाके प्रेम॥

[६७४]

उपदेसन आयो हुतो मोहि भयो उपदेस।
ऊधो जदुपति पै गये, हो, किये गोप को बेस॥
भूल्यो जदुपति नाँव, कहत गोपाल गोसाईं।
एक बार ब्रज जाहु देहु गोपिन दिखराईं॥
गोकुल को सुख छांड़ि कै कहाँ बसे हौ आय।
कृपावन्त हरि जानि कै, हो, ऊधो पकरे पाय॥
देखत ब्रज को प्रेम नेम कछु नाहिंन भावै।
उमड़यो नैननि नीर बात कछु कहत न आवै॥
'सूर' श्याम भूतल गिरे, रहे नयन जल छाय।
पोंछि पीत पट सों कह्यो 'भज आए जोग सिखाय ?'

[६७५]

कबै आप गये थे बिसाहन बजार बीच,
कबै बोलि जुलहा बिनाये दर पट से।
नन्द जू की कामरी न काहू बसुदेव जी की,
तीन हाथ पटुका लपेटे रहे कट से॥

मोहन भनत यामें रावरी बड़ाई कहा,
राखि लीन्ही आनि बानि ऐसे नट खट से।
गोपिन के लीन्हें तब चीर चोरि चोरि,
अब जोरि जोरि देन लगे द्रोपदी के पट से॥

[६७६]

पाय अनुसासन दुसासन कै कोप धायो,
द्रुपद सुता को चीर गहे भीर भारी है।
भीषम करन द्रोन बैठे व्रतधारी तहाँ,
कामिनी की ओर काहु नेकु न निहारी है॥
सुनिकै पुकार आये द्वारिका ते यदुराई,
बाढ़त-दुकूल खैंचे भुजबल हारी है।
सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है,
कि सारी ही कि नारी है कि नारी ही की सारी है॥

[६७७]

कोदौं समा जुरतौ भरि पेट न, चाहति हौं दधि,दूध, मिठौती।
सीत व्यतीत भयो सिसियातहिं हौं हठती पै तुम्हैं न हठौती॥
जो जनती न हितू हरि से तो मैं काहे को द्वारका ठेलि पठौती।
या घर से कबहूँ न गयो पिय, टूटो तवा अरु फूटी कठौती॥

[६७८]

शीश पगा न झँगा तन में प्रभु, जानै को आहि बसै किहि ग्रामा।
धोती फटी सी लटी दुपटी, अरु पाँय उपानहुँ की नहिं सामा॥
द्वारे खड़ो द्विज दुर्बल, देखि रह्यो चकिसों वसुधा अभिरामा।
दीनदयालु को पूछत नाम, बतावत आपनो नाम सुदामा॥

[६७९]

ऐसे बिहाल बिवाइन सों भये, कंटक जाल लगे पुनि जोये।
हाय महादुख पाये सखा तुम, आयो इतै न कितै दिन खोये॥
देखि सुदामा की दीन दसा, करुणा करिकै करुणानिधि रोये।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोये॥

[६८०]

भौन भरे पकवान मिठाइन, लोग कहैं निधि हैं सुखमा के।
साँझ सबेरे पिता अभिलाषत, दाखन प्राखत सिंधु रमाके॥
ब्राह्मण एक कोऊ दुखिया सेर, पावक चामर लायो समाके।
प्रीति की रीति कहा कहिये, तिहि बैठे चबावत कंत रमा के॥

[६८१]

सुनो दिलजानी मेरे दिल की कहानी,
तुम दस्त ही बिकानी बदनामी भी सहूँगी मैं।
देवपूजा ठानी मैं नेवाज हू भुलानी,
तजे कलमा कुरान सारे गुनन गहूंगी मैं॥

श्यामला सलोना सिरताज सिर कुल्ले दिये,
तेरे नेह दाग मैं निदाग ही दहूंगी मैं।
नन्द के कुमार कुरबान, ताणी सूरत पै,
ताणी नाल प्यारे हिन्दुवानी हो रहूंगी मैं॥

[६८२]

या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।
आठहुँ सिद्धि नवो निधि कौ सुख नन्द की गाय चराय बिसारौं॥
'रसखानि' कबौं इन आंखिन सों ब्रज के वन बाग तड़ाग निहारौं।
कोटिन हू कल धौत, धाम करील की कुंजन ऊपर वारौं॥

[६८३]

मानुस हों तो वही 'रसखानि' वसौं ब्रज गोकुल ग्राम के ग्वारन।
जा पशु हों तो कहा बस मेरो चरौं मिलि नन्द की धेनु मँझारन॥
पाहन हों तो वही गिरि को जो करयो ब्रज छत्र पुरन्दर धारन।
जो खग हों तो बसेरो करों मिलि कालिन्दी कूल कदम्ब की डारन॥

[६८४]

ब्रह्म मैं हूँढ्यो पुरानन गानन वेद ऋचा सुन्यो चौगुने चायन।
देख्यो सुन्यो कबहूँ न कितू वह कैसे स्वरूप औ कैसे सुभायन॥
टेरत हेरत हारि परयो 'रसखानि' बतायो न लोग लुगायन।
देख्यो दुरो वह कुंजकुटीर में बैठ्यो पलोटत राधिका पायन॥

[६८५]

सेस गनेस महेस सुरेस दिनेसहु जाहि निरंतर ध्यावैं।
जाहि अखंड अछेद अभेद अनादि अनंत सुवेद बतावैं॥
संकर से सुर जाहि रटैं चतुरानन ध्यानन पार न पावैं।
ताहि अहीर की छोहरियाँ छछिया भरि छाछि पै नाच नचावैं॥

[६८६]

कथा में न कंथा में न तीरथ के पंथा में न,
पोथी में न पाथ में न साथ की वसीति में।
जटा में न मुण्डन न तिलक त्रिपुण्डन,
न नदी कूप कुण्डन अन्हान दानरीति में॥
पीठ मठ मण्डल न कुण्डल कमण्डल,
न माला दण्ड में न देव देहर की भीति में।
आपही अपार परावार प्रभु पूरि रह्यो,
पाइये प्रगट परमेश्वर प्रतीति में॥

[६८७]

मेरे तो एक राम नाम दूसरा न कोई।
दूसरा न कोई साधो, सकल लोक जोई॥
भाई छोड़्या बंधु छोड़्या छोड़्या सगा सोई।
साधसंग बैठ बैठ लोक लाज खोई॥

भगत देख राजी हुई जगत देख रोई।
प्रेमनीर सींच सींच विष वेल धोई॥
दधिमथ घृत काढ़ लियो डार दई छोई।
राणा विष को प्यालो भेज्यो पीय मगन होई॥
अब तौ बात फैल पड़ी जाणे सब कोई।
'मीरा' राम लगण लागी होणी होय सो होई॥

[६८८]

मीरा मगन भई हरि के गुण गाय—
साँप पिटारा राणा भेज्या, मीरा हाथ दियो जाय।
न्हाय धोय जब देखण लागी, सालिग राम गई पाय॥
जहर का प्याला राणा भेज्या, अमृत दीन्ह बनाय।
न्हाय धोय जब पीवण लागी, हो अमर अँचाया॥
सूल सेज राणा ने भेजी, दीज्यो मीराँ सुलाय।
साँझ भई मीरा सोवण लागी, मानो फूल बिछाय॥
'मीरा' के प्रभु सदा सहाई, राखे विघन हटाय।
भजन भाव में मस्त डोलती, गिरधर पै बलि जाय॥

[६८९]

जागत रामहिं सोवत रामहिं बोलत रामहिं बान परो है।
स्वास उसास यथा जल पीवत रैन दिना यह टेक धरो है॥

ऊठत बैठत गान करै पुनि जेंवत हू बिसरै न घरी है।
यों 'हरिदास' कहै रसना रस रामहिं रामहिं राम भरी है॥

[६९०]

घी अरु खाँड मिलै तो खुशी औ खुशीहु मिलै जो पै राखिहु भाजी।
सूखिहु रोटी को टूक मिलै औ सुखी जो कहूँ मिलै थारिहु साजी॥
हाथी मिलै अरु अश्व मिलै सुख पाल मिलै हमरी सब राजी।
राजी रहै 'रसिकेश' घने नित हैं हम राम की राजी में राजी॥

[६९१]

धूत कहौ अवधूत कहौ रजपूत कहौ जोलहा कहौ कोऊ।
काहू की बेटी सों बेटा न व्याहब काहू की जाति बिगार न सोऊ॥
'तुलसी' सरनाम गुलाम है राम को जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।
मांगि कै खैबो मसीत को सोइबो लैवे को एक न दैवे को दोऊ॥

[६९२]

कोउक निंदत कोउक वंदत कोउक देत हैं आय कै भच्छन।
कोउक आप लगावत चंदन कोउक डारत धूरि ततच्छन॥
कोऊ कहै यह मूरख दीसत कोऊ कहै यह आय विचच्छन।
'सुंदर' काहू सों राग न द्वेष सोई सब जानहु साधु के लच्छन॥

[६९३]

प्रीति की रीति कछू नहिं राखत जाति न पांति नहीं कुल गारो।
प्रेम के नेम कछू नहिं दीसत लाज न कानि लग्यो सब खारो॥

लीन भयो हरि सों अभि अंतर आठहुँ याम रहै मतवारो।
'सुंदर' कोऊ न जानि सकै यह गोकुल गाम को पैंडोई न्यारो ॥

[६९४]

जो नर दुख में दुख नहिं मानै।
सुख सनेह अरु भय नहिं जाके कंचन माटी जानै ॥
नहिं निंदा नहिं अस्तुति जाके लोभ मोह अभिमाना।
हर्ष शोक तें रहे नियारो नाहिं मान अपमाना ॥
आसा मनसा सकल त्यागिकै जगते रहै निरासा।
काम क्रोध जेहि परसैं नाहिंन तेहि घट ब्रह्म निवासा ॥
गुरु किरपा जेहि नर पै कीन्ही, तिन यह जुगति पिछानी।
'नानक' लीन भयो गोविन्द सों ज्यों पानी संग पानी ॥

[६९५]

वासना रहित सिद्ध आसन विराजमान,
नित्यहि समाधि जाके जागिबो करत है।
दुतिया दुजेस सम दुति दमकाय दृग,
त्रिकुटिहि मांहि अनुरागिबो करत है ॥
माया को भरम त्यागि करम जराय मन,
परम अनन्द ही सों पागिबो करत है।
धन्य वह जोगी जाके अन्तर निरन्तर,
अखण्ड चिद् ब्रह्म जोति जागिबो करत है ॥

[६९६]

सब में रहै न्यारे सदा सब ते मन माया मलीन को जीतत हैं।
'पदमाकर' वेदन को गुनि कै सुनि कै मति ज्ञान को गीतत हैं।
धन हैं जन जे निज देह में गेह में आतम बुद्धि न चीतत हैं।
परिपूरन ब्रह्म बिचारहि में जिनके छिन से दिन बीतत हैं।

[६९७]

निसि वासर वस्तु विचारहि कै मुख साँचु हिये करुना धनु है।
अघ निग्रह संग्रह धर्म कथानि परिग्रह साधुनि को गनु है॥
कहि 'केशव' भीतर जोग जगै अति बाहिर भोगनि को तनु है।
मनु हाथ सदा जिनके तिनको बन ही घरु है घरु ही बनु है॥

[६९८]

आरतपालु कृपालु जो राम जेहीं सुमरे तिहि को तह ठाढ़े।
नाम प्रताप महा महिमा अकरे किये खोटेऊ छोटेऊ बाढ़े॥
सेवक एकते एक अनेक भये 'तुलसी' तिहु तापन डाढ़े।
प्रेम ब्रदौं प्रहलादहि को जिन पाहन ते परमेश्वर काढ़े॥

संगीत-प्रकरण

[६९९]

भुइयाँ खेड़े हर है चार। घर है गिहिथिन गऊ दुधार॥
रहर की दाल जड़हन का भात। गागल निबुआ औ घिवतात॥
सहरस खंड दही जो होय। बांके नैन परोसै जोय॥
कहे 'घाघ' तब सबही झूठाँ। उहाँ छांड़ि इहवें बैकूँठा॥

[७००]

विधि सों कवि सब विधि बड़े या में संशय नाहिं।
षट रस विधि की सृष्टि में नव रस कविता मांहि॥
नवरस कविता मांहिं एक से एक सुलच्छन।
'गिरधरदास' विचारि लेतु मन मांहिं विचच्छन॥
काल, कर्म अनुसार रचत विधि क्रम गहि हितु सों।
कवि इच्छा अनुसार सृष्टि विरचत वर विधि सों॥

[७०१]

जाको खोजत सो मिलै, यामें संसय नाहिं।
विरचै माखी मधु सुधा भीषन वन के माहिं॥
भीषन वनके माहिं सिंह गजराज विदारैं।
मुकुता मिलै मराल मिलिन्द सरोज विहारै॥
बरनें 'दीनदयाल' स्वाति जलऊ पपिहा को।
मिलै भली विधि आय जौन जग खोजत जाको॥

[७०२]

साईं बैर न कीजिये गुरु पंडित कवि यार।
बेटा बनिता पौरिया जज्ञ करावन हार॥
जज्ञ करावन हार राजमंत्री जो होई।
बिप्र परोसी वैद्य आपको तपै रसोई॥
कह 'गिरधर कबिराय' जुगुन ते यह चलि आई।
इन तेरह सों तरह दिये बनि आवै सांई॥

[७०३]

विना बिचारे जो करै सो पाछे पछिताय।
काज बिगारे आपनो जग में होत हँसाय॥
जग में होत हँसाय, चित्त में चैन न पावै।
खान पान सनमान राग रंग मनहिं न भावै॥
कह 'गिरधर कविराय' दुःख कछु टरत न टारे।
खटकत है जिय मांहिं कियो जो बिना विचारे॥

[७०४]

दौलत पाय न कीजिये सपने में अभिमान।
चंचल जल दिन चारि को ठाँउ न रहत निदान॥
ठाँउ न रहत निदान जियत जगमें यश लीजै।
मीठे वचन सुनाय विनय सबही की कीजै॥

कह 'गिरधर कविराय' अरे यह सब घट तौलत।
पाहुन यह दिन चारि रहत सबही के दौलत॥

[७०५]

साईं सब संसार में मतलब को व्यवहार।
जब लग पैसा गाँठ में तब लग यार हजार॥
तब लग यार हजार यार संगहि सँग डोलै।
पैसा रहा न पास यार मुँह सों नहिं बोलै॥
कह 'गिरधर कबिराय' जगत यहि लेखा भाई।
करत बेगरजी प्रीति यार बिरला कोई सांई॥

[७०६]

सरवर नीर न पीवहीं स्वांति बुंद की आस।
केहरि कबहुँ न तृन चरै जो ब्रत करै पचास॥
जो ब्रत करै पचास विपुल गजजूह बिदारै।
धन ह्वै गर्ब न करै, निधन नहिं दीन उचारै॥
नरहरि कुलक सुभाव मिटै नहिं जब लग जीवै।
बरु चातक मरि जाय नीर सरवर नहिं पीवै॥

[७०७]

धोखे दाड़िम के सुआ गयो नारियर खान।
खन खाइ भई लज्जा फिरि लाग्यो पछतान॥

फिरि लाग्यो पछतान बुद्धि अपनी को रोयो।
निरगुनियनके पास बैठि गुन अपने खोयो॥
कह 'गिरधर कविराय' कहूँ जैये नहिं ओखे।
तोरयो चोंच खटाक सुआ दाड़िम के धोखे॥

[७०८]

देखो कपटी दंभ को कैसो याको काम।
वेचनि हारो बेर को देत दिखाय बदाम॥
देत दिखाय बदाम लिये मखमल की थैली।
बाहिर बनी बिचित्र बस्तु अंतर अति मैली॥
बरनै 'दीनदयाल' कौन करि सकै परेखी।
ऊंची बैठि दुकान ठगै सिगरो जग देखी॥

[७०९]

जग मैं गुनमय करि तुमै बरनै सकल महान।
कहा भयो जो नहिं कियो चपल एक अलिमान॥
चपल एक अलि मान कियो नहिं कछुक नसायो।
हे कपास! सहि खेद धन्य परछेद दुरायो॥
बरनै 'दीनदयाल' स्याम याको गनि ठग मैं।
मधुप मंद किमि जान तुमैं बुध जानै जग मैं॥

[७१०]

मैलो मृग धारे जगत नाम कलंको जाग।
तऊ कियो न मयंक ! तुम सरनागत को त्याग॥
सरनागत को त्याग कियो नहिं ग्रसे राहु के।
लिये हिये में रहो तजो नहिं कहे काहु के॥
बरनै 'दीनदयाल' जोति मिस सो जस फैलो।
हौ हरि को मन सही कहैं नर पामर मैलो॥

[७११]

भारी भार भर्यो बनिक ! तरिबो सिंधु अपार।
तरी जरजरी फँसि परी खेवनिहार गँवार॥
खेवनिहार गँवार ताहि पर पौन झँकोरै।
रुकी भँवर में आय उपाय चलै न करोरै॥
बरनै 'दीनदयाल' सुमिर अब तू गिरिधारी।
आरत जन के काज कला जिन निज संभारी॥

[७१२]

लोहा ! द्रोह न कीजिये पारस मनि के साथ।
ताहि परसि पैहै प्रभा भूपमनिन के माथ॥
भूप मनिन के माथ तोहि लखि जग हरखैगो।
करि करि कोटि प्रनाम सुमन तो पै बरखैगो॥

वरनै 'दीनदयाल' कौन सतसंग न सोहा।
पैहै रूप अनूप बढ़ैगी कीमति सौहा॥

[७१३]

राही सोवत इत कितै चोर लगैं चहुँ पास।
तो निज धन के लेन को गनैं नींद की स्वाँस॥
गिनैं नींद की स्वाँस बास बसि तेरे डेरे।
लिये जात बनि मीत माल ये साँझ सबेरे॥
वरनै 'दीनदयाल' न चीन्हत है तू ताही।
जाग जाग रे जाग इतै कित सोवत राही॥

[७१४]

वा दिन की सुधि तोहि को भूलि गई कित साखि।
वागवान गहि घूर ते लायो गोदी राखि॥
लायो गोदी राखि सींचि पाल्यो निज कर ते।
भूलि रह्यो अब फूलि पाय आदर मधुकर ते॥
वरनै 'दीनदयाल' बड़ाई है सब तिन की।
तू झूमै फलभार भूलि सुधि को वा दिन की॥

[७१५]

वरखै कहा पयोद! इत मानि मोद मन माँहि।
यह तौ ऊसर भूमि है अंकुर जमिहै नाहिं॥

अंकुर जमिहै नाहिं बरस शत जो जल दैहै।
गरजै तरजै कहा वृथा तेरो श्रम जैहै॥
बरनैं 'दीनदयाल' न ठौर कुठौरहि परखै।
नाहक गाहक बिना बलाहक ह्याँ तू बरखै॥

[७१६]

आए ग्रीषम देखिहौं लघु सर ! तेरी सान।
कहा करै एतो बड़ो पावस पाय गुमान॥
पावस पाय गुमान भरो अति भूलि रह्यो है।
भेक बकन के संग उमंगन फूलि रह्यो है॥
बरनैं 'दीनदयाल' दिना दस के चलि जाए।
तब देखिहौं तरंग तीय वह ग्रीषम आए॥

[७१७]

हंस ! वहाँ रहिए नहीं सरवर गयो सुखाय।
जो रहियौ तो सीस पर बकुला दैहै पाँय॥
बकुला दैहै पाय कीच तें कारे ह्वैहौ।
लोक हँसाई लाभ और नहिं इज्जत पैहौ॥
कह 'गिरधरकविराय' मोहिं यहु एकहि संसा।
या हू ते कछु घाट, अवरहू ह्वैहै हंसा॥

[७१८]

सेमर मैं भरमैं कहा ह्याँ अलि ! कछू न बास।
कमल मालती माधवी सेइ न पूरी आस॥
सेइ न पूरी आस बास बन हेरत हारो।
सुरसरि बारि विहाय स्वाद चाहै जल खारो॥
बरनै 'दीनदयाल' कहा खट पद ये करमै।
हैं पग पसु तें ड्योढ़ रमै तातें सेमर मैं॥

[७१९]

तेरे ही अनुकूल पिय किन बिनवै प्रिय बोलि।
घट में खट पट मति करै घूँघट को पट खोलि॥
घूंघट को पट खोलि, देखि लालन की सोभा।
परमरम्य बुधगम्य जासु छबि लखि जग लोभा॥
बरनै 'दीनदयाल' कपट तजि रहु प्रिय नेरे।
बिमुख करावनि हार तोहि सनमुख बहुतेरे॥

[७२०]

रसना ! ए तो दसन हैं सुनि द्विज नाम न मोहि।
इन्हें न पंडित मानिये खंडित करिहैं तोहि॥
खण्डित करिहैं तोहि रही निज रूप बचाये।
तोतें बहुत कठोर जोर इन चने चबाये॥

बरनै 'दीनदयाल' समुझि इनके संग बसना।
ऊपर उज्वल रूप देखि मति मोहै रसना॥

[७२१]

जीभि जोग अरु भोग जीभि सब रोग बढ़ावै।
जीभि करै उद्योग जीभि लै कैद करावै॥
जीभि स्वर्ग लै जाय जीभि सब नर्क दिखावै।
जीभि मिलावै राम जीभि सब देह धरावै॥
लै जीभि ओठ एकत्र करि बाँट सिहारे तौलिये।
'बैताल' कहै विक्रम सुनो जीभि सँभारे बोलिये॥

[७२२]

टका करै कुल हूल टका मिरदंग बजावै।
टका चढ़ै सुखपाल टका सिर छत्र धरावै॥
टका माइ अरु बाप टका भाइन को भैया।
टका सासु अरु ससुर टका सिर लाड़ लड़ैया॥
सो एक टका बिन टुक टुका होत रहत नित राति दिन।
'बैताल' कहै विक्रम सुनो धिक जीवन टक एक बिन॥

[७२३]

को सिखवत कुलवधू लाज गृहकाज रंगरति।
हंसन को सिक्खवत करन पय पान भिन्न गति॥

सज्जन को सिक्खवत दान अरु सील सुलच्छन।
सिंहन को सिक्खवत हनन गजकुंभ ततच्छन॥
बिधि रच्यो जानि 'नरहरि' निरखि कुल सुभाव को मिट्टवै।
गुणधर्म अकब्बरसाह सो को नर काको सिक्खवै॥

[७२४]

जिहि मुच्छन धरि हाथ कछू, जग सुजस न लीजै।
जिहि मुच्छन धरि हाथ कछू परकाज न कीजै॥
जिहि मुच्छन धरि हाथ कछू पर पीर न जानी।
जिहि मुच्छन धरि हाथ दीन लखि दया न आनी॥
वह मुच्छ नाहिं है पुच्छ अज कवि भरमी उर आनिये।
नहिं बचन लाज नहिं दान रति तिहि मुख मुच्छ न जानिये॥

[७२५]

मरै बैल गरियार मरै वह अड़ियल टट्टू।
मरै कर्कशा नारि मरै वह पुरुष निखट्टू॥
सेवक वह मरि जाय जौन कछु समय न जानै।
स्वामी मरै सु तौन जौन सेवा नहिं मानै।
यजमान सूम मरि जाय तो काहि सुमिरि दुख रोइये॥
'कवि गंग' कहै मरिजाय सो जाहि सुने सुख सोइये॥

[७२६]

जदपि कुसँग बहुलाभ, तदपि वह संग न किज्जिय ।
जदपि धनिक हो निधन, तद्पि घटि प्रकृति न लिज्जिय ॥
जदपि दान नहिं सक्ति, तद्पि सनमान न खुट्टिय ।
जदपि प्रीति उर घटै, तदपि मुख उपर न टुट्टिय ॥
सुन सुजस दुआर किवार है, कुजस जमाल न गुविकये ।
जिय जाय जदपि भलपन करत, तऊ न भलपन चुविकये ॥

[७२७]

घर मलीन बिन घरनि, धरनि बिन नृपति मलीनो ।
मुख मलीन बिन पान, मान बिन मानुष हीनो ॥
बिन दिनेस दिन मलिन, मलिन पातन बिन तरुवर ।
कुल सपूत बिन मलिन, मलिन वारिज बिन सरवर ॥
विद्याविहीन बाँभन मलिन, मलिन पूर्ण इक द्रव्यबिन ।
यह जानि भनै कवि 'उदयमनि' हिय मलीन हरिनाम बिन ॥

[७२८]

ससि बिन सूनी रैन, ज्ञान बिन हिरदय सूनो ।
कुल सूनो बिन पुत्र, पत्र बिन तरुवर सूनो ॥
गज सूनो बिन दंत, ललित बिन सायर सूनो ।
बिप्र सून बिन वेद, भौंर बिन पुहुप विहीनो ॥

हरिनाम भजन बिन संत अरु, घटा सून बिन दामिनी।
'बैताल' कहै बिक्रम सुनो, पति बिन सूनी कामिनी॥

[७२९]

धिक मंगन बिन गुणहिं गुण सुधिक सुनत न रीझै।
रीझ सुधिक बिन मौज मौज धिक देतजु खीझै॥
दीबो धिक बिन साँच साँच धिक धर्म न भावै।
धर्म सुधिक बिन दया दया धिक अरि कहँ आवै॥
अरि धिक चित्त न सालई चित धिक जहँ न उदार मति।
मति धिक 'केसव' ज्ञान बिन ज्ञान सुधिक बिन हरि भगति॥

[७३०]

समय मेघ बरसंत समय सिर होत सबै फल।
जरा जवानी समय समय ही जात देहबल॥
समय सिद्ध हू मिलै समय पंडित हू चूकै।
समय प्रीति चित घटै, समय सरवर हू सूकै॥
कोउ द्वार जु आवै समय सिर, समय पाय गिर परहि नर।
गोविंद अटल 'कविंद' कहि जो कीजै सो समय सिर॥

[७३१]

नरपति मंडन नीति पुरुष मंडन मन धीरज।
पंडित मंडन विनय तालरस मंडन नीरज॥

कुल तिय मंडन लाज, वचन मंडन प्रसन्न मुख।
मति मंडन कवि कर्म, साधु मंडन समाधि सुख॥
वर भुज समर्थ मंडन छमा, गृहपति मंडन विपुल धन।
मंडन सिधान्त रुचि सान्त कहि काया मंडन नवल तन॥

[७३२]

तजहु जगत बिन भवन, भवन तजि तिय बिन कीनो।
तिय तजि जन सुख देय सुक्ख तजि संपति हीनो॥
संपति तजि बिन दान दान तजि जहँ न विप्र मति।
विप्र-तजहु बिन धर्म, धर्म तजिये बिन भूपति॥
तज भूप भूमि बिन भूमि तजि दीह दुर्ग बिन जो बसै।
तज दुर्ग सु 'केसवदास' कबि जहाँ न जल पूरन बसै॥

[७३३]

सरधा सँचि सँचि मरै सहद मधु पान करत सुख।
खनि खनि मरत गँवार कूप जल पथिक पियत सुख॥
बागवान बहि मरत फूल बाँधत उदार नर।
पचि पचि मरत सुवार भूप भोजननि करत वर॥
भूषन सोनार गढ़ि गढ़ि मरत भामिनि भूषित करत तन।
कहि 'केसव' लेखक लिखि मरत पंडित पढ़त पुरान गन॥

[७३४]

ज्ञानवन्त हठ करै निधन परिवार बढ़ावै।
बँधुआ करै गुमान धनी सेवक ह्वै धावै॥
पंडित किरिया हीन राँड़ दुरबुद्धि प्रमाने।
धनी न समझै धर्म नारि मरजाद न माने॥
कुलवंत पुरुष कुल विधि तजै, बंधु न मानै बंधु हित।
सन्यास धारि धन संग्रहै ये जग में मूरख विदित॥

[७३५]

सठन सनेह जु करै मान वेचैं सुलुब्ध कहँ।
पिय-वियोग सुख चहै साँकरे तजै स्वामि कहँ॥
मन बंधहि पर रमनि खेल दुर्जन सँग खेलहिं।
नृपति मित्र करि गिनहिं सर्प मुख अंगुलि मेलहिं॥
चुक्कहित समय नरहरि निरखि जड़ आगे बिस्तरहिं गुन।
पछतांहि सु ते नर भगति विन दौलत दलपति खान सुन॥

[७३६]

तिय पति सों प्रतिकूल बापसों पूत कपट किय।
भाइन छोड़यो भाय मित्र को मित्र दाव दिय॥
मेघ न बरषै नीर पीर मद्दत नहिं लग्गै।
तरवर छायाहीन वचन शाहन के डग्गै॥

सब तेज हीन संसार भौ तीर्थ व्रत निष्फल गयो।
'बैताल' कहै विक्रम सुनौ अब प्रसिद्ध कलजुग भयो॥

[७३७]

कमलतंतु सों बांधि गजहिं बस करन उमाहत।
सिरिस पुहुप के तार वज्र कै बेध्यो चाहत॥
बूंद सहत की डारि समुद को खार मिटावत।
तैसे ही हित बैन खलन के मनहिं रिझावत॥
वे नीच अपनपौ तजत नहिं ज्यों भुअंग त्यों दुष्ट जन।
पय प्याय सुनावत रागहू डसिबेही में रहत मन॥

[७३८]

नरहरि धरहरि को करै जननि सुतै विष देइ।
बारि जु खेतहि हठि चरै साहु परद्धन लेइ॥
साहु परद्धन लेइ नाव करिया गहि बोरे।
जो पहरू सो चोर प्रीति पीतम हठि तोरे॥
नृपति प्रजहिं दुख देइ कवन समरथ करि धरहरि।
छितिपति अकबर साहि सुनो बिनती करि 'नरहरि'॥

[७३९]

अरिहु दंत तृन धरत तिनहिं मारत न सबल कोइ।
ये प्रतच्छ तृन चरहिं बचन उच्चहिं दीन होइ॥

हिंदुहिं मधुर न देहिं कटुक तुरकहिं न पियावहिं।
अमृत पय नित स्रवहिं बच्छ महि थम्भन जावहिं॥
कह 'नरहरि' सुनि अकबर विनय करत गऊ जोरे करन।
केहि कारन मोकह मारियत मुयेहु चाम सेइय चरन॥

[७४०]

चोरि सकत नहिं चोर, भोर निसि पुष्ट करत हित।
अर्थिन हूं को देत होत छिन छिन में अगनित॥
कबहूँ बिनसति नाहिं लसति विद्या सुगुप्त धन।
जिनको यह सुख साज, सदा तिनको प्रसन्न मन॥
राजाधिराज छिति छत्रपति यह एतो अधिकार लहि।
उनको निहारि दृग फेरिबो, यह तुमको है उचित नहिं॥

[७४१]

सब ग्रंथन को ज्ञान मधुर बानी जिनके मुख।
नित प्रति विद्या देत सुजस को पूरि रह्यो सुख॥
ऐसे कबि जिहि देश बसत निर्धनता लहि अति।
राजा नाहिं प्रवीन भई याहीं ते यह गति॥
वे हैं विवेक संपति सहित सब पुरुषन में अतिहि वर।
घटि कियो रतन को मोल जिन तेई जौहरी कूर नर॥

[७४२]

सक्ति कवित्त बनाइबे की जिहिं जन्म नक्षत्र में दीनी बिधातें।
काव्य की रीति सिखै सु कबीन तें, देखै सुनै बहु लोक की बातें॥
'दासजू' जामें एकत्र ये तीन, बनै कविता मन रोचक तातें।
एक बिना न चलै रथ जैसे, धुरंधर सूत की चक्र निपातें॥

[७४३]

देत हैं अंबर वे बकसीस ये देत असीस सदा सुखदाई।
वे मुकताहल हीरन देत ये देत हैं कीरति जो जग छाई॥
वे बसु देत नवों रस ये करि छन्द प्रबंधन की सरसाई।
राजन सों कविराजन सों न निहोरे कछू समहै बदलाई॥

[७४४]

घोंघन में बसि के न मिलै रस जे मुकतान पै चोंच चलैया।
मालती की ललिका तजि कै केहि काम करील की कोटि कनैया॥
श्री महाराज सरोवर हौ हम हंस हमेस यहाँ के बसैया।
कोटिन काल कराल परै पै मराल न ताकि हैं तुच्छ तलैया॥

[७४५]

अर्थ है मूल भली तुक डार सुअच्छर पत्र को पेखिकै जीजै।
छंद है फूल नवोरस हैं फल, दान के वारिसों सींचिबो कीजै॥
'दीन' कहै यों प्रवीनन सों, कवि की कविता रसराखि कै पीजै।
कीरति के बिरवा कवि हैं, इनको कबहूँ कुम्हिलान न दीजै॥

[७४६]

ऐड़ सो बैठे सभासद साथ सुतत्थ कथा तें महासुभ मानै।
न्यात्र निवेरे रहै निरसंक सुमंत्रिन के करै मंत्र प्रमानै॥
बात सुनै सब ही की सदा 'भगवंत' कहै रस बातन ठानै।
रीझ औ खीझ पचावै नहीं तिहि भूपति को सब ही डर मानै।

[७४७]

जो बिन कामहिं चाकर राखत ऐन अनेक वृथा बनवावै।
आमद तें अधिकै करै खर्च रिनै करि ब्योहरै ब्याज बढ़ावै॥
बूझत लेखा नहीं कछु वै नहिं नीति की राह प्रजानि चलावै।
भाषत है 'बिसुनाथ' ध्रुवै तेहि भूपति के घर दारिद आवै॥

[७४८]

बैद को बैद गुनी को गुनी ठग को ठग ठूमक को मन भावै।
काग को काग मराल मराल को कान्ध गधा को गधा खजुलावै॥
'कृष्ण' भनै बुध को बुध त्यों अरु रागी को रागी मिलै सुर गावै।
ज्ञानी सो ज्ञानी करै चरचा लबरा के ढिगै लबरा सुख पावै॥

[७४९]

पंडित पंडित सो खल मंडित सागर सागर सो सुख मानै।
संतहि संत अनंत भले, गुनवंतहि को गुनवंत बखानै॥
जा कहँ जापँह हेत नहीं कहिये सु कहा तिहि की गति जानै।
सूर को सूर सती को सती अरु 'दास' जती को जती पहिचानै॥

[७५०]

योगी वही जो रँगे मन आपनो, आन सुसँग में ध्यान लगावे ।
संत वही जो तजै ममता, अरु आनन्द में हरि के गुन गावें ॥
पुत्र वही जो पिता को नवै, अरु कै पुरुषारथ को दिखलावै ।
द्रव्य वही जो उठै परस्वारथ, मित्र वही जो विपत्ति घटावें ॥

[७५१]

साँप सुसील दयाजुत नाहर काक पवित्र औ साँचो जुआरी ।
पावक सीतल पाहन कोमल रैन अमावस की उजियारी ॥
कायर धीर सती गनिका मतवारो कहा मत वारो अनारी ।
'मोतिय राम' बिचारि कहै नहिं देखी सुनी नरनाह की यारी ॥

[७५२]

ज्ञान घटे ठग चोर की संगति, मान घटे पर गेह के जाए ।
पाप घटे कछु पुन्य किये अरु, रोग घटे कछु औषध खाए ॥
प्रीति घटे कछु माँगन तें अरु, नीर घटे रितु ग्रीषम आए ।
नारि प्रसंग ते जोर घटे जम त्रास घटे हरि के गुन गाए ॥

[७५३]

पीनस वारो प्रवीन मिलै तो कहाँ लौं सुगंधी सुगंध सुंघावै ।
कायर कोपि चढ़ै रन में तो कहां लगि चारन चाव बढ़ावै ॥
जो पै गुनो को मिलै निगुनी तौ दुखी कहै क्यों करि ताहि रिझावै ।
जैसे नपुंसक नाह मिलै तो कहाँ लगि नारि सिंगार बनावै ॥

[७५४]

आँधरे को प्रति बिंब कहा बहिरे को कहा सुर राग की तानै।
आदी को स्वाद कहा कपि को पर नीच कहा उपकारहि मानै॥
भेड़ कहा लै करै बुकवा, हरवाह जवाहिर का पहिचानै।
जाने कहा हिंजरा रति की गति आखर की गति का खर जानै॥

[७५५]

भरिबो है समुद्र को शंबुक में छिति को छिगुनी पर धारिबो है।
बँधिबो है मृनाल सो मत्तकरी जुही फूलसों शैल बिदारिबो है॥
गनिबो है सितारन को 'कवि शंकर' रज्जु सों तेल निकारिबो है।
कविता समुझाइबो मूढ़न को, सविता गहि भूमि पै डारिबो है॥

[७५६]

सोहति सो न सभा जहँ वृद्ध न, बृद्ध न ते जु पढ़े कछु नाहीं।
ते न पढ़े जिन साधुन सोधित दोह दया न दिपै जिन माहीं॥
सो न दया जो न धर्म धरै अरु धर्म न सो जहँ दान वृथाहीं।
दान न सो जहाँ साँच न 'केसव' साँच न सो जु बसै छल छाहीं॥

[७५७]

बालि बँध्यो बलिराज बँध्यो, कर सूलिके सूल कपाल थली है।
कास जरयो जर काल परयो बँध सेत धरी विप हाल हली है॥
सिंधु मथ्यो किल काली नथ्यो कहि 'केशव' इंद्र कुचाल चली है।
रामहु की रीह रावन वाम चहूँ जुग एक अदृष्ट बली है॥

[७५८]

दाख पकी तब चोंचौ पकी जब बीन बज्यो बहिरो भयो कानो ।
मेनका आय मिली तबहीं जब देह ते कामहु दूरि परानो ॥
जैसोई चाहत तैसो करै जग जाहिर है विधिको यह बानो ।
पारस पायो परयो जो कहूँ तो जहान ते लोह को लेस हिरानो ॥

[७५९]

धूरि चढ़ै नभ पौन प्रसंग तें, कीच भई जल संगति पाई ।
फूल मिलैं नृप पै पहुचैं कृमि काठन संग अनेक बिथाई ॥
चंदन संग कुठार सुगन्ध ह्वै, नीच प्रसंग लहै करुआई ।
'दास जू' देखो सही सब ठौरन, संगति को गुन दोष न जाई ॥

[७६०]

केवरो केतकी औ करना नव कंज परागन के रस की है ।
खूको गुलाब नेवारी जुही अरु वेला सुबास दिना दस की है ॥
चन्दन चूर मृगम्मद धूर कपूर के पाँडुरी की खसकी है ।
'माथुर प्यारे' सुगन्धन में, सबते खुसबू ये सिरे जस की है ॥

[७६१]

यहाँ साधु असाधु सुजाति कुजाति को, भेद न कोऊ बिचारि करैं ।
'द्विज श्यामजू' ये अविवेकी अमी औ हलाहल एक में घोरि भरैं ॥
तजैं पारस औ गहैं पाथर धाय, लखे इनके मुँह पाप परैं ।
तजिये यहि देशको यासों मराल, भले न इतै पग भूलि धरैं ॥

[७६२]

हीरन में मनिमें मिलिकै कबहूँ ढिग राजन के प्रगटैगो
हार ह्वै केलि समै तरुनीन के संभु उरोजन में लपटैगो
काह भयो जो न जान्यो अजान तो आखिर पाय ठिकाने ठटैगो
कौड़िन बीच गुह्यो जु पै भील तो पील के मोती को मोल घटैगो

[७६३]

जानत जे हैं सुजान तुम्हें, तुम आपने जान गुमान गहे हौ।
दूध औ पानी जुदे करिबे को जु कोऊ कहै तो कहा तुम कैहौ॥
सेत ही रंग मराल बने हौ, पै चाल कहौ जु कहाँ वह पैहौ।
प्यार सों कोऊ कछू हू कहै, बक हौ बक हौ झख मारत रैहौ॥

[७६४]

लूटिबे के नाते पाप पट्टनै तौ लूटियत,
तोरिबे को मोह तरु तोरि डारियत है।
घालिबे के नाते गर्व घालियत देवन के,
जारिबे के नाते अघ ओघ जारियत है॥
बांधिबे के नाते ताल बांधियत 'केशौदास'
मारिबे के नाते तौ दारिद मारियत है।
राजा रामचन्द्र जू के नाम जग जीतियत,
हारिबे के नाते आन जन्म हारियत है॥

[७६५]

बागन के बैर फूट कहिए कसैरन के,
कानन कितब फबै फूट काफरीन में।
दीपक में नेह हानि दण्ड ज्योतिसी के जानि,
मान वनिता में मद अन्धता करीन में॥
कोक में वियोग सोक सोहे खाट में बिलोक,
रुखता कठोरताई सूखी लाकरीन में।
रावरे के राजमें विराजै ब्रज ऐसी नीति,
भीति है दिवार पेचपारै पागरीन में॥

[७६६]

बारन में बंधन औ दण्ड जोग धारन में,
मान वनिता में मद राजे गज राज में।
रोगी ग्रंथ बैद कवि जोगी चक्रवाक रैनि,
आँधरो उलूक लुकै घोस ही के छाज में॥
परदोष चोरी व्याज निन्दा अलंकार,
ब्रज नाहीं नवला के मुख केलि कला काज में।
बागन में बैर एच पेच परै पागन में भीति है,
दिवार राज नीति ऐसी राज में॥

[७६७]

राजन की नीति गई मीतन की प्रीति गई,
नारि की प्रतीत गई जार जिय भायो है।
सिष्यन को भाव गयो पञ्चन को न्याव गयो,
साँच को प्रभाव गयो झूठहि सोहायो है॥
मेघन की वृष्टि गई भूमि सबी नष्ट भई,
सृष्टि पै सकल बिपरीत दरसायो है।
कीजिये सहाय हे कृपाकर गोविंद,
काल कठिन कराल कविकाल बनि आयो है॥

[७६८]

सूरताई आँधरे में दृढ़ताई पाहन में,
नासिका चनानि मध्य नौन रही हाट में।
धर्म्म रह्यो पोथिन वड़ाई रही वृच्छन,
बँधेज रह्यो पांतिन में पानी रह्यो घाट में॥
यह कलिकाल ने बिहाल कियो सब जग,
'नायक सुकवि' कैसी वनी है कुठाट में।
रज रही पंथन रजाई रही सीतकाल,
राई रही राई में रनाई रही भाट में॥

[७६९]

सुरती में सुरति नहाइवे में नेम रह्यो,
तेह रह्यो तिय में रुआव रह्यो रुक्का में।
सुद्र में सुचाल औ कुचाल रह्यो ब्राह्मण में,
चेरिन में प्रीति बड़ी मार रही मुक्का में॥
भनत 'कविन्द्र' अरु मंत्र टोना टामर में,
राग रह्यो कहरन रावरंग बुक्का में।
प्रीति औ प्रतीति चोर चुगुल के बीच रही,
दान रह्यो पातुर में सान रह्यो हुक्का में॥

[७७०]

देखे गनिका के मन काके ना आनंद होत,
संत गन देखे हिये आग सी बरत है।
निन्दक नकलवाले साले साल ओढ़ बैठे,
पंडित प्रवीन सबै ठारे में ठरत हैं॥
कहै 'कवि तोष' जग ताही को सपूत कहै,
छल बल करि पर सम्पति हरत है।
भले अनभले अनभले भले ठहरात कलि के,
कुचाल कछू जानि ना परत है॥

[७७१]

कूर भए कुवर मँजूर भये मालाकार,
सूर भये गुपुत असूर भये जवरे।
दाता भये कृपन अदाता कहैं दाता हम,
धनी भये निधनी निधन भये गवरे॥
साँचन की बात ना पत्यात कोऊ जग माँझ,
राज दर बारन बोलैये लोग लवरे।
भनत 'प्रवीन' अब छीन भई हिम्मति,
सो कलयुग अदल बदल डारे सबरे॥

[७७२]

सोई सही राजा दान धारा न रुकति जाकी,
जुद्ध जस धारा देवदारा मुख जोवती।
कवि 'हरकेस' कहै सोई सही राजा,
जाकी प्रजा ध्रुव धरम धुजा के छाँह सोवती॥
ऐसे तो कहावत हैं कोरी राजा कोढ़ी राजा,
घर घर राजा मान मैया मुँह जोवती।
सुमिरि सुमिरि चमरैलियाँ कुरैलियाहू
मूये तें खसम राजा राजा कहि रोवती॥

[७७३]

करन को दीनो नहिं दीखत कतहुँ चीन्हो
कविन कवित्त कीन्हें सुजस निकेत हैं।
भोज दीने हाथी घोड़े ओले से बिकाय गये,
जग तिनहूँ को अजहूँ लों जस सेत हैं॥
जिन की बड़ाई कवि निज मुख गाई,
भाई तेई नर अजर अमर पद लेत हैं।
जेतो कछु राजी ह्वै के कविंदत राजन को,
तेतो कहा राजा कवि लोगन को देत हैं॥

[७७४]

जौलों कोऊ पारखी सों होन नहिं पाई भेंट,
तबही लों तनक गरीब सों सरीरा हैं।
पारखी सों भेंट होत मोल बढ़ै लाखन को,
गुनन के आगर सुबुद्धि के गँभीरा हैं॥
'ठाकुर' कहत नहिं निन्दो गुनवारन को,
देखिबे को दीन ये सपूत सूरबीरा हैं।
ईश्वर के आनसतें होत ऐसे मानस,
जे मानस सहूर वारे धूर भरे हीरा हैं॥

[७७५]

एक तो देवैया होय दूसरे रिझैया होय,
तीसरे सरूपवन्त सुघर सलोनो गात।
चौथे चतुराई पांचे परखे हमारो गुन,
छठये छली न साते कहे सो निबाहै बात॥
आठे ऐंडदार नवें निपट निगाह राखे,
दसे दगाबाज नाहीं ग्यारहें गरू सोहात।
'माखन' गुनज्ञ ढिग ताही के रहत,
जाके ऐसे गुन ग्यारहौ समाज में सराहे जात॥

[७७६]

कोऊ केहूँ मिलै ताहि जानि सनमान करैं,
हँसि दीठि जोरैं पुनि हिय सों देखावै हेत।
आपनो गरब कहूँ नेक ना जनावै अरु,
कोऊ नहिं जाने ऐसे गुपतहिं दान देत॥
कोऊ उपकार करै ताको परकास करै,
धरम नियम पर नित रहै सावचेत।
आप उपकार करि चुप रहै,
'देवीदास' एते सब गुन कुलवन्त में दिखाई देत॥

[७७७]

पेट को निपट शुद्ध आँखन लजीलो वीर,
उर को गम्भीर होय मीठो महा मुख को।
बाँह को पगार पुनि पाँय को अडग होय,
बोलन को साँचो 'देवीदास' सूधो रुख को॥
मन को उदार ढील हाथ को अकेलो एक,
काछहीं को काठो है सहैया सुख दुख को।
पच के पितामह ने ऐसो जो संवारयो,
तव यातें कछु और हू सिंगार है पुरुख को॥

[७७८]

बैर प्रीति करिबे की मन में न राखे संक,
राजा राव देखि कै न छाती धक धाकरी।
आपनी उमंग की निबाहिबे की चाह जिन्हें,
एकसो दिखात तिन्हैं बाघ और बाकरी॥
'ठाकुर' कहत मैं विचार कै बिचार देखौ,
यहै मरदानन की टेक बात आकरी।
गही जौन गही जौन छोरी तौन छोड़ दई,
करी तौन करी बात नाक़री सो नाकरी॥

[७७९]

अंब से कलप तरु पाथर सों मारियत,
देत हैं सुफल उर औगुन न आने हैं।
उदर धरा को फारि नीर को निकासत हैं,
जग को जियावत हैं ममता न माने हैं॥
केतो दुख सहत कपास निज काज विन,
ढँकत कहाय लाज राखत जहाने हैं।
कनक पराये काज ताड़न दहन सहै,
ऐसे उपकारी दुख ही को सुख माने हैं॥

[७८०]

ऊँचो कर करै ताहि ऊँचो करतार करै,
ऊनी मन आने दूनी होति हरकति है।
ज्यों ज्यों धन धरै सँचे त्यों त्यों विधि खरै खैंचे,
लाख भांति करो कोटि भांति सरकति है॥
दौलत दुनी में थिर काहू की रही न यारो,
नामी वदनामी आनि पाछे परकति है।
राजा होय राव होय कोऊ उमराव होय,
जैसी होय नीति तैसी होति वरकति है॥

[७८१]

हिलिमिलि लीजिये प्रवीनन ते आठो याम,
कीजिये अराम जासों जिय को अराम है।
दीजिये दरस जाको देखिवे की हौस होय,
कीजिये न काम जासे नाम बदनाम है॥
'ठाकुर' कहत यह मनमें बिचारि देखो,
जस अपजस को करैया सब राम है।
रूप सो रतन पाय चातुरी सो धन पाय,
नाहक गँवाइबो गँवारन को काम है॥

[७८२]

सुपथ सुनीति चलै सुजस बसात जग,
सुबुध के संगत सदाई सुख माने हैं।
सुमति सुरीति प्रीति सुरुचि सुबोल बोलैं,
सुलह करत सबहीं सों मोद ठाने हैं॥
सुधरम रत सुकरम को करत नित,
बसत सुठौर सुरराज भासमाने हैं।
'गोकुल' सकार आदि कवित सुजन के हैं,
लीजिये ककार तौ कुजन के बखाने हैं॥

[७८३]

सासन करत सुख आय द्वार मंगन के,
सुचितें रहत देखि जाके यह बाने हैं।
सोहै सुरभाव मन दीन को बिलोकि द्वार,
सब देन कहैं, बोलि सीम नात आने हैं॥
सुर गति लहत सहत पर मोद हेत,
देवे में सुलभ धन मन अनुमाने हैं।
'गोकुल' सकार आदि दानी के सुभाव सो है,
लीजिये दकार तौ बखील के बखाने हैं॥

[७८४]

नाहीं नाहीं करै थोरे माँगे सब दैन कहै,
नंगन को देखि पट देत बार बार है।
जिनके लखत भली प्रापति की घरी होत,
सदा सब जन मन भाय निरधार है॥
भोगी ह्वै रहत बिलसत अवनी के मध्य,
कन्न कन जोरे दान पाट परि वार है।
'सेनापति' वचन की रचना विचारि देखो,
दाता और सूम दोऊ कीन्हें एक सार है॥

[७८५]

सुजस गनावैं भगतन हीं सो प्रेम करैं,
चित अति ऊजरे भजत हरि नाम हैं।
दीन के दुखन देखे आपहू सुख न लेखैं
विप्र पाप रत तन मैन मोह धाम हैं॥
जग पर जाहिर हैं धरम निवाहि रहैं,
देव दरसन तें लहत विसराम हैं।
'दास जू' गनाये ये असज्जन के काम हैं,
समुझि देखो येई सब सज्जन के काम हैं॥

[७८६]

हँस के भजन में न भूसुर के तन में,
न रंग धाम अनमें कहूँ न वृन्दावन मैं।
ज्ञाति गुरुजन में न धोके पित्र गन में,
न उठे कवितन में न वेद उच्चरन मैं॥
कहे 'कविराम' ते वसत प्रेत तन में,
बिचारि देखो मन में दया न जाके तन मैं।
कहा परगन में बनाय धनीगन में,
न लागे हरि जन में तो थूक ऐसे धन मैं॥

[७८७]

भारी घोड़सारन तलावन तिलाक लिख्यो,
गड़िगे अकब्बर वहुरि नाहिं वहुरयो।
ताके कवि वीरवर तृन सम गुन्यों नाहिं,
ऐसे हू न भये कलि कर्ण हू ते लहुरे॥
लछमी कहति सब सूमनि तें बार बार,
देहु, लेहु खरचहु मोको जनि गहुरे।
ब्याही के न संग रहौं तीन लोक प्रभु जौन,
काल के चिन्हारे लोग मोसे कहैं रहुरे॥

[७८८]

खल सों वसाय महा छल सों वसाय महा,
दल सों वसाय औ वसाय वे भरमसों।
सिगी सों वसाय गाज चिरी सों वसाय बड़े,
टिगी सों वसाय औ वसाय वेधरम सों॥
नीर सों वसाय औ समीर सों वसाय धीर,
वीर सों वसाय त्यों वसाय वेकरम सों।
चोर सों वसाय वटपार सों वसाय इन,
सब पै वसाय ना वसाय वेसरम सों॥

[७८६]

जैसे मूसा थान बेसकीमती कतर जात,
कौवाहू बिगार जात कलस के नीर को।
साँप डँसि जात विष चढ़ि जात रोम रोम,
कुत्ता काटि खात राह चलत फकीर को॥
'मुरली' कहत जैसे बिच्छू डङ्क मारि जात,
कछू ना सोहात व्यथा करत सरीर को।
वैसे ही चुगल चोर नाहक परायो काम,
देत हैं बिगार ना डेरात रघुबीर को॥

[७९०]

होय जो लजीलो ताहि मूरख बतावत हैं,
धर्म धरे ताहि कहैं दम्भ को बढ़ाव है।
चलै जो पवित्र ताहि कपटी कहत,
जैसे सूर को कहत यामे दया को अभाव है॥
'दास गिरधर' कहै साधुन को धूरत हैं,
उदर के हेत कियो भेष को बनाव है।
पंडित गुनीजन को औगुनी कहत सदा,
जगत में पापिन को सहज सुभाव है॥

[७६१]

चन्द बिना रजनी सरोज बिन सरवर,
तेज बिन तुरँग मतंग बिना मद को।
बिना सुत सदन नितम्बिनि सुपति बिना,
बिना धन धरम नृपति बिना पद को॥
बिना हरि-भजन जगत सोहै जन कौन,
लौन बिन भोजन बिटप बिन छद को।
'प्राननाथ' सरस सभा न सोहै कबि बिन,
बिद्या बिन बात ना नगर बिन नद को॥

[७६२]

गुन बिन धनु जैसे गुर बिन ज्ञान जैसे,
मान बिन दान जैसे जल बिन सरु है।
कंठ बिन गीत जैसे हित बिन प्रीति जैसे,
वेस्या रस रीति जैसे फल बिन तरु है॥
तार बिन जंत्र जैसे स्याने बिन मंत्र जैसे,
पुर्ष बिन नारि जैसे पुत्र बिन घरु है।
'टोडर सुकवि' तैसे मन में बिचारि देखो,
धर्म बिन धन जैसे पच्छी बिना परु है॥

[६६३]

विद्या बिन ब्राह्मण बरात बिना बाजन के,
तेज बिना तुरै औ जपन बिना गुरु को।
रूप बिना गनिका औ दल जोग पंथ बिना,
नद बिना नगर गवैया बिना गर को॥
मंत्री बिन राजा और सभा बिन चातुर के,
वर बिना सुकवि कमान बिना सर को।
जोबराज कानन करिन्द्र बिना जैसे तैसे,
पानी बिना पुरुष पखेरू बिना पर को॥

[६७४]

विद्या बिन द्विज औ बगैचा बिना आमन को,
पानी बिना सावन सोहावन न जानी है।
राजा बिना राजकाज राजनीति सोचे बिना,
पुन्य की बसीठी कहौ कैसे धौं बखानी है॥
कहैं 'जयदेव' बिना हित को हितू है जैसे,
साधु बिना संगति कलंक की निसानी है।
पानी बिन सर जैसे दान बिन कर जैसे,
सील बिन नर जैसे मोती बिना पानी है॥

[७६५]

ताल फीको अजल कमल बिन जल फीको,
कहत सकल कवि हवि फीको रूम को।
बिन गुन रूप फीको ऊसर को कूप फीको,
परम अनूप भूप फीको बिन भूम को॥
'श्रीपति' सुकवि महावेग बिन तुरी फीको,
जानत जहान सदा जोह फीको धूम को।
मेह फीको फागुन अबालक को गेह फीको,
नेह फीको तिय को सनेह फीको सूम को॥

[७६६]

तेल नीको तिल को फुलेल अजमेर ही को,
साहेब दलेल नीको सैल नीको चंद को।
विद्या को विवाद नीको रामगुन नाद नीको,
कोमल मधुर सदा स्वाद नीको कन्द को॥
गाऊ नवनीत नीको ग्रीपम को सीत नीको,
'श्रीपति जू' मीत नीको विना फरफन्द को।
जात रूप घट नीको रेसम को पट नीको,
वंसीवट तट नीको नट नीको नन्द को॥

[७९७]

सम्पति सुमति नीकी विपति सुधीर नीकी,
गंगा तीर मुक्ति नीकी नीकी टेक नाम की।
पतिव्रत नारि नीकी पर उपकार नीकी,
चाँदनी सुरात नीकी नीकी जीति काम की॥
'बालकृष्ण' वेद विद उग्र नीको भूसुर की
भक्ति नीकी उत्तम चहन हरि धाम की।
अगन की हानि नीकी तात की मिलन नीकी,
सुर मिलि तान नीकी प्रीति नीकी राम की॥

[७९८]

दुर्जन पै अन्ध भाव सज्जन पै मित्र भाव,
पथ सनबन्ध भाव परिवार नर पै।
प्रतिभाव स्वामी पै सुकीया पै सुरति भाव,
नति भाव गुरु पै प्रनति गुरुवर पै॥
प्रीति भाव देवता पै श्रुति पै प्रतीति भाव,
नीति भाव आचरन वेवहार भर पै।
रहे नित चित्त पर सम्पति पै वासभाव,
घर पै उदास भाव दास भाव हर पै॥

[७९९]

नटन को धाम ना नपुंसक को काम नाहिं,
रिनी को अराम बाम वेस्या ना सहेलरी।
जुवा को न सोच मांसाहारी को न दया होत,
कामी को न नातो गोत छाया ना सहेलरी॥
'देवीदास' बसुधा में बनिक न सुनो साधु,
कूकुर को धीरज न माया है सहेलरी।
चोर को न यार बटपार को न प्रीति होत,
लाबर न मीत होत सौति ना सहेलरी॥

[८००]

जार को बिचार कहा गनिका को लाज कहा,
गदहा को पान कहा आँधरे को आरसी।
निगुनी को गुन कहा दान कहा दारिदी को,
सेवा कहा सूम को अरंडन की डारसी॥
मदपी की सुचि कहा साँच कहा लम्पट को,
नीच को बचन कहा स्यार की पुकार सी।
'टोडर सुकवि' ऐसे हठी ते न टारे टरे,
भावै कहो सूधी बात भावै कहौ फारसी॥

[८०१]

साधुन को लोभ व्याधि कवि हठताई व्याधि,
मित्र मन छोभ नर व्याधि वैर भाई को।
लाज बारवधू निरलज्ज कुल नारी व्याधि,
राजा को अनीति व्याधि देह दुखदाई को॥
'कहै बिजै' भूप मंजु मंत्री को अँकोर व्याधि
सेवक को व्याधि सुख सेवा अलसाई को।
दान कृपिनाई मनदान कदराई,
पर सकल उपाधि व्याधि व्याह बिरधाई को॥

[८०२]

दोष है किये दुराव मित्र मंजु गुरु संग,
दोष है भरोस दै कै करै फेरि धोख है।
दोष है कराल किये दुरभाव जोगिन सों,
दोष है दुसह बिना संत मन तोष है॥
दोष कुल रीति त्यागे दोष नीच नीति पागे,
दोष सब ठौर बोलै गर्व करि रोष है।
दोष पर निन्दा किये, दोष देखे परदार,
बड़न को दोष हेरबोई बड़ो दोष है॥

[८०३]

मनुज की सोभा पंडिताई में रहति है न,
सोभा पंडिताई की सभा विना न पाई है।
'दास गिरधर' है न सोभा सभा भूप विना,
भूप की न सोभा विना बुद्धि के सहाई है॥
बुद्धि की न सोभा दया रहित जगत वीच,
दया की न सोभा जहाँ तुमुल लराई है।
सोभा ना लराई की है सूर भरपूर विना,
सोभा नहिं सूर की गरूर विना गाई है॥

[८०४]

मीनन को जीवन है सरित सरोवरादि,
दीनन को जीवन महीप जो सुमति को।
पंडित को जीवन है पुस्तक विचार चारु,
हरिरस जीवन है हरि के भगत को॥
'दास गिरधर' कन्त कामिनी को जीवन है,
जीवन है दाम सदा महा लोभ रत को।
जीवन को जीवन है जीवन जगत माहिं,
राधिका को जीवन है जीवन जगत को॥

[८०५]

हाँसी में विषाद बसै विद्या में विवाद बसै,
भोग माहिं रोग अहै सेवा माहिं दीनता।
आदर में मान बसै रुचि में गलानि बसै,
आवन में जान बसै रूप माहिं हीनता॥
जोग में अभोग और संग में वियोग बसै,
पुन्य माहि बन्धन औ लोभ में अधीनता।
निपट निरञ्जन प्रवीन नये बीन लीने,
हरि जू सों प्रीति सबही सों उदासीनता॥

[८०६]

'कवि कमलेश' है अधीन गुन राजन के,
राजनि को छिति के अधीन लेखियतु है।
छिति के अधीन धान, धान के अधीन प्रान,
प्रान के अधीन देह सांई पेखियतु है॥
देह के अधीन नेह, नेह के अधीन गेह,
गेह के अधीन नारि सो विशेखियतु है।
नारि के अधीन भाव, भाव के अधीन भक्ति,
भक्ति के अधीन कृष्णचन्द्र देखियतु है॥

[८०७]

कीरति को मूल एक रैन दिन दीबो दान,
धरम को मूल एक साँच पहिचानिबो।
बाढ़िबे को मूल एक ऊँचो मन राखिबोई,
जानिबे को मूल एक भलीभांति मानिबो॥
प्रान मूल भोजन उपाधि मूल हाँसी देखी,
दारिद को मूल एक आरस बखांनिबो।
हारिबे को मूल एक आतुरी है रनमाँझ,
चातुरी को मूल एक बात कहि जानिबो॥

[८०८]

सीख्यो सब काम धन धाम को सुधारिबे को,
सीख्यो अभिराम बाम राखत हजूर मैं।
सीख्यो सरजाम गढ़ कोर किला ढाहिबे को,
सीख्यो समसेर तीर डारे अरि उर मैं॥
सीख्यो जंत्र, मंत्र, तंत्र, ज्योतिप, पुरान सबै,
और कविताई अन्त सकल सहूर मैं।
कहैं 'कृपाराम' सब सीखबो न काम एक,
बोलिबो न सीख्यो सब सीख्यो गयो धूर मैं॥

[८०६]

फूट गये हीरा की बिकानी कनी हाट हाट,
काहू घाट मोल काहू बाढ़ मोल को लयो।
टूट गई लङ्का फूट मिल्या जो बिभीषन है,
रावन समेत बस आसमान को गयो॥
कहै 'कवि गंग' दुरजोधन से छत्रधारी,
तनक में फूके तें गुमान वाको नै गयो।
फूटे ते नरद उठि जात बाजी चौसर की;
आपुस के फूटे कहु कौन को भलो भयो॥

[८१०]

हिलि मिलि जानै तासों मिलिकै जनावै हेत,
हित को न जानै ताको हितू न बिसाहिये।
होय मगरूर तापै दूनी मगरूरी कीजै,
लघु ह्वै चलै जो तासों लघुता निबाहिये॥
'बोधा कवि' नीति को निबेरो यही भाँति यहै,
आपको सराहै ताहि आपहूँ सराहिये।
दाता कहा सूम कहा सुंदर सुजान कहा,
आपको न चाहै ताके बाप को न चाहिये॥

[८११]

सेवक सिपाही सदा उन रजपूतन के,
दान युद्ध वीरता में नेकु जे न मुरके।
जस के करैया हैं मही के महिपालन के,
हिये के विशुद्ध हैं सनेही सांचे उर के॥
'ठाकुर' कहत हम बैरी वेवकूफन के,
जालिम दमाद हैं अदेनिया ससुर के।
चोजन के चोजी महा मौजिन के महाराज,
हम कविराज हैं पै चाकर चतुर के॥

[८१२]

माथ बन्यो मुख बन्यो. मूँछ बनी पूँछ बनी,
लाघव बन्यो है पुनि बाघ सम तूल को।
रँग्यो चग्यो अंग बन्यो लंक बन्यो पंजा बन्यो,
कृत्रिम बन्यो है सब सिंह ही के सूल को॥
बोलिबे की बेर मौन गहि बैठे 'देवीदास'
तैसई सुभाव कूद फाँद करै हल को।
कुंजर के कुम्भन विदारिबे की बेर कैसे,
कूकर पै निबहै यों स्वाँग सारदुल को॥

[८१३]

राधाश्याम सेवैं सदा वृन्दावन वास करैं,
रहैं निहचिंत पदआस गुरुवर के।
चाहैं धन धाम ना आराम सों है काम,
'हरिचंद जू' भरोसे रहैं नन्दराय घरके॥
एरे नीच नृप हमैं तेज तू देखावै काह,
गज परवाही कवों होहिं नाहिं खरके।
होयले रसाल तू भले ही जग जीवकाज,
आसी ना तिहारे ये निवासी कल्पतरु के॥

[८१४]

उमड़ि घुमड़ि घन लीनो है चहूँधा घेरि,
शोर भयो धुरवा जवासे जूथ जरिगे।
डह डहे भये द्रुम रंचक हवाके गुन,
कुहू कुहू मोरवा पुकारि मोद भरिगे॥
रहिगये चातक जहाँ के तहाँ देखतही,
'सोभनाथ' कहूं बूंदा बूंदी हू न करिगे।
शोर भयो घोर चहुँ ओर महि मंडल में,
आये घन आये घन आयकै उघरिगे॥

[८१५]

कुंज वन जानि 'मून' हंसगन आइ फिरे,
गंध वन भृंगन की भंग करि डारे तैं।
पाके फल जानि सुक पुंज पछिताने आय,
पाइकै बसन्त वात बृथा पात डारे तैं॥
दूर ते विलोकि अरुणाई अति फूलन की,
आमिष अहार गृद्ध वापिस बिडारे तैं।
घेरे तरु सेमर के सिफत तिहारी काह,
आस दये पच्छिन निरास करि डारे तैं॥

[८१६]

सुनिये विटप प्रभु सुमन तिहारे हम,
राखिहो हमैं तो सोभा रावरी बढ़ाय हैं।
तजिहो हरखि कै तो बिलगु न मानैं कछू,
जहाँ जहाँ जैहैं तहाँ दूनो जस छायहैं॥
सुरन चढ़ैंगे नर सिरन चढ़ैंगे वर,
सुकवि अनीस हाट बाट में विकायहैं।
देसमें रहैंगे परदेस में रहैंगे,
काहू बेस में रहैंगे तऊ रावरे कहायहैं॥

[८१७]

ए हो नेहधर हम नीरधर चातक हैं,
रटनि हमारि घटि है न कहूँ फेरि फेरि।
भौंर कैसी दौर हम दौरि हैं न ठौर ठौर,
'द्विजश्याम' सुमन समूहन को घेरि घेरि॥
चुनिकै अंगारन चकोर तौर लैहैं नाहिं,
मोरहू को तौर लै न नाग खैहैं हेरि हेरि।
प्यास मरि जैहैं द्वार और के न जैहैं,
योंही जनम वितैहैं नाम रावरोई टेरि टेरि॥

परिशिष्ट
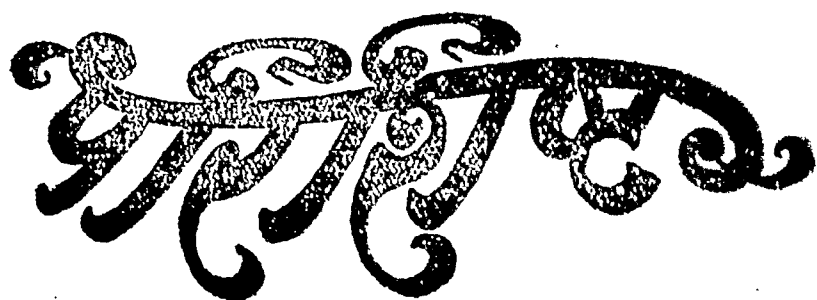
शृंगार प्रकरण

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल ।
अली कली ही सों बिंध्यो, आगे कौन हवाल ॥ ८१८ ॥

तुव पद तल मृदुता चितै, कवि वरनत सकुचाहिं ।
मन ते आवत जीभ लौं, मति छाले परि जाहिं ॥ ८१९ ॥

दुहुँ दिसि जघन नितंब कुच, खैंचत हैं निधि सार ।
छीजै क्यों न मयंक-मुखि, ललित लंक सुकुमार ॥ ८२० ॥

सुनियत कटि सूछम निपट, निकट न देखत नैन ।
देह मध्य यों जानियत, ज्यों रसना में बैन ॥ ८२१ ॥

बाँबी सों नागिनि चली, पीवन अमी अहार ।
मुरवासी बेसर निरखि, दबकी बीच पहार ॥ ८२२ ॥

डीठि निसैनी चढ़ि चल्यो ललचि सुचित मुख ओर ।
चिबुक गड़ारे खेत में निबुक गिरयो चित चोर ॥ ८२३ ॥

गड़े नुकीले लाल के नैन रहैं दिन रैनि ।
तुव नाजुक ठोढ़ीन क्यों गाड़ परै मृदु बैनि ॥ ८२४ ॥

लिख्यो चहत 'रसलीन' जब, तुव अधरन की बात।
लेखनि की बिनि जीह बँधि मधुराई ते जात ॥ ८२५ ॥

वधू अधर की मधुरता बरनत मधु न तुलाय।
लिखत लिखक के हाथ की, किलक ऊख ह्वै जाय ॥ ८२६ ॥

नयन सलोने अधर मधु यामें अचरजु कौन।
मीठौ भावै लौन पर अरु मीठे पर लौन ॥ ८२७ ॥

अमिय हलाहल मद भरे स्वेत, स्याम, रतनार।
जियत, मरत, झुकि झुकि परत, जेहि चितवत इकबार ॥ ८२८ ॥

साहु कहावत फिरत हैं, चित सरसाये चाव।
तेरे नैन दिवालिया मन लै देत न पाव ॥ ८२९ ॥

आप लगत बेचत मनहिं रसनिधि कर बिन दाम।
नैनन मैं नय नाहिंये ताते नयना नाम ॥ ८३० ॥

अनियारे दीरघ दृगनि, किती न तरुनि समान।
वह चितवनि औरै कछू, जिहिं बस होत सुजान ॥ ८३१ ॥

चतुर चितेरे तुव सबी, लिखत न हिय ठहराइ।
कलम छुवत कर आँगुरी, कटी कटाछन जाइ ॥ ८३२ ॥

भौं, चितवनि, डोरे, बरुनि, असि, कटार फँद, तीर।
कटत, फटत, बेधत, बिधत, जिय, हिय, मन, तन बीर ॥ ८३३ ॥

गढ़ रचना बरुनी अलक, चितवनि भौंह कमान।
आधु बँकाई ही बढ़ै, तरुनि तुरंगम तान॥ ८३४॥

चिबुक कूप रसरी अलक तिल सुचरस दृग बैल।
बारी वैस शृङ्गार की, सींचत मनमथ छैल॥ ८३५॥

सब जग पेरत तिलन कों थक्यो चित्त यह हेरि।
तुव कपोल को एक तिल, सब जग डारयो पेरि॥ ८३६॥

नेही तिल रसनिधि लखौ, सुमन संग पिरि जाय।
निरमोही मुख को जु तिल, सुमन पेरि बचि जाय॥ ८३७॥

कहत सबै बेंदी दिये, आँक दस गुनौ होत।
तिय लिलार बेंदी दिये, अगनित बढ़त उदोत॥ ८३८॥

कुटिल अलक छुटि परत मुख, बढ़िगो इतौ उदोत।
बंक बिकारी देत ज्यों, दाम रुपैया होत॥ ८३९॥

अंग अंग नग जगमगे, दीपसिखा सी देह।
दिआ बढ़ाए हू रहै, बड़ौ उजेरो गेह॥ ८४०॥

भूषण भार संभारिहै, क्यों वह तन सुकुमार।
सूधे पायँ न परि सकैं, सोभा ही के भार॥ ८४१॥

मानहुँ विधि तन अच्छ छवि, स्वच्छ राखिबे काज।
दृग पग पोंछन कौं किये भूषन पायन्दाज॥ ८४२॥

जब जब चढ़त अटानि दिन, चंद मुखी यह बाम।
तब तब घर घर धरत हैं, दीप बारि सब गाम ॥ ८४३ ॥

पत्राही तिथि पाइए, वा घर के चहुँ पास।
निति प्रति पूनो ही रहै, आनन ओप उजास ॥ ८४४ ॥

लिखन बैठि जाकी सबिहिं, गहि गहि गरब गरूर।
भए न केते जगत के, चतुर चितेरे कूर ॥ ८४५ ॥

ताहि देखि मन तीरथनि, बिकटनि जाय बलाय।
जा मृगनैनी के सदा, बेनी परसत जाय ॥ ८४६ ॥

चुनरी स्याम सतार नभ, मुख ससि की अनुहारि।
नेह दबावत नींद लौं, निरखि निसा सी नारि ॥ ८४७ ॥

सुबरन बरनी द्वार पै, बैठी पान चबाति।
ऐंठी सी चखियनि चितै, जिय में पैठी जाति ॥ ८४८ ॥

अटा ओर नंदलाल उत, निरखौ नेक निसंक।
चपला चपलाई तजी, चंदा तज्यौ कलंक ॥ ८४९ ॥

सटपटाति सी ससिमुखी, मुख घूँघट पट ढांकि।
पावक झर सी झमकि कै, गई झरोखा झांकि ॥ ८५० ॥

खेलन सिखये अलि! भले, चतुर अहेरी मार।
कानन चारी नैन मृग, नागर नरनि सिकार ॥ ८५१ ॥

तिय कित कमनैती पढ़ी, विनु जिह भौंह कमान।
चल चित वेझौ चुकत नहिं, वंक विलोकनि वान॥ ८५२॥

अभिनव जोवन जोति सो, जगमग होत विलास।
तिय के तन पानिप वढ़ै, पिय के नैननि प्यास॥ ८५३॥

डीठि रूप, श्रुति बचन, तनु परस सुखद दिन राति।
जीभ अधर-रस, नासिका, मुख सुबास न अघाति॥ ८५४॥

दृग उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति।
परति गाँठ दुर्जन हिये, दई नई यह रीति॥ ८५५॥

मन गयंद छवि मद छके, तोर जंजीरन जात।
हत के झीने तार सों, सहजै ही वंधिजात॥ ८५६॥

तनक कंकरी के परे नैन होत बेचैन।
वे बपुरे कैसे जियें जिन नैनन में नैन॥ ८५७॥

मेरे दृग बारिद वृथा, वरषत बारि प्रवाह।
उठत न अंकुर नेह को, तो उर ऊसर माह॥ ८५८॥

कुंजभवन लौं भावते, कैसे सकिहै आय।
जावक रँग भारन भटू, मग धरि सकति न पांय॥ ८५९॥

छुटन न पैयत छिनकु बसि, नेह नगर यह चाल।
मारयो फिरि फिरि मारिये, खूनी फिरत खुस्याल॥ ८६०॥

भौंह कमान कटाछ सर, समर भूमि बिचलैं न।
लाज तजे हूँ दुहुँन के, सहज सुभट से नैन ॥ ८६१ ॥

मानत लाज लगाम नहिं, नेक न गहत मरोर।
होत तोहि लखि बाल के, दृग तुरंग मुँह जोर ॥ ८६२ ॥

जब जब वै सुधि कीजिये, तब सबही सुधि जांहि।
आंखिन आंखि लगी रहै, आँखौ लागति नांहि ॥ ८६३ ॥

अँसुवनि के परवाह मैं, अति बूड़िबें डराति।
कहा करै नैनानि को, नींद नहीं नियराति ॥ ८६४ ॥

याके मन में जानियत, कोऊ लग्यो सभाग।
कहत गान बिन अरथ को, प्रगट अरथ अनुराग ॥ ८६५ ॥

अंधियारी निसि को जनम कारे कान्ह गुवाल।
चितचोरी जो करत हौ, कहा अचंभो लाल ॥ ८६६ ॥

हियो विरह तायन तच्यो लखि न लहत ये चैन।
स्रवत बारि बुन्दन बड़े पर उपकारी नैन ॥ ८६७ ॥

चाहत फल तेरो मिलन, निसि बासर वह बाल।
कुच सिव पूजति नैन-जल, बुंद मुकुतमय माल ॥ ८६८ ॥

अरी होन दे अब हंसी, लहर भरी हौं जोय।
हौं वा कारे की दसी, तीतो मीठो होय ॥ ८६९ ॥

नवल बधू के संग में, अहितौ वात हितातिं।
ताती सांसनि के लगे, छाती अति सियराति ॥ ८७० ॥

पियत अधर यों देति है, कर कमलनि की मारु।
होत पंच अँगुरी लगे, सबल पंचसर मारु ॥ ८७१ ॥

यदपि नाहिं नाहीं नहीं, बदन लगी जक जाति।
तदपि भौंह हाँसी भरी, हाँसी ए ठहराति ॥ ८७२ ॥

भौंहनि त्रासति मुख नटति, आँखनि सो लपटाति।
ऐंचि छुड़ावति कर इँची, आगे आवति जाति ॥ ८७३ ॥

छिनक छिनक छुन छुन करैं, पग बिछुआ हर बार।
मनो जगावत मैन को, रैन पुकार पुकार ॥ ८७४ ॥

लपटानी अति प्रेम सों, दै उर उरज उतंग।
घरी एक लगि छुटे हूँ, रही लगी सी अंग ॥ ८७५ ॥

परैं न धुनि सुनि सखिन कों, लाजनि होति अधीर।
कर कमलनि सों गहि रहै, सुरत मुखर मंजीर ॥ ८७६ ॥

भेंटत बनत न भावतो, चित तरसत अति प्यार।
धरति लगाय लगाय उर, भूषन बसन हथ्यार ॥ ८७७ ॥

कहा करौं बैकुंठ लै, कल्प वृच्छ की छाँह।
'अहमद' ढाक सुहावने, जहँ प्रीतम गलबाँह ॥ ८७८ ॥

मैं मिसही सोयो समुझि, मुँह चूम्यौ ढिग जाय।
हँस्यौ खिस्यानी गर गह्यो, रही गरे लपटाय॥ ८७६॥

अहे दहेड़ी जिन धरै, ज़िनि तू लेहि उतार।
नीके है छीके छुवै, ऐसे ही रहि नार॥ ८८०॥

अँग अँगराइ जँमाइ तिय, निरखि सामुहें रौन।
मुरि मुसुकाय नचाय दृग, गवनी सूने भौन॥ ८८१॥

मन मोहन के मिलन को, करै मनोरथ नारि।
धरै पौन के सामुहे, दियो भौन को बारि॥ ८८२॥

सखी सिखावति मान बिधि, सैननि बरजति बाल।
हरे कहै मो हीय मों, बसत बिहारी लाल॥ ८८३॥

दीपक हिये छिपाय, नवल बधू घर लै चली।
कर विहीन पछिताय, कुच लखि निज सीसै धुनै॥ ८८४॥

नाक चढ़ै सीबी करै, जितै छबीली छैल।
फिरि फिरि भूलि वहै गहै, प्यौ ककरीली गैल॥ ८८५॥

अरी खरी सटपट परी, बिधु आगे मग हेरि।
संग लगे मधुपनि लई, भागन गली अँधेरि॥ ८८६।

भयो अपत कै कोपयुत, कै बौरो यहि काल।
मालिनि आजु कहै न क्यों, वा रसाल को हाल॥ ८८७॥

सन सूको बीत्यौ बनो, ऊखौ लई उखारि।
हरी हरी अरहरि अजौं, धर धरहरि चित नारि॥ ८८८॥

बाल ! कहा लालो भई, लोयन कोयन माँह।
लाल ! तिहारे दृगन की, परी दृगन में छाँह॥ ८८९॥

बैठो आनन कमल के, अरुन अधर दल आइ।
काटन चाहत भावते, दीजै भौंर उड़ाइ॥ ८९०॥

बामा भामा कामिनी, कहि बोलौ प्रानेस।
प्यारी कहत लजात नहिं, पावस चलत बिदेस॥ ८९१॥

छप्यो नेह कागद हिए भया लखाय न टाँकु।
बिरह तचै उघरयो सु अब सेहुँड़ को सो आँकु॥ ८९२॥

पिय-वियोग तिय-दृग जलधि जल तरंग अधिकाय।
बरुनि-मूल बेला परसि, बहुरयो जात बिलाय॥ ८९३॥

बिरह जरी लखि जीगननि, कही न उहि कइ बार।
अरी आव भजि भीतरैं, बरसत आजु अँगार॥ ८९४॥

बिछुरत मोहन अधर ते, रहत न जेहि घट साँस।
बंसी सम पायो न हम, प्रेम प्रीति को आँस॥ ८९५॥

रह्यो ऐंचि अंत न लह्यो अवधि दुसासन बीर।
आली बाढ़त बिरह ज्यौं, पंचाली को चीर॥ ८९६॥

प्रीतम को पतियाँ लिखूँ, जो कहुँ होय बिदेस।
तन में, मन में, नैन में, ताको कहा सँदेस ॥ ८९७ ॥

कागद पर लिखत न बनत, कहत सँदेस लजात।
कहिहै सब तेरो हियौ, मेरे हिय की बात ॥ ८९८ ॥

दरकत नहीं बियोग में, लगे घनक घन घोर।
तेरे उरजनि मिलि भयौ, मेरो हियो कठोर ॥ ८९९ ॥

सुनत पथिक मुँह मांह निसि, लुवैं चलत वहि गाम।
बिन बूझे बिनहीं कहे, जियत बिचारी बाम ॥ ९०० ॥

शान्त प्रकरण

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ पंडित भया न कोय।
ढाई अच्छर प्रेम के पढ़ै सो पंडित होय॥ ६०१॥

छिनहि चढ़ै छिन ऊतरै सो तो प्रेम न होय।
अघट प्रेम पिंजर बसै प्रेम कहावै सोय॥ ६०२॥

दम्पति सुख अरु विषय रस, पूजा निष्ठा ध्यान।
इनतें परे बखानिये, शुद्ध प्रेम रसखान॥ ६०३॥

प्रेमी प्रीति न छोड़हीं, होत न प्रन तें हीन।
मरे परेऊ उदर में, जल चाहत है मीन॥ ६०४॥

देखत दीपति दीप की, देत प्रान अरु देह।
राजत एक पतंग में, बिना कपट को नेह॥ ६०५॥

सीस उतारै भुइँ धरै तापर राखै पाँव।
दास 'कबीरा' यों कहै ऐसा हो तो आव॥ ६०६॥

'कबिरा' प्याला प्रेम का अंतर लिया लगाय।
रोम रोम में रमि रहा और अमल क्या खाय॥ ६०७॥

लाली मेरे लाल की जित देखो तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गइ लाल॥ ६०८॥

गगन गरजि वरसै अमी वादल गहिर गँभीर।
चहुँ दिसि दमकै दामिनी भीजै दास 'कबीर'॥ ६०९॥

जब मैं था तब गुरु नहीं अब गुरु हैं हम नाहिं।
प्रेम गली अति साँकरी तामें दो न समांहि॥ ६१०॥

तेरा सांई तुज्झ में ज्यों पुहुपन में बास।
कस्तूरी का मिरग ज्यों फिर फिर ढूँढ़ै घास॥ ६११॥

घीव दूध में रमि रहा, व्यापक सबही ठौर।
'दादू' बक्ता बहुत हैं मथि काढ़ैं ते और॥ ६१२॥

केते पारिख पचि मुये कीमति कही न जाइ।
'दादू' सब हैरान हैं गूँगे का गुड़ खाइ॥ ६१३॥

हेरत हेरत हेरिया रहा 'कबीर' हिराय।
बुंद समानी समुंद में सो कित हेरी जाय॥ ६१४॥

एक कर्म है बोवना उपजैं बीज बहूत।
एक कर्म है भूँजना उदय न अंकुर सूत॥ ६१५॥

चलती चक्की देखि कै दिया 'कबीरा' रोय।
दुइ पट भीतर आइ कै, साबित गया न कोय॥ ६१६॥

चलो चलें सब कोई कहै पहुँचै विरला कोय।
एक कनक अरु कामिनी दुरगम घाटी दोय॥ ६१७॥

या भव पारावार कौ उलँघि पार को जाय।
तिय छवि छाया ग्राहिनी गहै बीच ही आय॥ ६१८॥

काम काम सब कोई कहै काम न चीन्है कोय।
जेती मनकी कल्पना काम कहावै सोय॥ ६१९॥

'कबिरा' मन तो एक है भाव तहाँ लगाय।
भावै गुरु की भक्ति कर भावै विषय कमाय॥ ६२०॥

खट्टा मीठा चरपरा जिह्वा सब रस लेय।
चोरो कुतिया मिलि गई पहरा किसका देय॥ ६२१॥

केसन कहा बिगारिया जो मूँड़ो सौ बार।
मनको क्यों नहिं मूँड़िये जामें विषै बिकार॥ ६२२॥

माला तो कर में फिरै जीभ फिरै मुख माहिं।
मनुवाँ तो दुहुँ दिसि फिरै यह तो सुमिरन नाहिं॥६२३॥

माला फेरत जुग भया फिरा न मनका फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर॥ ६२४॥

भक्ति भेष बहु अंतरा जैसे धरनि अकास।
भक्त लीन गुरु चरन में भेष जगत की आस॥ ६२५॥

दुख में सुमिरन सब करै सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै तो दुख काहे होय॥ ६२६॥

आछे दिन पाछे गये, गुरु से किया न हेत।
अब पछतावा क्या करै, चिड़ियाँ चुग गई खेत॥ ६१७॥

केरा तबहिं न चेतिया, जब ढिग लागी बेरि।
अब के चेते क्या हुआ, काँटन लीन्हो घेरि॥ ६२८॥

मैं भँवरा तोहिं बरजिया बन बन बास न लेय।
अटकैगा कहुँ बेल से तड़पि तड़पि जिय देय॥ ६२९॥

भँवर बिलंबे बाग में बहु फूलन की आस।
जीव बिलंबे विषय में अंतहुँ चले निरास॥ ६३०॥

मन पाँचों के बस परा, मन के बस नहिं पाँच।
जित देखूँ तित दौ लगी, जित भागूँ तित आँच॥ ६३१॥

मीठा सब कोइ खात है, विष ह्वै लागै धाय।
नीब न कोई पीवसी, सर्व रोग मिट जाय॥ ६३२॥

हँस हँस कन्त न पाइया, जिन पाया तिन रोय।
हाँसी खेले पिय मिलैं, कौन दुहागिनि होय॥ ६३३॥

हवस करै पिय मिलन की, औ सुख चाहै अंग।
पीर सहे बिनु पदमिनी, पूत न लेत उछंग॥ ६३४॥

सुख के माथे सिलि परै, (जो) नाम हृदय से जाय।
बलिहारी वा दुक्ख की, पल पल नाम रटाय॥ ६३५॥

जिन ढूँढा तिन पाइयाँ, गहिरे पानी पैठि।
मैं बपुरी बूड़न डरी, रही किनारे बैठि॥ ६३६॥

सती बिचारी सत किया, कांटों सेज बिछाय।
लै सूती पिय आपना, चहुँ दिसि अगिनि बिछाय॥ ६३७॥

विरह भुवंगम पैठि कै कियो कलेजे घाव।
विरही अंग न मोरिहै ज्यों भावै त्यों खाव॥ ६३८॥

विरहा बिरहा मत कहौ, बिरहा है सुल्तान।
जा घट बिरह न संचरै, सो घट जान मसान॥ ६३९॥

एक भरोसो एक बल एक आस विस्वास।
एक राम घनस्याम हित चातक 'तुलसीदास'॥ ६४०॥

तीनि लोक तिहुँ काल जस चातक ही के माथ।
'तुलसी' जासु न दीनता सुनी दूसरे नाथ॥ ६४१॥

उपल बरषि गरजत तरजि, डारत कुलिस कठोर।
चितव कि चातक मेघ तजि कबहुँ दूसरी ओर?॥ ६४२॥

नहिं जाचत, नहिं संग्रही, सीस नाइ नहिं लेइ।
ऐसे मानी माँगनेहिं, को वारिद बिन देइ॥ ६४३

'तुलसी' चातक ही फबै मान राखिबो प्रेम।
बक्र बुंद लखि स्वातिहू निदरि निबाहत नेम॥ ६४४॥

मान राखिबो, माँगिबो पिय सो नित नव नेहु।
'तुलसी' तीनिउ तब फबैं जौ चातक मत लेहु॥ ६४५॥

साधन साँसति सब सहत, सबहिं सुखद फल लाहु।
'तुलसी' चातक जलद की रीझि-बूझि बुध काहु॥ ६४६॥

व्याधा बधो पपीहरा परो गंगजल जाय।
चोंच मूंदि पीवै नहीं सलिल पिये पन जाय॥ ६४७॥

बध्यो बधिक परयो पुन्य जल उलटि उठाई चोंच।
'तुलसी' चातक प्रेम पट, मरतहु लगी न खोंच॥ ६४८॥

चातक 'तुलसी' के मते, स्वातिहु पियै न पानि।
प्रेम-तृषा बाढ़त भली, घटे घटैगी आनि॥ ६४९॥

सभी रसायन हम करी नहीं नाम सम कोय।
रंचक घट में संचरै, सब तन कंचन होय॥ ६५०॥

सुरति करौ मेरे साँइयाँ हमहैं भवजल माहिं।
आपे ही बहि जाँयगे जो नहिं पकरौ बाहिं॥ ६५१॥

माँस गया पिंजर रहा, ताकत लागे काग।
साहब अजहुँ न आइया, मंद हमारे भाग॥ ६५२॥

उत ते कोइ न बाहुरा, जासे बूझूँ धाय।
इत तें सबही जातहैं, भार लदाय लदाय ॥ ९५३ ॥

माली आवत देखि कै कलियाँ करैं पुकार।
फूली फूली चुनि लिये काल्हि हमारी बार ॥ ९५४ ॥

झूठे सुख को सुख कहैं, मानत हैं मन मोद।
जगत चबेना काल का, कुछ मुख में कुछ गोद ॥ ९५५ ॥

पात झरंता यों कहै, सुनु तर वर बनराय।
अब के बिछुरे ना मिलैं, दूर परैंगे जाय ॥ ९५६ ॥

माटी कहै कुम्हार को तूँ क्या रूँदै मोहिं।
इक दिन ऐसा होयगा मैं रूँदूँगी तोहिं ॥ ९५७ ॥

इक दिन ऐसा होयगा, कोउ काहू का नाहिं।
घर की नारी को कहै, तन की नारी जाहिं ॥ ९५८ ॥

दस द्वारे का पींजरा, तामें पंछी पौन।
रहिबे का आश्चर्य है, जाय तो अचरज कौन ॥ ९५९ ॥

'कबिरा' गर्व न कीजिये, ऊँचा देखि अवास।
काल्ह परों भुइ लेटना, ऊपर जमसी घास ॥ ९६० ॥

पाँचो नौबत बाजती, होत छतीसो राग।
सो मंदिर खाली पड़ा, बैठन लागे काग ॥ ९६१ ॥

'तुलसी' चातक ही फबै मान राखिबो प्रेम।
बक्र बुंद लखि स्वातिहू निदरि निबाहत नेम॥ ९४४॥

मान राखिबो, माँगिबो पिय सो नित नव नेहु।
'तुलसी' तीनिउ तब फबैं जौ चातक मत लेहु॥ ९४५॥

साधन साँसति सब सहत, सबहिं सुखद फल लाहु।
'तुलसी' चातक जलद की रीझि-बूझि बुध काहु॥ ९४६॥

व्याधा बधो पपीहरा परो गंगजल जाय।
चोंच मूंदि पीवै नहीं सलिल पिये पन जाय॥ ९४७॥

बध्यो बधिक परयो पुन्य जल उलटि उठाई चोंच।
'तुलसी' चातक प्रेम पट, मरतहु लगी न खोंच॥ ९४८॥

चातक 'तुलसी' के मते, स्वातिहु पियै न पानि।
प्रेम-तृषा बाढ़त भली, घटे घटैगी आनि॥ ९४९॥

सभी रसायन हम करी नहीं नाम सम कोय।
रंचक घट में संचरै, सब तन कंचन होय॥ ९५०॥

सुरति करौ मेरे साँइयाँ हमहैं भवजल माहिं।
आपे ही वहि जाँयगे जो नहिं पकरौ बाहिं॥ ९५१॥

माँस गया पिंजर रहा, ताकत लागे काग।
साहब अजहुँ न आइया, मंद हमारे भाग॥ ९५२॥

उत ते कोइ न बाहुरा, जासे बूझूँ धाय।
इत तें सबही जातहैं, भार लदाय लदाय ॥ ६५३ ॥

माली आवत देखि के कलियाँ करैं पुकार।
फूली फूली चुनि लिये काल्हि हमारी बार ॥ ६५४ ॥

झूठे सुख को सुख कहैं, मानत हैं मन मोद।
जगत चबेना काल का, कुछ मुख में कुछ गोद ॥ ६५५ ॥

पात झरंता यों कहै, सुनु तर वर बनराय।
अब के बिछुरे ना मिलैं, दूर परैंगे जाय ॥ ६५६ ॥

माटी कहै कुम्हार को तूँ क्या रूँदै मोहिं।
इक दिन ऐसा होयगा मैं रूँदूँगी तोहिं ॥ ६५७ ॥

इक दिन ऐसा होयगा, कोउ काहू का नाहिं।
घर की नारी को कहै, तन की नारी जाहिं ॥ ६५८ ॥

दस द्वारे का पींजरा, तामें पंछी पौन।
रहिबे का आश्चर्य है, जाय तो अचरज कौन ॥ ६५६ ॥

'कबिरा' गर्व न कीजिये, ऊँचा देखि अवास।
काल्ह परों भुइ लेटना, ऊपर जमसी घास ॥ ६६० ॥

पाँचो नौबत बाजती, होत छतीसो राग।
सो मंदिर खाली पड़ा, बैठन लागे काग ॥ ६६१ ॥

मरिये तो मरि जाइये, छूटि परै जंजार।
ऐसा मरना को मरै, दिन में सौ सौ बार ॥ ९६२ ॥

'कबिरा' मैं तो तब डरौं जो मुझही में होय।
मीच बुढ़ापा आपदा सब काहू में सोय ॥ ९६३ ॥

अर्थ न धर्म न काम रुचि गति न चहौं निरबान।
जन्म जन्म रति रामपद, यह वरदान न आन ॥ ९६४ ॥

मो सम दीन न दीन हित, तुम समान रघुवीर।
अस विचारि रघुवंस मनि, हरहु विषम भवभीर ॥ ९६५ ॥

'तुलसी' सब छल छांड़िकै कीजै राम सनेह।
अंतर पति सों है कहा, जिन देखी सब देह ॥ ९६६ ॥

बरषा ऋतु रघुपति-भगति 'तुलसी' सालि सुदास।
राम नाम बर बरन जुग सावन भादौं मास ॥ ९६७ ॥

राम नाम को अंक है सब साधन है सून।
अंक गये कछु हाथ नहिं अंक रहे दस गून ॥ ९६८ ॥

राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार।
'तुलसी' भीतर बाहिरहु जो चाहसि उजियार ॥ ९६९ ॥

'तुलसी' रा के कहत ही निकसत पाप पहार।
फिरि भीतर आवत नहीं देत म कार किवार ॥ ९७० ॥

जगतें रहु छत्तीस है राम चरन छः तीन।
'तुलसी' देखु विचारि हिम्र है यह मतौ प्रवीन ॥ ६७१ ॥

अजगर करै न चाकरी पंछी करै न काम।
'दास मलूका' यों कहै सबके दाता राम ॥ ६७२ ॥

द्वार धनी के पड़ि रहै धका धनी का खाय।
कबहुँक धनी निवाजई जो दर छांड़ि न जाय ॥ ६७३ ॥

अपने अपने चोर को सब कोइ डारै मार।
मेरा चोर मुझे मिलै सर बस डारूं वार ॥ ६७४ ॥

निंदक नियरे राखिये आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना निर्मल करै सुभाय ॥ ६७५ ॥

पारस में अरु सन्त में बड़ो अन्तरो जान।
वह लोहा कंचन करै, वह पुनि आप समान ॥ ६७६ ॥

तन विचित्र कायर बचन, अहि अहार बन घोर।
'तुलसी' हरि भये पच्छधर, ताते कह सब मोर ॥ ६७७ ॥

सामान्य प्रकरण

अपनी अपनी ठौर पर सोभा लहत बिसेख।
चरन महावर ही भलो, नैनन अञ्जन रेख ॥ ६७८ ॥

उद्यम कबहुँ न छाड़िये पर आसा के मोद।
गागर कैसे फोरियत उनयो देखि पयोद ॥ ६७९ ॥

जेते जग में मनुज हैं राखो सबसों हेत।
को जानै केहि काल में बिधि का को संग देव ॥ ६८० ॥

गुन ते लेत 'रहीम' जन, सलिल कूप ते काढ़ि।
कूपहुँ ते कहुँ होत है, मन काहू को बाढ़ि ॥ ६८१ ॥

'तुलसी' मीठे बचन तें, सुख उपजत चहुँ ओर।
बसीकरन यह मंत्र है, परिहरु बचन कठोर ॥ ६८२ ॥

'रहिमन' विपदा तू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय ॥ ६८३ ॥

जाको राखै साइयाँ मारि न सक्कै काय।
बाल न बाँका करि सकै जो जग बैरी होय ॥ ६८४ ॥

सूर समर करनी करहिं, कहि न जनावहिं आपु।
विद्यमान रन पाइ रिपु, कायर करहिं प्रलापु ॥ ९८५ ॥

सिंह गमन सुपुरुष वचन, कदलि फलै इक सार।
तिरिया तेल हमीर हठ, चढ़ै न दूजी बार ॥ ९८६ ॥

'रहिमन' मोहि न सुहाय, अमिय पियावत मान बिन।
जो बिष देय बुलाय, प्रेम सहित मरिबो भलो ॥ ९८७ ॥

'तुलसी' जसि भवितव्यता, तइसिय मिलै सहाइ।
आपु न आवै ताहि पै, ताहि तहाँ लै जाइ ॥ ९८८ ॥

मंत्री, गुरु, अरु बैद जो, प्रिय बोलहिं भय आस।
राज, धर्म, तन, तीन कर, होइ वेगि ही नास ॥ ९८९ ॥

दीन सबन को लखत है, दीनहिं न लखै न कोय।
जो 'रहीम' दीनहिं लखै, दीनबंधु सम होय ॥ ९९० ॥

काज परे कछु और है, काज सरे कछु और।
'रहिमन' भाँवर के भये, नदी सेरावत मौर ॥ ९९१ ॥

गम समान भोजन नहीं, जो कोउ गम को खाय।
अम्बरीष गम खाइयौं, दुरबासा बिललाय ॥ ९९२ ॥

कारज धीरे होतु है, काहे होत अधीर।
समय पाय तरुवर फलै, केतक सींचो नीर ॥ ९९३ ॥

करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जाततें, सिलपर परत निसान ॥ ९९४ ॥

आवत ही हर्षे नहीं, नैनन नहीं सनेह।
'तुलसी' तहाँ न जाइये, कंचन बरसै मेह ॥ ९९५ ॥

'रहिमन' देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डार।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करै तरवारि ॥ ९९६ ॥

'रहिमन' अब वे बिरछ कहँ, जिनकी छाँह गँभीर।
बागन बिच बिच देखियत, सेहुड़ कुटज करीर ॥ ९९७ ॥

करि फुलेल को आचमन, मीठो कहत सराहि।
रे गंधी मति अंध तू, अतर दिखावत ताहि ॥ ९९८ ॥

को छूट्यौ यहि जाल परि कत कुरंग अकुलाय।
ज्यौं ज्यों सुरझि भज्यौ चहै, त्यौं त्यौं अरुझत जाय ॥ ९९९ ॥

वे न यहाँ नागर बड़े, जिन आदरतो आब।
फूल्यौ अन फूल्यौ भयौ, गवँई गाँव गुलाब ॥ १००० ॥

जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सो बीति बहार।
अब अलि रही गुलाब की, अपत कटीली डार ॥ १००१ ॥

अनुक्रमणिका

[४५]

कारे कजरारे सटकारे घुंघवारे प्यारे,
मणि फणि वारे भोर फबन लौं छूटे हैं।
बासे हैं फुलेल ते नरम मखतूल ऐसे,
दीरघ दराज ब्याल ब्यालिन लौं जूटे हैं॥
'घासीराम' चारु चौंर जमुना सिवार बोरों,
ऐसी स्यामताई पै गगन घन लूटे हैं।
छाइ जैहै तिमिर विहाय रैनि आय जैहै,
झारि बाँध अजहूँ सँभार वार छूटे हैं॥

[४६]

कज्जल के कूट पर दीप शिखा सोती है कि,
श्याम घन मंडल में दामिनी की धारा है।
यामिनी के अंक में कलाधर की कोर है कि,
राहु के कबंध पै कराल केतु तारा है॥
शङ्कर कसौटी पर कंचन की लीक है कि,
तेज ने तिमिर के हिये में तीर मारा है।
काली पाटियों के बीच मोहनी की मांग है कि,
ढाल पर खांड़ा कामदेव का दुधारा है॥